काशीस्थ राजकीय प्रथम तथा मध्यम परीक्षा पाठ्य निर्धारित—
'मणिप्रभा' हिन्दी टीका तथा 'अमरकौमुदी' टिप्पणी के सहित

१ अमरकोष (सम्पूर्ण) ।

(टीकाकार—व्याकरण-साहित्याचार्य साहित्यरत्न श्रीहरगोविन्द मिश्रजी, काशी

'मणिप्रभा' नामक हिन्दी व्याख्यामें—मूल श्लोकोंके पर्याय (नाम) सन्दिग्ध शब्दोंके शुद्ध (प्रातिपदिकावस्थाका) स्वरूप (जैसे—राजा = राजन् विद्वान् = विद्वस्,……), लिङ्ग, पाठान्तर और मतान्तरके पर्याय, अन्य ग्रन्थ या कोषोंमें मिलनेवाले आंशिक समानाकार बाहरी शब्द, तथा हिन्दीमें अ दिये गये हैं और कठिन विषय उदाहरणादिसे विशद किये गये हैं । क्षेपक श्लोकों की व्याख्या भी मूलके समान ही विशद रूपसे की गई है ।

'अमरकौमुदी' नामक संस्कृत टिप्पणीमें—वेद, वेदाङ्ग, स्मृति, पुराण औ साहित्यादि अनेक ग्रन्थोंसे प्रमाण-वचन, पाठान्तर आदि, तथा अक्षौहिणी सेना, मन्वन्तर काल, द्रोण खारी आदि प्रमाण (तौल) इत्यादिके अनेक च मी दिये हैं जिनसे अनेक श्लोकोंके आशय अनायास ही समझ में आ जाते हैं परिशिष्टमें विशेष आवश्यकीय विषय तथा अन्तमें मूल, क्षेपक और समानाकार य पाठान्तर आदि बाहरी शब्दोंकी अकारादि क्रमसे सूची और ग्रन्थारम्भमें गवेषणापू विस्तृत भूमिका देकर ग्रन्थको परमोपयोगी बनाया गया है । कागज छपाई आ सब कुछ अत्युत्तम रहनेपर भी मूल्य लागतमात्र सजिल्द पुस्तक का केवल २

२ अमरकोश—"मणिप्रभा" और "अमरकौमुदी" नामक

परीक्षोपयोगी भाषाटीका तथा टिप्पणी सहित प्रथमकाण्ड मूल्य ।)

३ अमरकोश—"मणिप्रभा" और "अमरकौमुदी" नामक

परीक्षोपयोगी भाषाटीका तथा टिप्पणी सहित द्वितीयकाण्ड मू० ।=)

४ अमरकोष—मूल (गुटका)

अनेकार्थध्वनिमञ्जरी-द्विरूपकोश-एकाक्षरकोश सहित ।

४॥ × ५ इंच का जेबी गुटका मूल्य बहुत अल्प ।)

५ अमरकोष—मूल । केवल प्रथम काण्ड मात्र । मूल्य)॥

६ अमरकोष—मूल । केवल द्वितीय काण्ड मात्र । मूल्य =

❀ श्रीः ❀

→ हरिदास—संस्कृत—ग्रन्थमाला ←

३०

॥ श्रीः ॥

काशीस्थ—मध्यमपरीक्षा—तृतीयखण्ड—

पाठ्यग्रन्थः—

सप्तमवर्गादारभ्य—दशमवर्गपर्यन्तः।

अमरकोशः

'मणिप्रभा' नामक भाषाटीकासहितः

द्वितीयकाण्डस्य ७—१० वर्गाः।

प्रकाशकः—

जयकृष्णदास-हरिदास गुप्तः—

चौखम्बा संस्कृत सीरिज़ आफिस,

बनारस सिटी।

१९४३

PRINTED BY
JAYA KRISHNA DAS GUPTA,
VIDYA VILAS PRESS, BENARES CITY.
1943.

॥ श्रीः ॥

अमरकोशः

द्वितीयः काण्डः

सप्तमवर्गादारभ्य–दशमवर्गपर्यन्तः ।

७. अथ ब्रह्मवर्गः ।

१ सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।
वंशोऽन्ववायः सन्तानो २ वर्णाः स्युर्ब्राह्मणादयः ॥ १ ॥
३ विप्रक्षत्रियविट्शूद्राश्चातुर्वर्ण्यमिति स्मृतम् ।
४ राजबीजी राजवंश्यो ५ बीज्यस्तु कुलसंभवः ॥ २ ॥
६ महाकुलकुलीनार्यसभ्यसज्जनसाधवः ।
७ ब्रह्मचारी गृही वानप्रस्थो भिक्षुश्चतुष्टये ॥ ३ ॥
आश्रमोऽस्त्री ८ द्विजात्यग्रजन्मभूदेववाडवाः ।

१–सन्ततिः (स्त्री), गोत्रम् , जननम् , कुलम् (३ न), अभिजनः, अन्वयः, वंशः, अन्ववायः, सन्तानः (६ पु), 'वंश, कुल, खान्दान' के ९ नाम हैं ॥ २–वर्णः (पु), 'ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये ४ 'वर्ण' हैं ॥ ३–चातुर्वर्ण्यम् (न), 'ब्राह्मण आदि पूर्वोक्त चार वर्णों के समुदाय' का १ नाम है ॥ ४–राजबीजी (=राजबीजिन्), राजवंश्यः (२ पु), 'राजकुलमें उत्पन्न' के २ नाम हैं ॥ ५–बीज्यः, कुलसंभवः (२ पु), 'कुलमें उत्पन्न' के २ नाम हैं ॥ ६–महाकुलः (+माहाकुलः), कुलीनः (+कुल्यः, कौलेयकः), आर्यः, सभ्यः, सज्जनः, साधुः (६ पु), 'सज्जन, उत्तम कुलमें उत्पन्न' के ६ नाम हैं ॥ ७–ब्रह्मचारी (=ब्रह्मचारिन्), गृही (=गृहिन्), वानप्रस्थः, भिक्षुः (४ पु), ये चार 'आश्रम' शब्दवाच्य हैं अर्थात् आश्रमः (पु न), 'ब्रह्मचर्याश्रमः, गृहस्थाश्रमः, वानप्रस्थाश्रमः, संन्यासाश्रमः' (४ पु न), ये ४ 'आश्रम' हैं ॥ ८–द्विजातिः (+द्विजः), अग्रजन्मा (=अग्रजन्मन्), भूदेवः (+महीसुरः, भूसुरः, …),

विप्रश्च ब्राह्मणा१ऽसौ षट्कर्मा यागादिभिर्वृतः ॥ ४ ॥
२ विद्वान् विपश्चिद्दोषज्ञः सन् सुधीः कोविदो बुधः।
धीरो मनीषी ज्ञः प्राज्ञः संख्यावान्पण्डितः कविः ॥ ५ ॥
धीमान्सूरिः कृती कृष्टिर्लब्धवर्णो विचक्षणः।
दूरदर्शी दीर्घदर्शी ३ श्रोत्रियच्छान्दसौ समौ ॥ ६ ॥
४ 'मीमांसको जैमिनीये ५ वेदान्ती ब्रह्मवादिनि (१)
६ वैशेषिके स्यादौलूक्यः ७ सौगतः शून्यवादिनि(२)
८ नैयायिकस्त्वक्षपादः ९स्यात्स्याद्वादिक आर्हकः (३)

वाडवः, विप्रः, ब्राह्मणः (६ पु), 'ब्राह्मण' के ६ नाम हैं ॥ १-षट्कर्मा (=षट्कर्मन्, पु), 'यज्ञ करना, पढ़ना, दान देना, यज्ञ कराना, पढ़ाना और दान लेना: इन ६ कर्मोंसे युक्त ब्राह्मण' का १ नाम है ॥ २-विद्वान् (=विद्वस्), विपश्चित्, दोषज्ञः, सन् (=सत्), सुधीः, कोविदः, बुधः, धीरः, मनीषी (=मनीषिन्), ज्ञः, प्राज्ञः (+प्रज्ञः), संख्यावान् (=संख्यावत्), पण्डितः, कविः, धीमान् (=धीमत्), सूरिः(+सूरी=सूरिन्), कृती (=कृतिन्), कृष्टिः, लब्धवर्णः, विचक्षणः, दूरदर्शी (=दूरदर्शिन्। +दूरदृक्=दूरदृश्), दीर्घदर्शी (=दीर्घदर्शिन्। २२ पु), 'विद्वान्' के २२ नाम हैं ॥ ३-श्रोत्रियः, छान्दसः (२ पु), 'वेद पढ़नेवाले ब्राह्मण' के २ नाम हैं ॥ ४-[मीमांसकः, जैमिनीयः (२ पु),'मीमांसक' अर्थात् 'मीमांसा शास्त्रको जाननेवाले' के २ नाम हैं] ॥ ५-[वेदान्ती (=वेदान्तिन्), ब्रह्मवादी (=ब्रह्मवादिन्। २ पु), 'वेदान्ती' अर्थात् 'वेदान्त शास्त्र जाननेवाले' के २ नाम हैं] ॥ ६-[वैशेषिकः, औलूक्यः (२ पु), 'कणाद सम्मत द्रव्य' आदि ("द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव") 'सातपदार्थोंको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥ ७-[सौगतः, शून्यवादी (=शून्यवादिन्। २ पु), 'संसारका कारण शून्य (कोई नहीं) है इस सिद्धान्तको माननेवाले नास्तिक' के २ नाम हैं] ॥ ८-[नैयायिकः, अक्षपादः (+आक्षपादः। २ पु), गौतमसम्मत प्रमाण आदि ("प्रमेय, संशय, प्रयोजन, दृष्टान्त, सिद्धान्त, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितण्डा, हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान") सोलह पदार्थों को माननेवाले नैयायिक' के २ नाम हैं] ॥ ९-[स्याद्वादिकः, आर्हकः (२ पु), 'मोक्ष है तो है,

१ चार्वाकलौकायतिकौ २ सत्काय साङ्ख्यकापिलौ' (४)
३ उपाध्यायोऽध्यापकोऽथ स्यान्निषेकादिकृद्गुरुः ।
५ मन्त्रव्याख्याकृदाचार्य ६ आदेष्टा त्वध्वरे व्रती ॥ ७ ॥
यष्टा च यजमानश्च ७ स सोमवति दीक्षितः ।
८ इज्याशीलो यायजूको ९ यज्वा तु विधिनेष्टवान् ॥ ८ ॥
१० स गीर्पतीष्ट्या स्थपतिः ११ सोमपीथी तु सोमपाः ।
१२ सर्ववेदाः स येनेष्टो यागः सर्वस्वदक्षिणः ॥ ९ ॥
१३ अनूचानः प्रवचने साङ्गेऽधीती गुरोस्तु यः ।

और नहीं है तो न हो इस सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥ १-[चार्वाकः, लौकायतिकः (२ पु), 'बौद्ध' अर्थात् 'बुद्धदेवके मतानुयायी' के २ नाम हैं]॥ २-[साङ्ख्यः, कापिलः (२ पु), 'कपिल मुनिसम्मत सांख्य शास्त्र के सिद्धान्तको माननेवाले' के २ नाम हैं] ॥ ३-उपाध्यायः, अध्यापकः (२ पु), "उपाध्याय" अर्थात् 'वेदके एकदेश को या वेदाङ्गोंको वृत्तिके लिये पढ़ानेवाले' के २ नाम हैं ॥ ४-गुरुः (पु), 'गुरु' अर्थात् 'निषेकादि संस्कारको सविधि करके अन्नादि से पालन करनेवाले' का १ नाम है ॥ ५-आचार्यः (पु),'आचार्य' अर्थात् 'मन्त्रोंकी व्याख्या करने वाले या शिष्यका यज्ञोपवीत संस्कार कर कल्प और रहस्यके सहित वेदको पढ़ानेवाले ब्राह्मण' का १ नाम है ॥ ६-व्रती (=व्रतिन्), यष्टा (=यष्टृ), यजमानः (३ पु), 'यजमान' अर्थात् 'यज्ञ करनेवाले' के ३ नाम हैं ॥ ७-दीक्षितः (पु), 'सोमवत् (अग्निष्टोमादि) यज्ञमें ऋत्विजोंका आदेश देनेवाले यजमान' का १ नाम है ॥ ८-इज्याशीलः, यायजूकः (२ पु), 'वारबार यज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥ ९-यज्वा (=यज्वन् पु), 'विधिपूर्वक यज्ञ किये हुये' का १ नाम है॥ १०-स्थपतिः (पु), 'बृहस्पतिके मन्त्रसे यज्ञ करने वाले' का १ नाम है ॥ ११-सोमपीथी(=सोमपीथीन् । + सोमपीती= सोमपीतिन्), सोमपाः(+ सोमपः । २ पु), 'सोमयज्ञ करनेवाले' के २ नाम हैं ॥ १२-सर्ववेदाः (=सर्ववेदस् पु), 'यज्ञमें सर्वस्व दक्षिणा देनेवाले' का १ नाम है । ("विश्वजित् आदि यज्ञोंमें सर्वस्व दक्षिणा दी जाती है, जैसे—रघुने विश्वजित् यज्ञकर सर्वस्व दक्षिणा दी थी । विश्वजित् आदि यज्ञका यह नाम है यह भा० दी० का मत चिन्त्य है") ॥ १३-अनूचानः (पु), 'व्याकरण आदि

१ लब्धानुज्ञः समावृत्तः २ सुत्वा त्वभिषवे कृते ॥ १० ॥
३ छात्रान्तेवासिनौ शिष्ये ४ शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ।
५ एकब्रह्मव्रताचारा मिथः सब्रह्मचारिणः ॥ ११ ॥
६ सतीर्थ्यास्त्वेकगुरव ७ऽश्चितवानग्निमग्निचित् ।
८ पारम्पर्योपदेशे स्यादैतिह्यमितिहाव्ययम् ॥ १२ ॥
९ उपज्ञा ज्ञानमाद्यं स्यात् १० ज्ञात्वारम्भ उपक्रमः ।
११ यज्ञः सवोऽध्वरो यागः सप्ततन्तुर्मखः क्रतुः ॥ १३ ॥
१२ पाठो होमश्चातिथीनां सपर्या तर्पणं बलिः ।

---

१ अङ्गोंके सहित वेदको पढ़नेवाले' का १ नाम है॥ १-समावृत्तः (पु), 'गुरु की आज्ञा पाकर गृहस्थाश्रममें रहने के लिये गुरुकुलसे लौटे हुए ब्रह्मचारी' का १ नाम है ॥ २-सुत्वा (=सुत्वन् पु), 'यज्ञके अन्तमें अवभृथनामक स्नान किये हुए' का १ नाम है ॥ ३-छात्रः, अन्तेवासी (=अन्तेवासिन्), शिष्यः (३ पु), 'शिष्य, छात्र' के ३ नाम हैं ॥ ४-शैक्षाः, प्राथमकल्पिकाः (२ पु । बहुवचन अविवक्षित होनेसे एकवचन भी होता है), 'अध्ययनको प्रथम आरम्भ किये हुये ब्रह्मचारी आदि' के २ नाम हैं ॥ ५-सब्रह्मचारिणः (=सब्रह्मचारिन् , पु), 'आपसमें समान वेद, समान व्रत और समान आचारवाले ब्रह्मचारियों' का १ नाम है ॥ ६-सतीर्थ्यः, एकगुरुः (भा० दी० । २), 'सहपाठी, एक गुरुसे पढ़नेवाले' के २ नाम हैं॥ ७-अग्निचित् (पु), 'अग्निहोत्री' का १ नाम है ॥ ८-ऐतिह्यम् (न), इतिह (अव्य०), 'परम्परागत उपदेश' के २ नाम हैं ॥ ९-उपज्ञा (स्त्री), गुरूपदेशके विना उत्पन्न सर्व प्रथम ज्ञान' का १ नाम है। ("जैसे-'वाल्मीकिकी उपज्ञा रामायण है और पाणिनीयकी उपज्ञा अष्टाध्यायी सूत्रपाठ है") ॥ १०-उपक्रमः (पु)'गुरु आदिसे ज्ञान प्राप्त कर आरम्भ करने' का १ नाम है ॥ ११-यज्ञः,सवः,अध्वरः, यागः, सप्ततन्तुः, मखः, क्रतुः (७ पु), 'यज्ञ' के ७ नाम है ॥ १२-पाठः (पु), 'वेदादिपाठ करने' को ब्रह्मयज्ञः (पु); होमः (पु), 'हवन करने' को देव यज्ञः (पु), अतिथीनां सपर्या (स्त्री), 'अन्न जलपान शय्यादि देकर अतिथियोंके सत्कार करने' को नृयज्ञः (पु), तर्पणम् (न), 'अन्न जल पिण्डदान श्राद्ध आदिसे पितरोंको

१ एते पञ्चमहायज्ञा ब्रह्मयज्ञादिनामकाः ॥ १४ ॥
२ समज्या परिषद्गोष्ठी सभासमितिसंसदः ।
आस्थानी क्लीबमास्थानं स्त्रीनपुंसकयोः सदः ॥ १५ ॥
३ प्राग्वंशः प्राग्घविर्गेहात् ४ सदस्या विधिदर्शिनः ॥
५ सभासदः सभास्तारः सभ्याः सामाजिकाश्च ते ॥ १६ ॥
६ अध्वर्यूद्गातृहोतारो यजुःसामर्ग्विदः क्रमात् ।
७ आग्नीध्राद्या धनैर्वार्या ऋत्विजो याजकाश्च ते ॥ १७ ॥
८ वेदिः परिष्कृता भूमिः ९ समे स्थण्डिलचत्वरे ।

सन्तुष्ट करने' को पितृयज्ञः (पु), बलिः (पु), 'बलि वैश्वदेव अर्थात् काकादिको बलि देने या बलिदान करने' को भूतयज्ञः (पु), कहते हैं ॥ १–इन (ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, अतिथियज्ञ, पितृयज्ञ और भूतयज्ञ) को पञ्च महायज्ञः (पु), अर्थात् 'पञ्च महायज्ञ' कहते है ॥ २–समज्या, परिषत् (=परिषद् । + पर्षत्=पर्षद्), गोष्ठी, सभा, समितिः, संसत (=संसद्), आस्थानी (७ स्त्री), आस्थानम् (न), सदः (=सदस् न स्त्री), 'सभा' के ९ नाम हैं। ("सम्प्रति सभा शब्दका सामान्यतःव्यवहार किया जाता है") ॥ ३–प्राग्वंशः (पु), 'हवनशालाके पूर्व तरफ यजमानको बैठनेके लिये बनाये हुए स्थान या गृह-विशेष' का १ नाम है ॥ ४–सदस्यः (पु), 'यज्ञमें न्यूनाधिक विधिको देखनेवाले ऋत्विग् विशेष'का १ नाम है ॥ ५–सभासत् (=सभासद्), सभास्तारः, सभ्यः, सामाजिकः (४ पु), 'सभासद' के ४ नाम हैं ॥ ६–अध्वर्युः, उद्गाता (=उद्गातृ), होता (=होतृ । ३ पु), 'यजुर्वेद, सामवेद और ऋग्वेद जाननेवाले' का क्रमशः १–१ नाम है ॥ ७–ऋत्विक् (=ऋत्विज्), याजकः (२ पु), 'यज्ञकरनेवाला यजमान धन आदिसे जिनका वरण करे उन आग्नीध्र आदि (ब्रह्मा, उद्गाता, होता, अध्वर्यु,······१७) यज्ञ करानेवाले ब्राह्मणों' के २ नाम हैं ॥ ८–वेदिः (+ वेदी । स्त्री), यज्ञ के लिये डमरु-तुल्याकर बनाई हुई या साफ की हुई ज़मीन' का १ नाम है ॥ ९–स्थण्डिलम्, चत्वरम् (२ न), 'यज्ञके लिये साफ किये गये स्थान-विशेष' के २ नाम हैं। ("सम्प्रति चत्वर शब्दको चबूतरा के अर्थमें भी प्रयुक्त किया जाता है") ॥

१ चषालो यूपकटकः २ कुम्बा सुगहना वृतिः ॥ १८ ॥
३ यूपाग्रं तर्म ४ निर्मन्थ्यदारुणि त्वरणिर्द्वयोः ।
५ दक्षिणाग्निर्गार्हपत्याहवनीयौ त्रयोऽग्नयः ॥ १९ ॥
६ अग्नित्रयमिदं त्रेता ७ प्रणीतः संस्कृतोऽनलः ।
८ समूह्यः परिचाय्योपचाय्यावग्नौ प्रयोगिणः ॥ २० ॥
९ यो गार्हपत्यादानीय दक्षिणाग्निः प्रणीयते ।
तस्मिन्नानाय्यो१०ऽथाग्नायी स्वाहा च हुतभुक्प्रिया ॥ २१ ॥
११ ऋक्सामिधेनी धाय्या च या स्यादग्निसमिन्धने ।
१२ गायत्री प्रमुखं छन्दो—

१-चषालः, यूपकटकः (भा० दी० । २ पु), 'यज्ञ-स्तम्भके ऊपर वलयाकार (गोल) बनाये हुए काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं ॥ २-कुम्बा (स्त्री), 'चाण्डाल अन्त्यज आदि यज्ञको न देख सकें इस निमित्त से यज्ञभूमिके चारों तरफ बनाये हुए घेरे' का १ नाम है ॥ ३-यूपाग्रम्, तर्म (=तर्मन् । २ न), 'यज्ञ-स्तम्भके उपरी भाग' के २ नाम हैं ॥ ४-अरणिः (पु स्त्री), 'जिसको परस्परमें रगड़कर यज्ञार्थ अग्नि निकाली जाय उस काष्ठ-विशेष का १ नाम है ॥ ५-दक्षिणाग्निः, गार्हपत्यः, आहवनीयः (३ पु), ये ३ 'अग्निके भेद' हैं ॥ ६-त्रेता (स्त्री) 'दक्षिणाग्नि, गार्हपत्य और आहवनीय; इन तीन अग्नियोंके समुदाय' का १ नाम है ॥ ७-प्रणीतः (पु), 'मन्त्रसे संस्कृत अग्नि' का १ नाम है ॥ ८-समूह्यः, परिचाय्यः, उपचाय्यः (३ पु), 'यज्ञ-सम्बन्धी अग्निका स्थान-विशेष, या स्थान-विशेषकी अग्नि' के ३ नाम हैं ॥ ९-आनाय्यः (पु), 'गार्हपत्य नामक अग्निसे लाकर मन्त्रसे संस्कार कर बनाई हुई दक्षिणाग्नि' का १ नाम है ॥१० अग्नायी, स्वाहा, हुतभुक्प्रिया (+ अग्निप्रिया । ३ स्त्री), 'अग्नि की स्त्री, स्वाहा' के ३ नाम हैं ॥११-सामधेनी, धाय्या (२ स्त्री), 'अग्नि में समिधा (लकड़ी) छोड़ कर अग्निको जलानेमें प्रयोग किये जानेवाले मन्त्र' के २ नाम हैं ॥ १२-छन्दः (=छन्दस् न), गायत्री आदि छन्द' का १ नाम है । उक्था, अत्युक्था, मध्या, प्रतिष्ठा, सुप्रतिष्ठा, गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप्, जगती, अतिजगती, शक्करी, अतिशक्करी, अष्टि, अत्यष्टि, धृति, अतिधृति, कृति, प्रकृति

१ हव्यपाके चरुः पुमान् ॥ २२ ॥
२ आमिक्षा सा शृतोष्णे या क्षीरे स्याद्दधियोगतः ।
३ धुवित्रं व्यजनं तद्यद्रचितं मृगचर्मणा ॥ २३ ॥
४ पृषदाज्यं सदध्याज्ये ५ परमान्नं तु पायसम् ।
६ हव्य७कव्ये दैवपित्र्ये अन्ने ८ पात्रं स्रुवादिकम् ॥ २४ ॥
९ ध्रुवोपभृज्जुहू१०र्ना तु स्रुवो भेदाः स्रुचः स्त्रियः ।
११ उपाकृतः पशुरसौ योऽभिमन्त्र्य क्रतौ हतः ॥ २५ ॥
१२ परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च वधार्थकम् ।
१३ वाच्यलिङ्गाः प्रमीतोपसंपन्नप्रोक्षिता हते ॥ २६ ॥

आकृति, विकृति, संस्कृति, अतिकृति, उत्कृति, ये छब्बीस छन्द होते हैं । किन्ही ने 'गायत्री'''''''उत्कृति' तक एकैस ही छन्द माना है") ॥ १-चरुः (पु), 'अग्निमें हवन किये जानेवाले अन्न' का १ नाम है ॥ २-आमिक्षा (+ आमिक्षा पु० । स्त्री), 'औंटे हुए गर्म दूधमें दही छोड़ने पर उत्पन्न विकार-विशेष,छाँछ' का १ नाम है ॥ ३-धुवित्रम् (+धवित्रम् । न),'यज्ञमें आग सुलगाने वास्ते मृगचर्मके बने हुए पङ्खे' का १ नाम है ॥ ४-पृषदाज्यम् (+पृषातकम् । न), 'दही मिले हुए घी' का १ नाम है ॥ ५-परमान्नम् , पायसम् (२ न), 'खीर, हविष्य, दूधके जाउर' के २ नाम हैं ॥ ६-हव्यम् (न),'देवान्न' अर्थात् 'हवनके द्वारा देवताओंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥ ७-कव्यम् (न),'पित्र्यन्न' अर्थात् 'ब्राह्मण-भोजनादिके द्वारा पितरोंके उद्देश्यसे दिये जानेवाले अन्न-विशेष' का १ नाम है ॥ ८-पात्रम् (न), 'स्रुवा आदि (चमस, प्रोक्षणी, प्रणीता, उलूखल, मुसल, ग्रह,......) बर्तन' का १ नाम है ॥ ९-ध्रुवा, उपभृत , जुहूः (३ स्त्री), ये ३ 'स्रुवाके भेदहैं' ॥ १०-स्रुवः (पु), स्रुक् (=स्रुच् । + स्रुः । स्त्री),'स्रुवा' अर्थात् 'अग्निमें घी डालनेवाले यज्ञ-पात्र-विशेष' के २ नाम हैं ॥ ११-उपाकृतः (पु), 'वेदमन्त्रसे अभिमन्त्रित कर यज्ञमें मारे हुए पशु' का १ नाम है॥ १२-परम्पराकम् , शमनम् (+शसनम् , ससनम्), प्रोक्षणम् (३ न), 'यज्ञमें पशुको मारने'के ३ नाम हैं ॥ १३-प्रमीतः, उपसंपन्नः, प्रोक्षितः (३ त्रि), 'यज्ञमें मारे

१ सान्नाय्यं हविः २ रग्नौ तु हुतं त्रिषु वषट्कृतम् ।
३ दीक्षान्तोऽवभृथो यज्ञे ४ तत्कर्मार्हं तु यज्ञियम् ॥ २७ ॥
त्रिष्वथ ५ क्रतुकर्मेष्टं ६ पूर्तं खातादि कर्म यत् ।
७ अमृतं ८ विघसो यज्ञशेषभोजनशेषयोः ॥ २८ ॥
९ त्यागो विहापितं दानमुत्सर्जनविसर्जने ।
विश्राणनं वितरणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ २९ ॥
प्रादेशनं निर्वपणमपवर्जनमंहतिः ।
१० मृतार्थं तदहे दानं त्रिषु स्यादौर्ध्वदेहिकम् ॥ ३० ॥
११ पितृदानं निवापः स्यात् १२ श्राद्धं तत्कर्म शास्त्रतः ।

हुए पशु' के ३ नाम हैं ॥ १–सान्नाय्यम्, हविः (=हविष्, भा० दी० । २न), 'हवन करने योग्य हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥ २–हुतम् (भा० दी०) वषट्कृतम् (२ त्रि), 'अग्निमें हवन किये हुए हविष्य आदि पदार्थ' के २ नाम हैं ॥ ३–अवभृथः (पु), 'यज्ञके अन्तमें किये जानेवाले समाप्ति-सूचकस्नान-विशेष' का १ नाम है ॥ ४–यज्ञियम् (त्रि), 'यज्ञके योग्य पदार्थ' का १ नाम है। ("जैसे, ब्राह्मण, हविष्यादि अन्न, स्थान,……")॥ ५–इष्टम् (न), 'यज्ञ कार्य, दान देने' का १ नाम है ॥ ६–पूर्तम् (न), 'बावली कुआँ तालाब आदि खुदवाने तथा औषधालय, देवालय आदि बनवाने' का १ नाम है ॥ ७–अमृतम् (न), 'यज्ञसे बचे हुए हविष्य' का १ नाम है ॥ ८–विघसः (पु),'ब्राह्मण अतिथि आदिके भोजनके बाद बचे हुए अन्न' का १ नाम है ॥ ९–त्यागः (पु), विहापितम्, दानम्, उत्सर्जनम् (+उत्सर्गः पु), विसर्जनम्, विश्राणनम्, वितरणम्, स्पर्शनम्, प्रतिपादनम्, प्रादेशनम्, निर्वपणम्, अपवर्जनम् (११ न), अंहतिः (स्त्री), 'दान देने' के १३ नाम हैं ॥ १०–और्ध्वदेहिकम् (+और्ध्वदैहिकम्। न) 'मरे हुएके उद्देश्यसे मरने के दिनसे एकादशाह तक दिये हुए पिण्ड-दान आदि' का १ नाम है ॥११–पितृदानम् (न), निवापः (पु), सपिण्डीकरणके बाद पितरोंके उद्देश्यसे दिये हुए पिण्ड-दान' का १ नाम है ॥ १२–श्राद्धम् (न), 'श्राद्ध' अर्थात 'पितरोंके उद्देश्यसे शास्त्रानुसार किये जानेवाले पिण्डदान आदि कार्य' का १

१ अन्वाहार्यं मासिकेंऽशोऽष्टमोऽह्नः कुतपोऽस्त्रियाम् ॥ ३१ ॥
३ पर्येषणा परिष्टिश्च ४अन्वेषणा च गवेषणा ।
५ सनिस्त्वध्येषणा ६ याच्ञाऽभिशस्तिर्याचनाऽर्थना ॥ ३२ ॥
७ षट् तु त्रिष्वर्घ्यमर्घार्थे ९पाद्यं पादाय वारिणि ।
१० क्रमादातिथ्या ११तिथेये अतिथ्यर्थेऽत्र साधुनि ॥ ३३ ॥
१२ स्युरावेशिक आगन्तुरतिथिर्ना गृहागते ।
१३ 'प्राघूर्णिकः प्राघुणकश्च १४अभ्युत्थानं तु गौरवम्' (५)
१५ पूजा नमस्यापचितिः सपर्यार्चार्हणाः समाः ॥ ३४ ॥

नाम है ॥ १-अन्वाहार्यम् (न), मासिकः (पु, भा०दी०), 'अमावस्याको किये जानेवाले मासिक श्राद्ध' के २ नाम हैं ॥ २-कुतपः (+कुतुपः । पु न), 'दिनका आठवां हिस्सा, एक मुहूर्त्त या दो घटी' का १ नाम है ॥ ३-पर्येषणा, परीष्टिः (२ स्त्री), महे० मतसे 'श्राद्धमें ब्राह्मणोंकी सेवा करने' के २ नाम हैं ॥ ४-अन्वेषणा, गवेषणा (२ स्त्री), महे० मतसे 'श्राद्धमें ब्राह्मणों· को ढूंढने' के २ नाम है । ("भा० दी० मतसे 'पर्येषणा,..........' ४ नाम 'धर्मादिके खोज़ करने' के हैं") ॥ ५-सनिः, अध्येषणा (२स्त्री), भा०दी० मत से 'गुरु पिता माता आदि श्रेष्ठ जनोंकी सेवा करने और प्रार्थनापूर्वक गुरु आदि श्रेष्ठ जनोंकी किसी काममें प्रवृत्त करने' के २ नाम हैं । ६-याच्ञा, अभिशस्तिः (+अभिषस्तिः), याचना, अर्थना (४ स्त्री), 'याचना करने, माँगने के ४ नाम हैं ॥ ७-यहां से ६ शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥ ८-अर्घ्यम् (त्रि), अर्घ (अर्घ्य देने) के लिये जल' का १ नाम है ॥ ९-पाद्यम् (त्रि), 'पाद्य (पैर धोने)के लिये जल' का १ नाम है ॥ १०-आतिथ्यम् (त्रि), 'अतिथियोंके नि· मित्त वस्तु' का १ नाम है ॥ ११-अतिथेयम् (त्रि), 'अतिथियोंके विषयमें सज्जन (अच्छा व्यवहार करनेवाले)' का १ नाम है ॥ १२-आवेशिकाः, आगन्तुः (२ त्रि), अतिथिः (+आतिथिः पु; अतिथी स्त्री), 'अतिथि' के ३ नाम हैं ॥ १३-[प्राघूर्णिकः, प्राघुणकः(+अवेशिकः । २ पु),'अभ्यागत'के२ नाम है] ।। १४-[अभ्युत्थानम् , गौरवम् (२ न), 'अभ्युत्थान' अर्थात् 'बड़े लोगों के आने पर ऊठकर अगवानी करने' के २ नाम हैं] ।। १५-पूजा,नमस्या,अपचितिः,सपर्या,

१ वरिवस्या तु शुश्रूषा परिचर्याऽप्युपासना ।
२ व्रज्याटाट्या पर्यटनं ३ चर्या त्वीर्यापथे स्थितिः ॥ ३५ ॥
४ उपस्पर्शस्त्वाचमनम् ५ अथ मौनमभाषणम् ।
६ 'प्राचेतसश्चादिकविः स्यान्मैत्रावरुणिश्च सः (६)
वाल्मीकश्चा७थ गाधेयो विश्वामित्रश्च कौशिकः (७)
८ व्यासो द्वैपायनः पाराशर्यः सत्यवतीसुतः' (८)
९ आनुपूर्वी स्त्रियां वावृत्परिपाटी अनुक्रमः ॥ ३६ ॥
पर्यायश्चा१०तिपातस्तु स्यात्पर्यय उपात्ययः ।
११ नियमो व्रतमस्त्री १२तच्चोपवासादि पुण्यकम् ॥ ३७ ॥
१३ औपवस्तं तूपवासो १४विवेकः पृथगात्मता ।

अर्चा, अर्हणा (६ स्त्री), 'पूजा' के ६ नाम हैं । १–वरिवस्या, शुश्रूषा परिचर्या (+उपचर्या, परेष्टिः) उपासना (+न ४ स्त्री), 'शुश्रूषा करने' के ४ नाम हैं ।। २–व्रजा, अटाट्या (+अटा, अट्या, मेहे० । २ स्त्री), पर्यटनम् (+भ्रमणम् । न), भा० दी० मतसे 'घूमने' के ३ नाम हैं ।। ३–चर्या (+ईर्या मुनि० । स्त्री), 'ध्यान,मौन इत्यादि योगमार्गोंमें स्थित होने' का १ नाम है ।। ४–उपस्पर्शः(पु), आचमनम् (न), 'आचमन करने' के २ नाम हैं ।। ५–मौनम्, अभाषणम् (२ न),'मौन या चुप रहने' के २ नाम हैं ।। ६–[प्राचेतसः, आदिकविः, मैत्रावरुणिः (+मैत्रावरुणः), वाल्मीकः (+वाल्मीकिः, वल्मीकः, वल्मिकः । ४ पु), 'वाल्मीकि मुनि' के ४ नाम हैं] ।। ७–[गाधेयः, विश्वामित्रः, कौशिकः (+कौषिकः। ३ पु), 'विश्वामित्र मुनि' के ३ नाम हैं] ।। ८–[व्यासः, द्वैपायनः, पाराशर्यः, सत्यवतीसुतः (४ पु),'व्यास मुनि' के ४ नाम हैं] ॥ ९–आनुपूर्वी (स्त्री । +आनुपूर्व्यम्), आवृत, परिपाटी (+परिपाटिः । २ स्त्री), अनुक्रमः,पर्यायः (२पु),'क्रम' अर्थात 'सिलसिलेवार' के ९ नाम हैं ॥ १०–अतिपातः,पर्ययः, उपात्ययः (३ पु), 'विना क्रम' अर्थात् 'बेसिलसिलेवार' के ३ नाम हैं ॥ ११–नियमः (पु), व्रतम् (न पु), 'नियम या व्रत' के २ नाम हैं॥ १२–पुण्यकम् (न),'उपवासादि (सान्तपन, कृच्छ्र, अतिकृच्छ्र, प्राजापत्य, चान्द्रायण आदि) 'शास्त्र–विहित व्रत' का १ नाम है ॥१३–औपवस्तम् (+औपवस्त्रम्, उपवस्तम् । न), उपवासः (+उपोषितम् , उपोषणम् । पु), 'उपवास, उपास'के २ नाम हैं॥ १४–विवेकः(पु), पृथगात्मता (भा० दी०,स्त्री

१ स्याद्ब्रह्मवर्चसं वृत्ताध्ययनर्धिरथाञ्जलिः ॥ ३८ ॥
पाठे ब्रह्माञ्जलिः ३ पाठे विप्रुषो ब्रह्मबिन्दवः ।
४ ध्यानयोगासने ब्रह्मासनं ५ कल्पे विधिक्रमौ ॥ ३९ ॥
६ मुख्यः स्यात्प्रथमः कल्पो ७ऽनुकल्पस्तु ततोऽधमः ।
८ संस्कारपूर्वं ग्रहणं स्यादुपाकरणं श्रुतेः ॥ ४० ॥
९ समे तु पादग्रहणमभिवादनमित्युभे ।
१० भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ॥ ४१ ॥
११ तपस्वी तापसः पारिकाङ्क्षी १२ वाचंयमो मुनिः ।
१३ तपःक्लेशसहो दान्तो १४ वर्णिनो ब्रह्मचारिणः ॥ ४२ ॥

'प्रकृति और पुरुषके भेद-ज्ञान वा भावोंके पृथक् स्वरूप ज्ञान' के २ नाम हैं ॥१-ब्रह्मवर्चसम् (न), वृत्ताध्ययनर्द्धिः (भा० दी०, स्त्री),'ब्रह्मवर्चस' अर्थात् 'सदाचार और वेदाभ्यासकी वृद्धि या सम्पत्ति' के २ नाम हैं ॥ २-ब्रह्माञ्जलिः(पु), 'वेदादि पढ़नेके पहले और अन्त समयमें व्यस्त हाथसे (दहने हाथसे दहिना और बायें हाथसे बायां) गुरुके पैर को छूकर प्रणाम करने' का १ नाम है ॥ ३-ब्रह्मबिन्दुः (पु), 'वेदादि पढ़नेके समय मुखसे निकले हुए जल-कण (थूकमिश्रित जलकी छोटी २ बूँद)' का १ नाम है॥ ४-ब्रह्मासनम् (न), 'ध्यान और योगके आसन' का १ नाम है ।। ५-कल्पः, विधिः,क्रमः (३ पु), 'शास्त्रोक्त विधि' के ३ नाम हैं ।। ६-मुख्यः (पु), 'शास्त्रोक प्रधान विधि' का १ नाम है ।। ७-अनुकल्पः (पु), 'शास्त्रोक्त गौण (अप्रधान, अभाव-पक्षीय) विधि' का १ नाम है ।। ८-उपाकरणम् (न), 'संस्कारके साथ २ वेदादिको ग्रहण करने' का १ नाम है ।। ९-पादग्रहणम् , अभिवादनम् (२ न), 'अपने नामको कहते हुए प्रणाम करने' के २ नाम हैं।। १०-भिक्षुः, परिव्राट् (=परिव्राज् । +परिव्राजकः) ,कर्मन्दी (=कर्मन्दिन्) पाराशरी (=पाराशरिन्), मस्करी (=मस्करिन् । ५ पु), 'सन्यासी' के ५ नाम हैं ॥ ११-तपस्वी (=तपस्विन्), तापसः, पारिकाङ्क्षी (=पारिकाङ्क्षिन् । ३ पु), 'तपस्वी' के ३ नाम हैं ॥१२-वाचंयमः, मुनिः (२ पु), 'मुनी' के २नाम हैं । ("किसी २ के मतसे ये २ नाम भी 'संन्यासी' के ही पर्याय हैं) ॥ १३-तपःक्लेशसहः (भा० दी०), दान्तः (२पु), 'तपस्याके क्लेशको सहनेवाले' के २ नाम हैं ॥१४-वर्णी (=वर्णिन्), ब्रह्मचारी (=ब्रह्मचारिन्),'ब्रह्म-

१ ऋषयः सत्यवचसः २ स्नातकस्त्वाप्लुतो व्रती।
३ ये निर्जितेन्द्रियग्रामा यतिनो यतयश्च ते॥ ४३॥
४ यः स्थण्डिले व्रतवशाच्छेते स्थण्डिलशाय्यसौ।
स्थाण्डिलश्चा५थ विरजस्तमसः स्युर्द्वयातिगाः॥ ४४॥
६ पवित्रः प्रयतः पूतः ७ पाखण्डाः सर्वलिङ्गिनः।
८ पालाशो दण्ड आषाढो व्रते ९ राम्भस्तु वैणवः॥ ४५॥
१० अस्त्री कमण्डलुः कुण्डी ११ व्रतिनामासनं वृषी।

चारी' के २ नाम हैं॥१-ऋषि, सत्यवचाः (=सत्यवचस्। २ पु), 'ऋषि-समान्य' के २ नाम हैं। (श्रुतर्षि, काण्डर्षि, परमर्षि, महर्षि, राजर्षि, ब्रह्मर्षि और देवर्षि ये सात 'ऋषियोंके भेद' हैं॥ २-स्नातकः (+आप्लवव्रती =आप्लवव्रतिन्, आप्लुतव्रती=आप्लुतव्रतिन्। पु), 'स्नातक' अर्थात् वेदव्रतको समाप्त होनेपर गुरुकी आज्ञासे समाप्ति—सूचक स्नान—विशेष (समावर्तन) किये हुए ब्रह्मचारी' के २ नाम हैं। (स्नातकके तीन भेद हैं-वेदको 'समाप्त कर और व्रतको विना समाप्त किए समावर्तन संस्कारवाला **विद्यास्नातक**, और व्रतको समाप्तकर एवं वेदको विना समाप्त किये समावर्तनसंस्कारवाला **व्रतस्नातक**, तथा वेद और विद्या दोनोंको समाप्तकर समावर्तन संस्कारवाला **विद्याव्रतस्नातक** है)॥ ३-निर्जितेन्द्रियग्रामः, यती (=यतिन्), यतिः (३ पु), 'जितेन्द्रिय' के ३ नाम हैं॥ ४-स्थण्डिलशायी (=स्थण्डिलशायिन्), स्थाण्डिलः (२ पु), 'स्थण्डिल (विना साफ सुथरा की हुई अकृत्रिम भूमि) पर सोनेवाले व्रती' के २ नाम हैं॥ ५-विरजस्तमाः (=विरजस्तमस्), द्वयातिगः (२ पु), 'सत्त्वगुणी' के २ नाम हैं॥ ६-पवित्रः, प्रयतः, पूतः (३ पु), 'पवित्र' के ३ नाम हैं॥ ७-पाखण्डः (+पाषण्डः), सर्वलिङ्गी (=सर्वलिङ्गिन्। २ पु), 'पाखण्डी' अर्थात् 'दुष्ट शास्त्रमें स्थित बौद्ध आदि क्षपणक (संन्यासी)' के २ नाम हैं। ८-आषाढः (आषाढकः, आपाढः। पु), 'ब्रह्मचर्यावस्थामें ब्राह्मणसे धारण किये हुए पलाशके दण्ड' का १ नाम है॥ ९-राम्भः (पु), ब्रह्मचर्यावस्थामें धारण किये हुए बाँसके दण्ड' का १ नाम है॥ १०-कमण्डलुः (पु न), कुण्डी (स्त्री), 'कमण्डलु' के २ नाम हैं॥ ११-वृषी (+बृसी। स्त्री), 'ब्रह्मचारी

१ अजिनं चर्म कृत्तिः स्त्री २ भैक्षं भिक्षाकदम्बकम् ॥ ४६ ॥
३ स्वाध्यायः स्याज्जपः ४ सुत्याभिषवः सवनं च सा ।
५ सर्वैनसामपध्वंसि जप्यं त्रिष्वघमर्षणम् ॥ ४७ ॥
६ दर्शश्च पौर्णमासश्च यागौ पक्षान्तयोः पृथक् ।
७ शरीरसाधनापेक्षं नित्यं यत्कर्म तद्यमः ॥ ४८ ॥
८ नियमस्तु स तत्कर्म नित्यमागन्तुसाधनम् ।
९ 'क्षौरं तु भद्राकरणं मुण्डनं वपनं त्रिषु' (६)
१० उपवीतं ब्रह्मसूत्रं प्रोद्धृते दक्षिणे करे ॥ ४९ ॥

आदि व्रतियोंके आसन' का १ नाम है ।। १-अजिनम्, चर्म (=चर्मन् । २ न), कृत्तिः (स्त्री), 'मृगादिके चमड़े' के ३ नाम हैं ।। २-भैक्षम् (त्रि), 'भिक्षामें मिले हुए पदार्थ' का १ नाम है ।। ३-स्वाध्यायः, जपः (२ पु), 'नियमसे वेदादिके अभ्यास करने'के २ नाम हैं ।"जप तीनप्रकारका होता है—वाचिक, उपांशु और मानस । इनमें उत्तरोत्तर श्रेष्ठ कहा गया है" ।। ४-सुत्या (स्त्री), अभिषवः (पु), सवनम् (न), 'सोमलता (यज्ञौषधि) को कूटने' के ३ नाम हैं ।। ५-अघमर्षणम् (त्रि), 'सब पापोंको नाश करनेवाले जप (ऋचा आदि)' का १ नाम है ।। ६-दर्शः, पौर्णमासः (२ पु), 'अमावास्या और पूर्णिमाको होने वाले यज्ञ' का क्रमशः एक एक नाम है ।। ७-यमः (पु), 'जीवनभर शरीरसे करने योग्य संयम' का १ नाम है । ("अहिंसा, सत्य, अस्तेय (किसीकी कोई चीज विना दिये या पूछे न लेना), ब्रह्मचर्य (आठ प्रकारके मैथुनका त्याग) और अपरिग्रह (हिंसादि अनेक दोषों को देख कर दान नहीं लेना, ये पांच यम हैं") ।। ८-नियमः (पु), 'नियम' अर्थात् 'जो काम जीवन पर्यन्त नहीं हो सके किन्तु खास खास समय पर किया जाय उस काम' का १ नाम है । ("शौच अर्थात् मिट्टी जल आदिसे बाहरी और पञ्चगव्य-पान आदिसे भीतरी पवित्रता, सन्तोष, तप (चन्द्रायण, कृच्छ्र, सान्तपन आदिव्रत), स्वाध्याय (वेदादिका अध्ययन), ईश्वरप्रणिधान (परमेश्वरकी पूजा आदि, ये पांच नियम हैं") ।। ९-[क्षौरम्, भद्राकरणम्, मुण्डनम् (३ न) वपनम् (त्रि), 'मुण्डन कराने' के ४ नाम हैं] ।। १०-उपवीतम्,

१ प्राचीनावीतमन्यस्मिन् २ निवीतं कण्ठलम्बितम् ।
३ अङ्गुल्यग्रे तीर्थं दैवं ४ स्वल्पाङ्गुल्योर्मूले कायम् ॥ ५० ॥
५ मध्येऽङ्गुष्ठाङ्गुल्योः पित्र्यं ६ मूले त्वङ्गुष्ठस्य ब्राह्मम् ।
७ स्याद्ब्रह्मभूयं ब्रह्मत्वं ब्रह्मसायुज्यमित्यपि ॥ ५१ ॥
८ देवभूयादिकं तद्वत् ९ कृच्छ्रं सांतपनादिकम् ।
१० संन्यासवत्यनशने पुमान्प्रायोऽ११थ वीरहा ॥ ५२ ॥
नष्टाग्निः १२ कुहना लोभान्मिथ्येर्यापथकल्पना ।

यज्ञसूत्रम् (भा० दी० । २ न) 'बायें कन्धेके ऊपरसे दहने तरफ नीचेकी ओर लटकते हुए जनेऊ' के २ नाम हैं । ("उपवीत जनेऊको धारण करनेवालेका उपवीती (=उपवीतिन् पु), यह १ नाम है") ॥ १–प्राचीनावीतम् (न), 'दहने कन्धेके ऊपरसे बायें तरफ नीचेको लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ("प्राचीनावीत जनेऊको धारण कनेवालेका प्राचीनावीती (=प्राचीनावीतिन् पु) यह १ नाम है") ।। २–निवीतम् (न) 'मालाकी तरह गर्दनसे सीधे नीचेकी तरफ लटकते हुए जनेऊ' का १ नाम है । ("नीवीत जनेऊको धारण करनेवाले का निवीती (=निवीतिन् पु) यह १नाम है")।। ३–दैवम् (न) 'देवतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी अङ्गुलियोंके आगेवाले भाग'का १ नाम है ।। ४–कायम् (न), 'कायतीर्थ' अर्थात् 'हाथकी कनिष्ठा अङ्गुलीके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ।। ५–पित्र्यम् (+पैत्र्यम् , पैत्रम् । न), 'पितृतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अंगूठे और तर्जनी अङ्गुलीके बीचवाले भाग' का १ नाम है । ६–ब्राह्मम् (न), 'ब्रह्मतीर्थ' अर्थात् 'हाथके अँगूठेके मूलभाग' का १ नाम है ।। ७–ब्रह्मभूयम् , ब्रह्मत्वम् ब्रह्मसायुज्यम्(३ न), 'मोक्ष' अर्थात 'ब्रह्ममें मिल जाने' के ३ नाम है ।। ८–देवभूयम् (न), आदि (देवत्वम् , देवसायुज्यम् , २ न) 'देवतामें मिल जाने' के नाम हैं ।। ९–कृच्छ्रम् (न) 'सान्तपन आदि (चान्द्रायण, पराक और प्राजापत्य, आदि) व्रत' का १ नाम है ।। १०–प्रायः (पु), संन्यास-पूर्वक 'भोजनको छोड़ने'का १ नाम है ।। ११–वीरहा (=वीरहन्। +विरहा=विरहन्), नष्टाग्निः (२ पु), 'प्रमादसे जिस अग्निहोत्रीकी आग बुझ गई हो उस अग्निहोत्री' के २ नाम हैं ।। १२–कुहना (स्त्री),'दम्भसे ध्यान मौनादि धारण करने, धनलोभसे मिथ्या धर्माचरण करने' का १

१ व्रात्यः संस्कारहीनः स्यादस्वाध्यायो निराकृतिः ॥ ५३ ॥
३ धर्मध्वजी लिङ्गवृत्तिरवकीर्णी क्षतव्रतः ।
५ सुप्ते यस्मिन्नस्तमेति सुप्ते यस्मिन्नुदेति च ॥ ५४ ॥
अंशुमानभिनिर्मुक्ताभ्युदितौ च यथाक्रमम् ।
६ परिवेत्तानुजोऽनूढे ज्येष्ठे दारपरिग्रहात् ॥ ५५ ॥
७ परिवित्तिस्तु तज्ज्यायान् ८ विवाहोपयमौ समौ ।
तथा परिणयोद्वाहोपयामाः पाणिपीडनम् ॥ ५६ ॥
९ व्यवायो ग्राम्यधर्मो मैथुनं निधुवनं रतम् ।
१० त्रिवर्गो धर्मकामार्थैः ११ चतुर्वर्गः समोक्षकैः ॥ ५७ ॥

नाम है ॥ १-व्रात्यः, संस्कारहीनः (भा० दी० । २ पु), 'यथोचित समय पर संस्कारसे हीन द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य)' के २ नाम हैं ॥ २-अस्वाध्यायः (भा० दी०), निराकृतिः (२ पु), 'वेदको नहीं पढ़नेवाले' के २ नाम हैं । (व्रात्यः,.......' ४ नाम एकार्थक हैं, यह भी एक आचार्योंका मत है") ॥ ३-धर्मध्वजी (= धर्मध्वजिन्), लिङ्गवृत्तिः (२ पु),'भिक्षा आदि मिलनेके लिये जटा भस्मादि धारण कर झूठा साधु बनने' के २ नाम हैं ॥ ४-अवकीर्णी (= अवकीर्णिन्), क्षतव्रतः (भा० दी० । २ पु), 'नियमसे चलने वाला ब्रह्मचर्यादि व्रत जिसका बीच ही में भग्न हो गया हो उस ब्रह्मचारी आदि व्रती' के २ नाम हैं ॥ ५-अभिनिर्मुक्तः, अभ्युदितः (२पु),'जिसके सोये रहनेपर सूर्योदय हो और जिसके सोने पर सूर्यास्त हो उसका' क्रमशः एक एक नाम है ॥ ६-परिवेत्ता (=परिवेत्तृ पु), 'बड़े भाईके अविवाहित (विना व्याह किये हुए) रहनेपर विवाहित(व्याह किये हुए) छोटे भाई' का १ नाम है ॥ ७-परिवित्तिः (पु), जिसका छोटा भाई विवाहित हो उस अविवाहित बड़े भाई' का १ नाम है ।। ८-विवाहः, उपयमः, परिणयः, उद्वाहः, उपयामः (५ पु), पाणिपीडनम् (+ पाणिग्रहणम् , करपीडनम् ....' । न), 'विवाह, शादी' ६ नाम हैं ॥ ९-व्यवायः, ग्राम्यधर्मः (२ पु), मैथुनम् , निधुवनम् , रतम् (३ न) 'मैथुन' अर्थात् 'स्त्रीके साथ सांसारिक सुख करने'के ५नाम हैं॥ १०-त्रिवर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म और कामके समुदाय' का १ नाम है ।। ११-चतुर्वर्गः (पु), 'अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय'

१ सबलैस्तैश्चतुर्भद्रं २ जन्याः स्निग्धा वरस्य ये

इति ब्रह्मवर्गः ॥ ७ ॥



८. अथ क्षत्रियवर्गः ।

३ मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।
४ राजा राट् पार्थिवक्ष्माभृन्नृपभूपमहीक्षितः ॥ १ ॥
५ राजा तु प्रणताशेषसामन्तः स्यादधीश्वरः ।
६ चक्रवर्ती सार्वभौमो नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
८ येनेष्टं राजसूयेन मण्डलस्येश्वरश्च यः ।

का एक नाम है ॥१–चतुर्भद्रम् (न), 'सुदृढ अर्थ, धर्म, काम और मोक्षके समुदाय'का १ नाम है॥ २–जन्याः (पु),'समान अवस्थावाले वर (दुलहा) के प्रेमी या वधूकी पालकी ढोनेवाले' का १ नाम है ।।इति ब्रह्मवर्गः ।।७।।



३–मूर्द्धाभिषिक्तः (+ मूर्द्धावषिक्तः), राजन्यः, बाहुजः, क्षत्रियः, विराट् (=विराज् । ५ पु), 'क्षत्रिय' के ५ नाम हैं ॥ ४–राजा (= राजन्), राट् (=राज्), पार्थिवः, क्ष्माभृत् (+ क्ष्माभुक् =क्ष्माभुज् , महीभुक् =महीभु-ज्,......,), नृपः, भूपः (+महीपः, भूपतिः , भूपालः, महीपतिः,महीपालः, ...), महीक्षित् (+ अधिपः, नराधिपः, नरेशः, ...। ७ पु), 'राजा' के ७ नाम हैं॥ ५–अधीश्वरः (+ अप्रतिरथः। पु), 'सब तरफके राजाओंको वशमें करनेवाले राजा'का १ नाम है ॥ ६–चक्रवर्ती (=चक्रवर्तिन्), सार्व-भौमः (२ पु), 'चक्रवर्ती राजा' अर्थात् 'समुद्र पर्यन्त पृथ्वीकी रक्षा करनेवाले राजा' के २ नाम हैं । (" भरत, सगर, मघवा, सनत्कुमार, शान्ति, कुन्थु, अर (ये तीनो जिन थे), कार्तवीर्य, पद्म, हरिषेण, जय और ब्रह्मदत्त ये बारह राजा भारतवर्षमें चक्रवर्ती हुए हैं, ये सब इक्ष्वाकु वंशमें उत्पन्न थे") ॥ ७–मण्डलेश्वरः (पु), मण्डल (इसके बारह, प्रकृति अर्थात् भेद होते हैं) या देशको शासन करनेवाले राजा' का १ नाम है ।। ८–सम्राट् (=सम्राज् पु), भा० दी० मतसे 'जिसने राजसूय यज्ञ किया हो मण्डल (इसके बारह प्रकृति होते हैं) का स्वामी हो और सब राजाओंको जीतकर

शास्ति यश्चाज्ञया राज्ञः स सम्राड१थ राजकम् ॥ ३ ॥
२ राजन्यकं च नृपतिक्षत्रियाणां गणे क्रमात् ।
३ मन्त्री धीसचिवोऽमात्यो४ऽन्ये कर्मसचिवास्ततः ॥ ४ ॥
५ महामात्राः प्रधानानि ६ पुरोधास्तु पुरोहितः ।
७ द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्विपाकाक्षदर्शको ॥ ५ ॥
८ प्रतीहारो द्वारपालद्वास्थद्वास्थितदर्शकाः ।
९ रक्षिवर्गस्त्वनीकस्थो१०ऽथाध्यक्षाधिकृतौ समौ ॥ ६ ॥
११ स्थायुकोऽधिकृतो ग्रामे १२ गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
१३ भौरिकः कनकाध्यक्षो १४ रूप्याध्यक्षस्तु नैष्किकः ॥ ७ ॥

अपने वशमें करलिया हो उस राजा' का और किसी २ के मतसे 'पूर्वोक्त १·१ गुणसे भी युक्त राजा' का १ नाम है।। १-राजकम् (न), 'राजसमूह' का १ नाम है ।। २-राजन्यकम् (न), 'क्षत्रियोंके समुदाय' का १ नाम है।। ३-मन्त्री (=मन्त्रिन्), धीसचिवः, अमात्यः (+सामवायिकः । ३ पु), 'मन्त्री' अर्थात् 'बुद्धिविषयक सहायता देनेवाले मन्त्री' के ३ नाम हैं ।। ४-कर्मसचिवः (पु), 'प्रत्येक काममें सहायता देनेवाले मन्त्री' का १ नाम है।। ५-महामात्रः(पु) प्रधानम् (न ।+पु), 'प्रधान मन्त्री, राजाके खास सलाहकार' के २ नाम हैं। ("किसी २ के मतसे, कर्मसचिवः' आदि ३ नाम 'काममें सहायता देनेवाले मन्त्री' के ही हैं") । ६-पुरोधाः (=पुरोधस्), पुरोहितः (+सौवस्तिकः । २ पु),'पुरोहित' के २ नाम हैं ।। ७-प्राड्विपाकः, अक्षदर्शकः (+आक्षदर्शकः, अक्षपटलिकः । २ पु), 'व्यवहारको देखनेवाले, के २ नाम हैं । ("व्यवहारके प्रधान अट्ठारह भेद होते हैं") ८-प्रतीहारः (+ प्रतिहारः), द्वारपालः, द्वास्थः (+ द्वाःस्थः), द्वास्थितः (+द्वाःस्थितः), दर्शकः (+द्वास्थितदर्शकः, द्वास्थोपस्थितदर्शकः, दौवारिकः । ९ पु), 'द्वारपाल, ड्योढ़ीदार' के ९ नाम हैं ॥ ९-रक्षिवर्गः, अनीकस्थः (२ पु), 'राजा आदि के अङ्गरक्षक' के २नाम हैं ॥ १०-अध्यक्षः, अधिकृतः (२ पु),'अध्यक्ष' के २ नाम हैं ।। ११-स्थायुकः (पु), 'एक ग्रामके अध्यक्ष' का १ नाम हैं ।। १२-गोपः (पु), 'बहुत ग्रामोंके अध्यक्ष' का १नाम है ।। १३-भौरिकः (+हैरिकः), कनकाध्यक्षः (२ पु),'सुवर्णोके अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥ १४-रूप्याध्यक्षः, नैष्किकः (२ पु), 'टकसाल'

१ अन्तःपुरे त्वधिकृतः स्यादन्तर्वंशिको जनः ।
२ सौविदल्लाः कञ्चुकिनः स्थापत्याः सौविदाश्च ते ॥ ८ ॥
३ शण्ढो वर्षवरस्तुल्यौ—४ सेवकार्थ्यनुजीविनः ।
५ विषयानन्तरो राजा शत्रु ६ मित्रमतः परम् ॥ ९ ॥
७ उदासीनः परतरः ८ पार्ष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
९ रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्द्वेषणदुर्हृदः ॥ १० ॥
द्विड्विपक्षाहितामित्रदस्युशात्रवशात्रवः ।
अभिघातिपरारातिप्रत्यर्थिपरिपन्थिनः ॥ ११ ॥
१० वयस्यः स्निग्धः सवया ११ अथ मित्रं सखा सुहृत् ।

(रुपया आदि सिक्का ढालने के कारखाने) के अध्यक्ष' के २ नाम हैं ॥ १–अन्तर्वंशिकः (+अन्तर्वंशिकः । पु), "रनिवासमें नियुक्त पुरुष' का १ नाम है ॥ २–सौविदल्लः, कञ्चुकी (=कञ्चुकिन्), स्थापत्यः, सौविदः । (४ पु) 'कञ्चुकी' अर्थात् 'राजाओंके पासमें या रनिवासमें बाहरी रक्षा के लिये बेंत की पतली छड़ी लिये हुए आने जानेवाले वृद्ध पुरुष' के ४ नाम हैं ॥३–शण्ढः (+षण्ढः), वर्षवरः (२ पु), 'नपुंसक, जनखा' के २ नाम हैं।। ४–सेवकः,अर्थी(=अर्थिन्), अनुजीवी(=अनुजीविन् । +अनु चरः । ३ पु), 'सेवक नौकर' के ३ नाम हैं ॥ ५–शत्रुः (पु), 'अपने देश (राज्य) के समीपवाले देशके राजा'का १ नाम है ॥ ६–मित्रम् (न), 'पूर्वोक्तसे भिन्न राजा' का १ नाम है॥७–उदासीनः (पु), 'उदासीन'अर्थात् 'पूर्वोक्त शत्रु और मित्रके लक्षणसे भिन्न राजा' का १ नाम है ॥ ८–पार्ष्णिग्राहः (पु), 'राजाके युद्धादि–यात्रामें पीछेसे किलेपर चढ़ाई करनेवाले या योद्धाके पीछेसे रक्षा करनेवाले राजा' का १ नाम है ॥ ९–रिपुः, वैरिः, सपत्नः, अरिः, द्विषन् (=द्विषत्), द्वेषणः, दुर्हृदः, द्विट् (=द्विष्) ,विपक्षः, अहितः, अमित्रः, दस्युः, शात्रवः, शत्रुः, अभिघाती (=अभिघातिन् । + अभियातिः), परः, अरातिः, प्रत्यर्थी (=प्रत्यर्थिन्), परिपन्थी (=परिपन्थिन् । १९ पु), 'वैरी' के १९ नाम हैं ॥ १०–वयस्यः, स्निग्धः, सवयाः (=सवयस् । ३ पु),'समान अवस्था वाले मित्र' के ३ नाम हैं ॥ ११–मित्रम् (न), सखा (=सखि),सुहृत् (=सुहृद् । +साप्तपदीनः। २ पु), 'मित्र,

१ सख्यं साप्तपदीनं स्यादनुरोधोऽनुवर्तनम् ॥ १२ ॥
३ यथार्हवर्णः प्रणिधिरपसर्पश्चरः स्पशः ।
चारश्च गूढपुरुषश्चाप्तप्रत्ययितौ समौ ॥ १३ ॥
५ सांवत्सरो ज्यौतिषिको दैवज्ञगणकावपि ।
स्युर्मौहूर्त्तिकमौहूर्त्तज्ञानिकार्तान्तिका अपि ॥ १४ ॥
६ तान्त्रिको ज्ञातसिद्धान्तः ७ सत्त्री गृहपतिः समौ ।
८ लिपिकारोऽक्षरचणोऽक्षरचुञ्चुश्च लेखके ॥ १५ ॥
९ लिखिताक्षरविन्यासे लिपिर्लिबिरुभे स्त्रियौ ।
१० स्यात्सन्देशहरो दूतो ११ दूत्यं तद्भावकर्मणी ॥ १६ ॥
१२ अध्वनीनोऽध्वगोऽध्वन्यः पान्थः पथिक इत्यपि ।

दोस्त' के ३ नाम है॥ १-सख्यम , साप्तपदीनम् (+ सौहृदम् ,सौहार्दम् ,सौहृदी-यम् , अजर्यम् , मैत्री। २न), 'दोस्ती मित्रता' के २ नाम हैं ॥ २-अनुरोधः (पु), अनुवर्तनम् (न), 'अनुकूल रहने' के २ नाम हैं ॥ ३-यथार्हवर्णः, प्रणि-धिः, अपसर्पः (+ अवसर्पः), चरः, स्पशः,चारः, गूढपुरुषः (७ पु), 'गुप्तचर खो-फिया' के ७ नाम हैं ॥ ४-आप्तः, प्रत्ययितः (२ त्रि),'विश्वासपात्र पुरुषा-दि' के २ नाम हैं। ५-सांवत्सरः, ज्यौतिषिकः(+ ज्योतिषिकः), दैवज्ञः, गणकः, मौहूर्त्तिकः, मौहूर्त्तः, ज्ञानी (=ज्ञानिन्), कार्तान्तिकः (८ पु), 'ज्यौतिषी' के ८ नाम हैं ॥ ६-तान्त्रिकः, ज्ञातसिद्धान्तः (२ पु), 'सिद्धान्तको ठीक २ जानने वाले' के २ नाम हैं ॥७-सत्त्री (=सत्त्रिन्), गृहपतिः (२पु), अन्नादिको सर्वदा दान करनेवाले गृहस्थ' के २ नाम हैं ॥ ८-लिपिकारः (+ लिपिकरः, लिबि करः, लिपिङ्करः, लिबिङ्करः), अक्षरचणः, अक्षरचुञ्चुः, लेखकः (४ पु), 'लेखक, कातिब' के ४ नाम हैं ॥ ९-लिपिः(+ लिपी), लिबिः (२ स्त्री), लिखे हुये अक्षर 'चित्रादि' के २ नाम हैं। ("महे० के मतसे 'लिखितम् , अक्षरसंस्थानम्) (+ लिखिताक्षरसंस्थानम् , अक्षरविन्यासः । २ न), इन शब्दोंके भी पर्याय हो-नेसे ४ नाम उक्तार्थक हैं") ॥ १०-सन्देशहरः, दूतः (२ पु), 'दूत,सन्देश पहुं-चानेवाले' के २ नाम हैं ॥ ११-दूत्यम् (+ दौत्यम् । न), 'दूतके काम या भाव' का १ नाम है ॥ १२-अध्वनीनः, अध्वगः, अध्वन्यः, पान्थः, पथिकः

१ स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ॥ १७ ॥
राज्याङ्गानि प्रकृतयः २ पौराणां श्रेणयोऽपि च ।
३ सन्धिर्ना विग्रहो यानमासनं द्वैधमाश्रयः ॥ १८ ॥
४ षड् गुणाः शक्तयस्तिस्रः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
५ क्षयः स्थानं च वृद्धिश्च त्रिवर्गो नीतिवेदिनाम् ॥ १९ ॥

(९ पु), 'पथिक, राही, मुसाफिर' के ९ नाम हैं ॥ १-स्वामी (=स्वामिन्) अमात्यः, सुहृत् (=सुहृद्), कोशः (+कोषः । ४ पु), राष्ट्रम्, दुर्गम्, बलम् (३ न), 'राजा, मन्त्री, मित्र, खजाना, राज्य, किला और सेना' का वाचक क्रमशः १-१ शब्द है, इन सातोंके 'राज्याङ्गम् (न), प्रकृतिः (स्त्री)' ये २ नाम हैं अर्थात् राजा आदि,...७ 'राज्याङ्ग और प्रकृतिः कहलाते हैं ॥ २-पौराणां श्रेणयः (स्त्री), अर्थात् 'नगरवासियोंको भी 'राज्याङ्ग और प्रकृति' कहते हैं; इस तरह 'राज्याङ्ग या प्रकृति' के ८ भेद हैं ॥ ३-सन्धिः, विग्रहः, यानम्, आसनम्, द्वैधम् (३ न), आश्रयः (शेष ३ पु), ये ६ 'नीति जाननेवालोंके गुण' हैं । ("प्रसङ्गवश इनके लक्षण कहते हैं—सुवर्णादि धन हाथी घोड़ा आदि देकर वैरीसे मेल करनेको सन्धि १, शत्रुके राज्यादिको लूटने या अग्नि आदि लगाकर वैर या युद्ध करने को विग्रह २, जीतनेकी इच्छासे चढ़ाई या युद्धयात्रा करनेको यान ३, अपने पक्षके दुर्बल होनेसे किला आदिको पुष्ट तथा सुरक्षित कर चुप चाप बैठ जानेको आसन ४, बलवान्के साथ मित्रता और दुर्बल के साथ वैर करने को या आधी सेनाके साथ चढ़ाई करनेको द्वैध ५, तथा शत्रुसे पीड़ित होकर अपनी रक्षाके लिये उदासीन या मध्यम राजाके शरणमें जानेको आश्रय ६, कहते हैं; इनके भी अनेक भेद होते हैं") ॥ ४-शक्तिः (स्त्री), 'शक्ति' अर्थात् 'सामर्थ्य' 'प्रभाव, उत्साह और मन्त्र (गुप्त सलाह)' से होती है अर्थात् 'प्रभावज, उत्साहज और मन्त्रज' ये ३ शक्तियां हैं । ("कोष और दण्ड-बल प्रभावज शक्ति १, विक्रम-बल उत्साहज शक्ति २, और सन्धि आदि षड्गुण तथा सामादि उपायका यथावत् प्रयोग मन्त्रज शक्ति ३ है") ॥ ५-क्षयः (पु), स्थानम् (न), वृद्धिः (स्त्री), क्रमशः कृषि आदि अष्टवर्गकी कमी होनेको क्षय, सामान्य रहने (कमी वेशी नहीं होने) को स्थान और बढ़ने को वृद्धि, कहते हैं । ये ही तीनों (क्षयः, स्थानम्, वृद्धिः), नीति जाननेवालोंका

१ स प्रतापः प्रभावश्च यत्तेजः कोषदण्डजम् ।
२ भेदो दण्डः साम दानमित्युपायचतुष्टयम् ॥ २० ॥
३ साहसं तु दमो दण्डः ४ साम सान्त्वमथो समौ ।
५ भेदोपजापावुपधा धर्माद्यैर्यत्परीक्षणम् ॥ २१ ॥
७ पञ्च त्रिष्व ८ षडक्षीणो यस्तृतीयाद्यगोचरः ।
९ विविक्तविजनच्छन्ननिःशलाकास्तथा रहः ॥ २२ ॥
रहश्चोपांशु चालिङ्गे १० रहस्यं तद्भवे त्रिषु ।
११ समौ विस्रम्भविश्वासौ १२ भ्रेषो भ्रंशो यथोचितात् ॥ २३ ॥
१३ अभ्रेषन्यायकल्पास्तु देशरूपं समञ्जसम् ।

त्रिवर्ग है; त्रिवर्गः (पु), है ॥ १–प्रभावः, प्रतापः (२ पु), 'प्रताप' अर्थात् 'खजाने तथा शासनसे उत्पन्न तेज' के २ नाम हैं ॥ २–भेदः, दण्डः (२ पु),साम (=सामन्), दानम् (२ न), क्रमशः वैरीके मन्त्री आदिको गुप्तचर आदिके द्वारा फोड़ कर अपने पक्षमें लाकर शत्रु को वशमें करनेको भेद्, अपराधियोंके शासन करनेको दण्ड, मीठे वचन या अन्यान्य उपायोंसे क्रोध दूर करनेको साम और किसी वस्तुके देनेको दान कहते हैं। ये ही चारो (भेदः, दण्डः, साम, दानम), नीति जाननेवालों के उपाय हैं, उपायः (पु) है। ("भेदके तीन, दण्डके दो या चार, सामके चार और दान के पांच भेद होते हैं") ॥ ३–साहसम् (न), दण्डः, दमः (२ पु), 'दण्ड' के ३ नाम हैं ॥ ४–साम (=सामन्), सान्त्वम् (२ न), 'साम, सान्त करने' के २ नाम हैं ॥ ५–भेदः, उपजापः (२ पु), 'भेद' के २ नाम है । ६–उपधा (स्त्री), मन्त्री आदिके धर्म धन काम और भयादिको जाननेके लिये उनकी राजाद्वारा परीक्षा करने' का १ नाम है ॥ ७–यहांसे ९ शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥ ८–अषडक्षीणः, (त्रि), 'केवल दो आदमियोंके किये हुये गुप्त सलाह' का १ नाम है ॥ ९–विविक्तः, विजनः, छन्नः, निःशलाकः (४ त्रि), रहः (=रहस् न), रहः (+रहस्), उपांशु (२ अव्य०), 'एकान्त' के ७ नाम हैं ॥ १०–रहस्यम् (त्रि), 'रहस्य' छिपाने योग्य' का १नाम है ॥ ११–विस्रम्भः (× विश्रम्भः), विश्वासः (२पु), 'विश्वास' के २ नाम हैं ॥ १२–भ्रेषः (पु), 'अनुचित' का १ नाम है ॥ १३–अभ्रेषः, न्यायः, कल्पः (३ पु), देशरूपम् , समञ्जसम् (२न) 'न्याय मुना-

१ युक्तमौपयिकं लभ्यं भजमानाभिनीतवत् ॥ २४ ॥
न्याय्यं च त्रिषु षट् २ संप्रधारणा तु समर्थनम् ।
३ अववादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं च सः ॥ २५ ॥
शिष्टिश्चाज्ञा च ४ संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ।
५ आगोऽपराधो मन्तुश्च ६ समे तूद्दानबन्धने ॥ २६ ॥
७ द्विपाद्यो द्विगुणो दण्डो ८ भागधेयः करो बलिः ।
९ घट्टादिदेयं शुल्कोऽस्त्री १० प्राभृतं तु प्रदेशनम् ॥ २७ ॥
११ उपायनमुपग्राह्यमुपहारस्तथोपदा ।
१२ यौतकादि तु यद्देयं सुदायो हरणं च तत् ॥ २८ ॥
१३ तत्कालस्तु तदात्वं स्या १४ दुत्तरः काल आयतिः ।

सिय' के ५ नाम हैं ॥ १–युक्तम्, औपयिकम्, लभ्यम्, भजमानम्, अभिनीतम्, नाय्यम् (६ त्रि), 'न्याययुक्त द्रव्यादि' के ६ नाम हैं ॥ २–संप्रधारणा (स्त्री), समर्थनम् (न), 'उचित और अनुचितका विचार कर निश्चय-करने' के २ नाम हैं ॥ ३–अववाद, निर्देशः, निदेशः (३ पु), शासनम् (न), शिष्टिः, आज्ञा (२ स्त्री), 'आज्ञा, हुकम' के ६ नाम हैं ॥ ४–संस्था, मर्यादा धारणा, स्थितिः (४ स्त्री), 'उचित मार्गपर रहने' के ४ नाम हैं ॥ ५–आगः (=आगस् न), अपराधः, मन्तुः (२ पु), 'अपराध कसूर' के ३ नाम हैं ॥ ६–उद्दानम्, बन्धनम् (२ न), 'बांधने या कैद करने' के २ नाम हैं ॥ ७–द्विपाद्यः (पु), 'दुगुने दण्ड' का १ नाम है ॥ ८–भागधेयः, करः, बलिः (३ पु) 'कर, मालगुजारी' के २ नाम हैं ॥ ९-शुल्कः (पु न), 'घाट जङ्गल और नदी आदिकी आमदनीसे दिये जानेवाले राज-भाग (टेक्स), का १ नाम है ॥ १०–प्राभृतम्, प्रदेशनम् (२ न), 'खुश करनेके लिये मित्रादिको दिये जानेवाले पदार्थ' के २ नाम हैं ॥ ११–उपायनम्, उपग्राह्यम् (२ न), उपहारः (पु), उपदा (स्त्री), भा० दी० मतसे 'राजाको दिये जानेवाले भेट नजराना' के ४ नाम हैं। प्राभृतम्..........देवता राजा मित्रादिको खुश करनेके लिये दिये जानेवाले भेट' के ६ नाम हैं ॥ १२–सुदायः (पु), हरणम् (न), 'यज्ञोपवीत आदिमें दी हुई भिक्षा या दामादको दिये जानेवाले दहेज' के २ नाम हैं ॥ १३–तत्कालः (पु), तदात्वम् (न), 'वर्तमान काल, बितते हुए समय' के २ नाम हैं ॥ १४–आयतिः (स्त्री),

१ सांदृष्टिकं फलं सद्य २ उदर्कः फलमुत्तरम् ॥ २९ ॥
३ अदृष्टं वह्नितोयादि ४ दृष्टं स्वपरचक्रजम् ।
५ महीभुजामहिभयं स्वपक्षप्रभवं भयम् ॥ ३० ॥
६ प्रक्रिया त्वधिकारः स्याऽच्चामरं तु प्रकीर्णकम् ।
८ नृपासनं यत्तद्भद्रासनं ९ सिंहासनं तु तत् ॥ ३१ ॥
१० हैमं छत्रं त्वातपत्रं ११ राज्ञस्तु नृपलक्ष्म तत् ।
१२ भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भो १३ भृङ्गारः कनकालुका ॥ ३२ ॥
१४ निवेशः शिविरं षण्ढे १५ सज्जनं तूपरक्षणम् ।

'आनेवाले समय, भविष्यकाल' का १ नाम है ॥ १–सांदृष्टिकम् (न), व्यापार आदिके बाद शीघ्र मिलनेवाले फल' का १ नाम है॥ २–उदर्कः (पु), 'भविष्यमें होनेवाले फल' का १ नाम है ॥ ३–अदृष्टम् (न),'आगसे जलने पानीसे वह जाने आदि (आदि पदसे व्याधि, दुर्भिक्ष, मरण, बहुत वर्षा, सुखार, मृग, मूषक' का संग्रह है) के भय, का १ नाम है ॥ ४–दृष्टम् (न) 'अपने राज्यसे चोर जङ्गल आदिका भय तथा दूसरे राज्यसे दाह और चढ़ाई आदिके भय' का एक नाम है ॥ ५–अहिभयम् (न) 'अपने पक्ष (मन्त्री आदि) से होनेवाले राजा आदिके भय' का १ नाम है। ("पक्षके ७ भेद हैं") ॥ ६–प्रक्रिया (स्त्री), अधिकारः (पु), "व्यवस्थाको ठीक करने' के २ नाम हैं ॥ ७–चामरम् (चमरम्; चमरः पु, चामरा स्त्री), प्रकीर्णकम् (२ न), 'चंवर' के २ नाम हैं ॥ ८–नृपासनम् , भद्रासनम् (२ न), 'मणि आदिके बने हुए राजाके आसन'के २ नाम हैं ॥ ९–सिंहासनम् (न), 'सुवर्णके बने हुए राजाके सिंहासन' का १ नाम है ॥ १० छत्रम् , आतपत्रम् (२ न), 'छाता' के २नाम हैं ॥ ११–नृपलक्ष्म (=नृपलक्ष्मन् न), राजाके छाता' का १ नाम है॥ १२–भद्रकुम्भः, पूर्णकुम्भः (२पु), मङ्गलके लिये जल से भरे हुए घड़े' के २नाम हैं॥ १३–भृङ्गारः (पु), कनकालुका (स्त्री), 'झारी, हुथहर' (स्वर्णके पात्र–विशेष)' के २ नाम हैं ॥ १४–निवेशः (पु), शिबिरम् (×शिविरम् । न), 'सेनाके ठहरनेको जगह' के २ नाम हैं ॥ १५–सज्जनम् , उपरक्षणम् (२ न), सेनाकी रक्षाके वास्ते नियत किये हुए पहरे'

१ हस्त्यश्वरथपादातं सेनाङ्गं स्याच्चतुष्टयम् ॥ ३३ ॥
२ दन्ती दन्तावलो हस्ती द्विरदोऽनेकपो द्विपः।
मतङ्गजो गजो नागः कुञ्जरो वारणः करी ॥ ३४ ॥
इभः स्तम्बेरमः पद्मी ३यूथनाथस्तु यूथपः।
४ मदोत्कटो मदकलः ५ कलभः करिशावकः ॥ ३५ ॥
६ प्रभिन्नो गर्जितो मत्तः ७ समावुद्वान्तनिर्मदौ।
८ 'राजवाह्यस्त्वौपवाह्यः ९ सन्नाह्यः समरोचितः' (१०)
१० हास्तिकं गजता वृन्दे ११ करिणी धेनुका वशा ॥ ३६ ॥
१२ गण्डः कटो १३ मदो दानं १४ वमथुः करशीकरः।

के २ नाम हैं ॥ १-सेनाङ्गम् (न) हाथी, रथ, घोड़ा और पैदल ये ४ सेना के अङ्ग हैं। ("नाव जहाज आदिका रथमें, किरात मल्लाह आदिका पैदलमें और भैंसा आदिका हाथीमें अन्तर्भाव होनेसे उनका पृथक् ग्रहण नहीं किया गया है") ॥ २-दन्ती (=दन्तिन्), दन्तावलः, हस्ती (=हस्तिन्), द्विरदः, अनेकपः, द्विपः, मतङ्गजः, गजः, नागः, कुञ्जरः, वारणः, करी (=करिन्), इभः, स्तम्बेरमः, पद्मी (=पद्मिन्। ×सामजः, सिन्धुरः, कुम्भी=कुम्भिन्। १९ पु) 'हाथी' के १९ नाम हैं। ("यहांसे श्लो० ४३ तक गजप्रकरण है") ॥ ३-यूथनाथः, यूथपः (२ पु), 'झुण्डके स्वामी' के २ नाम हैं। ४-मदोत्कटः, मदकलः (२ पु) मतवाले हाथी के २ नाम हैं ॥ ५-कलभः (×करभः), करिशावकः (२ पु), 'तीस वर्षसे कम उम्रवाले हाथीके बच्चे' के २ नाम हैं ॥ ६-प्रभिन्नः, गर्जितः, मत्तः (३ पु), 'जिसका मद गिर रहा हो उस हाथी' के ३ नाम हैं ॥ ७-उद्वान्तः, निर्मदः (२ पु), 'जिसका मद गिर चुका हो उस हाथी' के २ नाम हैं ॥ ८-[राजवाह्यः, औपवाह्यः (=उपवाह्यः। (२ पु), 'राजाके चढ़ने योग्य हाथी' के २ नाम हैं] ॥ ९-सन्नाह्यः, समरोचितः (२ पु), 'लड़ाईके योग्य हाथी' के २ नाम हैं] ॥ १०-हास्तिकम् (न), गजता (स्त्री), 'हाथियों के झुण्ड' के २ नाम हैं ॥ ११-करिणी, धेनुका, वशा (३ स्त्री), 'हथिनी' के ३ नाम हैं ॥ १२-गण्डः (भा० दी०), कटः (२ पु), 'हाथीके गाल' के २ नाम हैं। ("उपलक्षण होनेसे प्राणिमात्रके गालके भी ये दो नाम हैं") ॥ १३-मदः (पु), दानम् (न), 'हाथी के मद' के २ नाम हैं॥ १४-वमथुः, करशीकरः (२ पु), 'हाथीके सूंढ़से निकले हुए पानीके छींटे'

१ कुम्भौ तु पिण्डौ शिरसः २ तयोर्मध्ये विदुः पुमान् ॥ ३७ ॥
३ अवग्रहो ललाटं स्या४दीषिका त्वक्षिकूटकम् ।
५ अपाङ्गदेशो निर्याणं ६कर्णमूलं तु चूलिका ॥ ३८ ॥
७ अधः कुम्भस्य वाहित्थं ८ प्रतिमानमधोऽस्य यत् ।
९ आसनं स्कन्धदेशः स्यात् १० पद्मकं बिन्दुजालकम् ॥ ३९ ॥
११ पक्षभागः पार्श्वभागो १२ दन्तभागस्तु योऽग्रतः ।
१३ द्वौ पूर्वपश्चाज्जङ्घादिदेशौ गात्रावरे क्रमात् ॥ ४० ॥
१४ तोत्रं वेणुक१५मालानं बन्धस्तम्भे१६ऽथ शृङ्खले ।

के २ नाम हैं ॥ १–कुम्भः (पु), 'हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनो मांस-पिण्ड' का १ नाम है ॥ २–विदुः (पु), हाथीके मस्तकके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्डोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥ ३–अवग्रहः (+अवग्राहः । पु), ललाटम् (न), 'हाथीके ललाट' के २ नाम हैं ॥ ४–ईषिका (+ईषीका, इषिका, इर्षीका । स्त्री), अक्षिकूटम् (न), 'हाथीकी आँखके गोलाकार भाग' के २ नाम हैं ॥ ५–निर्याणम् (न), 'हाथीकी आँखके किनारेवाले भाग' का १ नाम है ॥ ६–चूलिका (स्त्री), हाथीकी कनपट्टी' (कानकी जड़वाले भाग)' का १ नाम है ॥ ७–वाहित्थम् (न), 'हाथीके शिरके ऊपरवाले दोनों मांस-पिण्डके नीचेवाले भाग' का १ नाम है ॥ ८–प्रतिमानम् (न), 'हाथीके दोनों दाँतोंके बीचवाले भाग' का १ नाम है ॥ ९–आसनम् (न), 'हाथीका कन्धा' अर्थात् 'हाथीवान्के बैठनेकी जगह' का १ नाम है ॥ १०–पद्मकम् (भा० दी०), बिन्दुजालकम् (+ विन्दुजालकम् । २न), 'हाथियोंके मुखमें कमलाकार छोटे २लाल चिह्न-विशेष' के २ नाम हैं ॥ ११–पक्षभागः (भा० दी०), पार्श्वभागः (२ पु) 'हाथीके पार्श्वभाग (बगल), के २ नाम हैं ॥ १२–दन्तभागः (पु), 'हाथीके आगेवाले भाग' का १ नाम है ॥ १३–गात्रम् , अवरम् , (+ अबरम् , अपरम् । २ न), हाथीके आगेवाले जङ्घा आदि पूर्वार्द्ध शरीर और पीछेवाले जङ्घा आदि परार्द्ध शरीर' का क्रमशः १—१ नाम है ॥ १४–तोत्रम् , वेणुकम् (+ वैणुकम् । २ न), 'हाथी को मारकर चलाने वाले डण्डा या चाबुक आदि' के २ नाम हैं ॥ १५–आलानम् (न), 'हाथीको बांधनेवाले खूंटे या खम्भे' का १ नाम है ॥ १६–शृङ्खलम् (त्रि), अन्दुकः (+ अन्दूः स्त्री । पु), निगडः (पु न), हाथीके

अन्दुको निगडोऽस्त्री स्या१दङ्कुशोऽस्त्री सृणिः स्त्रियाम् ॥ ४१ ॥
२ दूष्या कक्ष्या वरत्रा स्यात् ३ कल्पना सज्जना समे ।
४ प्रवेण्यास्तरणं वर्णः परिस्तोमः कुथो द्वयोः ॥ ४२ ॥
५ वीतं त्वसारं हस्त्यश्वं ६ वारी तु गजबन्धनी ।
७ घोटके वीतितुरगतुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः ॥ ४३
वाजिवाहार्वगन्धर्वहयसैन्धवसप्तयः ।
८ आजानेयाः कुलीनाः स्यु९र्विनीताः साधुवाहिनः ॥ ४४ ॥
१० वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा वा ह्लिका हयाः ।
११ ययुरश्वोऽश्वमेधीयो १२ जवनस्तु जवाधिकः ॥ ४५ ॥

बेड़ी (बांधनेवाली सिकड़ी)' के ३ नाम हैं ॥ १–अङ्कुशः (पु न), सृणिः (+ श्रृणिः । स्त्री), 'अङ्कुश' के २ नाम हैं॥ २–दूष्या (+ चूष्या, चूषा मुकु०) कक्ष्या, वरत्रा (३ स्त्री),'हाथी कसलेनेवाले रस्से' के ३ नाम हैं ॥ ३–कल्पना, सज्जना (२ स्त्री), 'गेरु आदिसे हाथीकी सजावट करने' के २ नाम हैं ॥ ४–प्रवेणी (+ प्रवेणिः । स्त्री), आस्तरणम् (न), वर्णः, परिस्तोमः (+ वर्णपरिस्तोमः । २ पु), कुथः (पु स्त्री), 'हाथीके झूल' के ५ नाम हैं ॥ ५–वीतम् (न), 'लड़नेमें असमर्थ हाथी घोड़े' का १ नाम है ॥ ६–वारी, गजबन्धनी (२ स्त्री), 'हाथीखाना' अर्थात् 'हाथी बांधनेकी जगह' के २ नाम हैं ॥ ७–घोटकः (+ घोटः), वीतिः (+ पीतिः), तुरगः, तुरङ्गः, अश्वः, तुरङ्गमः, वाजी (= वाजिन्), वाहः, अर्वा (= अर्वन्), गन्धर्वः, हयः, सैन्धवः, सप्तिः (१३ पु), 'घोड़े'के १३ नाम हैं । (यहांसे श्लो० ५० तक 'अश्वप्रकरण' है'')॥ ८–आजानेयः (पु), 'अच्छे घोड़े' का १ नाम है ॥ ९–विनीतः, साधुवाही (=साधुवाहिन् । २ पु), 'अच्छी २ चालसे शिक्षित घोड़े' के २ नाम हैं ॥ १०–वनायुजः (+ वानायुजः), पारसीकः, काम्बोजः, बाह्लिकः (+ वाह्लिकः, वाह्लीकः बाह्लीकः । ४ पु), 'वनायु, पारस, काम्बोज और वाह्लिक देशोंमें पैदा होनेवाले घोड़े' का क्रमशः १-१ नाम है। (किसी २ के मतसे प्रथम दो नाम 'पारसी घोड़े' के और अन्तवाले दो नाम उक्तार्थक हैं'') ॥११–ययुः, अश्वमेधीयः (भा० दी० । २ पु), 'अश्वमेध यज्ञमें छोड़े जाने वाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥ १२–जवनः (+ प्रजवी = प्रजविन्), जवाधिकः (भा० दी० ।

१ पृष्ठ्यः स्थौरी २ सितः कर्को ३ रथ्यो वोढा रथस्य यः ।
४ वालः किशोरो ५ वाम्यश्वा वडवा ६ वाडवं गणे ॥ ४६ ॥
७ त्रिष्वाश्वीनं यदश्वेन दिनेनैकेन गम्यते ।
८ कश्यं तु मध्यमश्वानां ९ हेषा ह्रेषा च निस्वनः ॥ ४७ ॥
१० निगालस्तु गलोद्देशो ११ वृन्दे त्वश्वीयमाश्ववत् ।
१२ आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ४८ ॥
गतयोऽमूः पञ्च धारा १३ घोणा तु प्रोथमस्त्रियाम् ।
१४ कविका तु खलीनोऽस्त्री १५ शफं क्लीबे खुरः पुमान् ॥ ४९ ॥

---

२ पु), 'बहुत तेज़ चलनेवाले घोड़े' के २ नाम हैं ॥ १–पृष्ठ्यः, स्थौरी (=स्थौरिन् । २ पु), 'अन्न आदि जिसपर लादाजाय उस घोड़े' के २ नाम हैं ॥ २–कर्कः (पु),'सफेद घोड़े' का १ नाम है ॥ ३–रथ्यः (पु), 'रथमें चलनेवाले घोड़े' का १ नाम है ॥ ४–किशोरः (पु), 'बछेड़ा' अर्थात् 'बच्चे घोड़े का १ नाम है । ("उपलक्षणतया 'किशोर' शब्द मनुष्यादिके बालकका भी वाचक है") ॥ ५–वामी, अश्वा, वडवा (३ स्त्री), 'घोड़ी' के ३ नाम हैं ॥ ६–वाडवम् (न),'घोड़ियोंके झुण्ड' का १ नाम है ॥ ७–आश्वीनम् (त्रि),'एक दिन घोड़ेसे चलने योग्य रास्ता या देशादि का १ नाम है ॥ ८–कश्यम् (न),'घोड़ेके मध्य भाग' का १ नाम है ॥ ९–हेषा, ह्रेषा (२ स्त्री), 'हिनहिनाहट, घोड़ेकी बोली' के २ नाम हैं ॥ १०–निगालः, गलोद्देशः (भा० दी० । २ पु), घोड़ेकी गर्दनके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥ ११–अश्वीयम् (+ आश्वीयम्), आश्वम् (२ न) 'घोड़ोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥ १२–आस्कन्दितम् (+ उत्तेरितम् ' उपकण्ठम्), धौरितकम् (+ धोरितकम् , धोरितम् , धौर्यम् , धारणम्), रेचितम् (+ उत्तेजितम्), वल्गितम् , प्लुतम् (५ न), 'घोड़ोंके 'सरपट दौड़ने, दुलकी चलने, पोइया चलने, उछाल मारकर चलने और चौकड़ी मारकर चलने' का क्रमशः १—१ नाम है । 'धारा' (स्त्री), 'घोड़ोंके पूर्वोक्त पांच चालों' का १ नाम है ॥ १३–घोणा (स्त्री), प्रोथम् (पु न), भा० दी० मतसे 'घोड़ेके चक्कर लगाने' के दो नाम हैं और महे० मतसे 'घोड़ेकी नाक' का 'प्रोथम्' यह एक नाम है । १४–कविका (+ कवी; कवियम् न । स्त्री), खलीनः (पु न), घोड़ेकी लगाम' के दो नाम हैं ॥ १५–शफम् (न), खुरः (+ क्षुरः । पु), घोड़ेकी सुम (खुर)' के २ नाम

१ पुच्छोऽस्त्री लूमलाङ्गूले २ वालहस्तश्च वालधिः ।
३ त्रिषूपावृत्तलुठितौ परावृत्ते मुहुर्भुवि ॥ ५० ॥
४ याने चक्रिणि युद्धार्थे शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
५ असौ पुष्यरथश्चक्रयानं न समराय यत् ॥५१ ॥
६ कर्णीरथः प्रवहणं डयनं च समं त्रयम् ।
७ क्लीबेऽनः शकटोऽस्त्री स्याद् ८ गन्त्री कम्बलिवाह्यकम् ॥ ५२ ॥
९ शिबिका याप्ययानं स्याद् १० दोला प्रेङ्खादिका स्त्रियाम् ।
११ उभौ तु द्वैपवैयाघ्रौ द्वीपिचर्मावृते रथे ॥ ५३ ॥
१२ पाण्डुकम्बलसंवीतः स्यन्दनः पाण्डुकम्बली ।
१३ रथे काम्बलवास्त्राद्याः कम्बलादिभिरावृते ॥ ५४ ॥

हैं ॥ १–पुच्छः (पु न), लूमम् , लाङ्गूलम् (+ लाङ्गुलम् । २ न), 'घोड़ेकी दुम (पूंछ)' के ३ नाम हैं ॥ २–वालहस्तः, वालधीः (२ पु), 'घोड़ेकी पूंछके वालवाले अगले भाग' के २ नाम हैं ॥ ३–उपावृत्तः,लुठितः (२त्रि), 'थकावट दूर करनेके लिये जमीनपर लेटे हुए घोड़े' के २ नाम हैं ॥ ४ शताङ्गः, स्यन्दनः रथः (३ पु), 'लड़ाईके रथ के ३ नाम हैं । ("यहांसे आगे श्लोक ६१ तक 'रथ–प्रकरण' है") ॥ ५–पुष्यरथः (+ पुष्परथः । पु), 'यात्रा उत्सव आदिमें चढ़नेके लिये बनाये हुए रथ' का १ नाम है ॥ ६–कर्णीरथः (पु), प्रवहणम् , डयनम् (+ हयनम् । २ न), 'स्त्रियोंके चढ़नेके लिये पर्दा आदिसे आड़ किये हुए रथ' के ३ नाम हैं ॥ ७–अनः (=अनस् न), शकटः (पु न), 'गाड़ी' के २ नाम हैं ॥ ८–गन्त्री (स्त्री), कम्बलिवाह्यकम् (भा० दी० । + गन्त्रीकम्, बलिवाह्यकम् । न), 'छोटी गाड़ी' के २ नाम हैं ॥ ९–शिबिका (+ शीविका । स्त्री), याप्ययानम् (न), 'पालकी' के २ नाम हैं ॥ १०–दोला (+ दोली) प्रेङ्खा, आदि ('शयनखट्वा ······' । २ स्त्री) 'झूला, हिंडोला' के २ नाम हैं ॥ ११–द्वैपः, वैयाघ्रः (२ त्रि),'वाघके चमड़ेसे मढ़े हुए रथ' के २ नाम हैं ॥ १२–पाण्डुकम्बली (=पाण्डुकम्बलिन् त्रि).'पाण्डु (धूसर) कम्बलसे मढ़े या ढके हुए रथ' का १ नाम है ॥ १३–काम्बलः, वास्त्रः (२ त्रि), आदि 'कम्बल और कपड़े आदिसे ढके हुए रथ' का क्रमशः १—१ नाम है ॥

१ त्रिषु द्वैपादयो २ रथ्या रथकट्या रथव्रजे ।
३ धूः स्त्री क्लीबे यानमुखं ४ स्याद्रथाङ्गमपस्करः ॥ ५५ ॥
५ चक्रं रथाङ्गं ६ तस्यान्ते नेमिः स्त्री स्यात्प्रधिः पुमान् ।
७ पिण्डिका नाभि ८ रक्षाग्रकीलके तु द्वयोरणिः ॥५६ ॥
९ रथगुप्तिर्वरूथो ना १० कूबरस्तु युगन्धरः ।
११ अनुकर्षो दार्वधःस्थं १२ प्रासङ्गो ना युगाद्युगः ॥ ५७ ॥
१३ सर्वं स्याद्वाहनं यानं युग्यं पत्त्रं च धोरणम् ।
१४ परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ५८ ॥

१–'द्वैप' आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥ २–रथ्या रथकट्या (२ स्त्री), रथव्रजम् (भा० दी० पु न), 'रथोंके समूह' के ३ नाम हैं ॥ ३–धूः (=धुर् स्त्री), यानमुखम् (न), 'रथके धूरा' के २ नाम हैं ॥ ४–रथाङ्गम् (न), अपस्करः (पु), 'रथके अवयव' के २ नाम हैं ॥ ५–चक्रम् , रथाङ्गम् , (२ न), 'रथके पहिये' के २ नाम हैं ॥ ६–नेमिः (+नेमी । स्त्री), प्रधिः (पु), 'हाल, रथके पहिये के ऊपर वाले परिधि' के २ नाम हैं ॥ ७–पिण्डिका (+पिण्डी), नाभिः (+नाभी । स्त्री), 'पहियेके बीचवाले भाग (जिसमें चारो तरफसे काठ जड़े रहते हैं)' के २ नाम हैं ॥ ८–अणिः (पु स्त्री), 'धूरामें लगानेवाली किल्ली' का १ नाम है ॥ ९–रथगुप्तिः (स्त्री), वरूथः (पु),'लड़ाईमें शत्रुके प्रहारसे बचनेके लिये रथमें लगाये हुए लोहा आदिके पर्दे' के २ नाम हैं ॥ १०–कूबरः, युगन्धरः (२ पु), 'जुआ फड़, रथमें घोड़ा आदि जोते जाने-वाले काष्ठ या जुएके काठ को बांधे जानेवालेस्थान' के २ नामहैं ॥ ११–अनुकर्षः (+अनुकर्षा=अनुकर्षन् । पु), 'रथके नीचेवाले काष्ठ' के २ नाम हैं ॥ १२–प्रासङ्गः (पु), महे० मतसे 'रथ आदिके जुआठ,फड़' का और भा० दी मतसे 'नये बछुवाको पहले पहल शिक्षा देनेके लिये उसके कन्धेपर रक्खे जानेवाले काष्ठ' का १ नाम है ॥ १३–वाहनम् , यानम् , युग्यम्, पत्त्रम्, धोरणम् (५ न), 'वाहनमात्र' अर्थात् 'हाथी, घोड़ा इत्यादि (श्लो० ३३) से लेकर दोला (श्लो० ५३) तक सब' के ये ५ नाम हैं ॥ १४–वैनीतकम् (+ प्राबन्धिकम् । न पु), 'परम्परावाली सवारी, कहार आदिके द्वारा बारी २ से ढोई जानेवाली पालकी, डोली आदि' का १

१ आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
२ नियन्ता प्राजिता यन्ता सूतः क्षत्ता च सारथिः ॥५९ ॥
सव्येष्ठदक्षिणस्थौ च संज्ञा रथकुटुम्बिनः ।
३ रथिनः स्यन्दनारोहा ४ अश्वारोहास्तु सादिनः ॥ ६० ॥
५ भटा योधाश्च योद्धारः ६ सेनारक्षास्तु सैनिकाः ।
७ सेनायां समवेता ये सैन्यास्ते सैनिकाश्च ते ॥ ६१ ॥
८ बलिनो ये सहस्रेण साहस्रास्ते सहस्रिणः ।
९ परिधिस्थः परिचरः १० सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ ६२ ॥
११ कञ्चुको वारबाणोऽस्त्री १२ यत्तु मध्ये सकञ्चुकाः ।
बध्नन्ति तत्सारसनमधिकाङ्गो१३ऽथ शीर्षकम् ॥६३ ॥

नाम है ॥ १–आधोरणः, हस्तिपकः, हस्त्यारोहः, निषादी (=निषादिन् । ४ पु), हाथीवान' के ४ नाम हैं । ("किसी२ के मत से २–२ शब्द एकार्थक हैं") ॥ २–नियन्ता (=नियन्तृ), प्राजिता (=प्राजितृ), यन्ता (=यन्तृ), सूतः, क्षत्ता (=क्षत्तृ), सारथिः, सव्येष्ठः (+सव्येष्ठा = सव्येष्ठ ।), दक्षिणस्थः(८ पु), 'रथके परिवार' अर्थात् 'रथ हांकनेवाला ड्राइवर, कोचवान, गाड़ीवान, बग्गीवान, एक्कावान और पीछे चढ़नेवाले-जो दौड़कर आगेकी भीड़को हटाकर फिर पीछे चढ़ जाता है इत्यादि, के ८ नाम हैं ॥ ३–रथी (=रथिन्), स्यन्दनारोहः (२ पु), रथपर चढ़कर लड़नेवाले' के २ नाम हैं ॥ ४–अश्वारोहः, सादी (=सादिन् । २ पु), 'घुड़सवार' के २ नाम हैं ॥ ५–भटः, योधः, योद्धा (=योद्धृ । ३ पु), 'लड़नेवाले' वीर' के ३ नाम हैं ॥ ६–सेनारक्षः, सैनिकः(२ पु), 'सेनाके पहरेदार' के २ नाम हैं ॥ ७–सैन्यः, सैनिकः (२ पु), 'सैनिक' अर्थात् 'सेनामें रहनेवाले' के २ नाम हैं ॥ ८–साहस्रः, सहस्री (=सहस्रिन् । २ पु), 'एक हजार योद्धाओंवाले सूबेदार आदि' के २ नाम हैं ॥ ९–परिधिस्थः, परिचरः (२ त्रि), 'अपराधी सैनिकोंको दण्ड देनेके लिये राजासे नियुक्त पुरुष' के २नाम हैं ॥ १०–सेनानीः, वाहिनीपतिः (२ पु),'सेनापति' के २ नाम हैं ॥ ११–कञ्चुकः (पु), वारबाणः (पु न), शत्रुके प्रहारसे बचने के लिये लोहे आदिके बनाये हुए सन्नाह, झूल' के २ नाम हैं ॥ १२–सारसनम् (न), अधिकाङ्गः (+अधिपाङ्गः, धिपाङ्गः । पु), 'झूल (कवच) को स्थिर रहनेके लिये कमरमें कसनेकी पट्टी आदि' के २ नाम हैं ॥ १३–शीर्षकम् ,

शीर्षण्यं च शिरस्त्रे १ अथ तनुत्रं वर्म दंशनम् ।
उरश्छदः कङ्कटको जगरः कवचोऽस्त्रियाम् ॥ ६४ ॥
२ आमुक्तः प्रतिमुक्तश्च पिनद्धश्चापिनद्धवत् ।
३ संनद्धो वर्मितः सज्जो दंशितो व्यूढकङ्कटः ॥ ६५ ॥
४ त्रिष्वामुक्तादयो ५ वर्मभृतां कावचिकं गणे ।
६ पदातिपत्तिपदगपादातिकपदाजयः ॥ ६६ ॥
पद्गश्च पदिकश्चाऽथ पादातं पत्तिसंहतिः ।
८ शस्त्राजीवे काण्डपृष्ठायुधीयायुधिकाः समाः ॥ ६७ ॥
९ कृतहस्तः सुप्रयोगविशिखः कृतपुङ्खवत् ।
१० अपराद्धपृषत्कोऽसौ लक्ष्याद्यश्च्युतसायकः ॥ ६८ ॥
११ धन्वी धनुष्मान्धानुष्को निषङ्ग्यस्त्री धनुर्धरः ।

शीर्षण्यम्, शिरस्त्रम् (३ न), 'लड़ाईके समय पहने जानेवाले, या टोपी मात्र' के ३ नाम हैं ॥ १–तनुत्रम्, वर्म (=वर्मन्), दंशनम् (३ न), उरश्छदः, कङ्कटकः, जगरः (+जागरः । ३ पु), कवचः (पु न), 'कवच' के ७ नाम हैं ॥ २–आमुक्तः, प्रतिमुक्तः, पिनद्धः, अपिनद्धः (४ त्रि), भा० दी० महे० आदिके मतसे 'पहनेहुए कवच' के और मु० मतसे 'पहने हुए वस्त्रादि' के ४ नाम हैं ॥ ३–संनद्धः, वर्मितः, सज्जः, दंशितः, व्यूढकङ्कटः (५ त्रि), 'कवच आदिको पहनकर लड़ाईके लिये तैयार मनुष्य' के ५ नाम हैं ॥ ४–'आमुक्त' आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥ ५–कावचिकम् (न), 'कवच पहने हुए पुरुषादिके झुण्ड' का १ नाम है ॥ ६–पदातिः (+पदातः, पादातिः, पादातः), पत्तिः, पदगः, पादातिकः (+पादातिगः, पादाविकः), पदाजिः, पद्गः, पदिकः (७ पु), 'पैदल' के ७ नाम हैं ॥ ७–पादातम् (न), पत्तिसंहतिः (भा० दी०, स्त्री) 'पैदलके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥ ८–शस्त्राजीवः, काण्डपृष्ठः (+काण्डस्पृष्टः मु०), आयुधीनः, आयुधिकः, (४ त्रि), 'हथियारकी नौकरी कर जीविका चलानेवाले' के ४ नाम हैं ॥ –९कृतहस्तः, सुप्रयोगविशिखः, कृतपुङ्खः (३ त्रि), 'बाण चलाने में निपुण' के ३नाम हैं ॥ १०–अपराद्धपृषत्कः (त्रि), 'निशाना चुके हुए' का १ नाम है ॥ ११–धन्वी (=धन्विन्), धनुष्मान् (=धनुष्मत्), धानुष्कः, निषङ्गी (=निषङ्गिन्), अस्त्री (=अस्त्रिन् । + शस्त्री=शस्त्रिन्), ध-

१ स्यात्काण्डवांस्तु काण्डीरः २ शाक्तीकः शक्तिहेतिकः॥ ६९ ॥
३ याष्टीकपारश्वधिकौ यष्टिपश्वधहेतिकौ ।
४ नैस्त्रिंशिकोऽसिहेतिः स्यात् ५ समौ प्रासिककौन्तिकौ ॥ ७० ॥
६ चर्मी फलकपाणिः स्यात् ७ पताकी वैजयन्तिकः ।
८ अनुप्लवः सहायश्चानुचरोऽभिसरः समाः ॥ ७१ ॥
९ पुरोगाग्रेसरप्रष्ठाग्रतःसरपुरःसराः ।
पुरोगमः पुरोगामी १० मन्दगामी तु मन्थरः ॥ ७२ ॥
११ जङ्घालोऽतिजवस्तुल्यौ १२ जङ्घाकरिकजाङ्घिकौ ।
१३ तरस्वी त्वरितो वेगी प्रजवी जवनो जवः ॥ ७३ ॥

नुर्धरः (६ त्रि), 'धनुषको धारण करनेवाले' के ६ नाम हैं ॥ १–काण्डवान् (=काण्डवत्), काण्डीरः (२ त्रि), 'बाणको धारण करने वाले' के २ नाम हैं ॥ २–शार्क्तीकः, शक्तिहेतिकः, (२ त्रि), 'शक्ति नामक शस्त्रको धारण करने वाले' के २ नाम हैं ॥ ३–याष्टीकः, पारश्वधिकः (२ त्रि), 'लाठी और फरसा धारण करनेवाले' का क्रमशः १–१ नाम है ॥ ४–नैस्त्रिंशिकः, असिहेतिः (भा० दी० । २ त्रि), 'तलवार धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥ ५–प्रासिकः, कौन्तिकः (२ त्रि), 'प्रास और कुन्त (भाला) 'धारण करने वाले' का क्रमशः १–१ नाम है । ("किसीके मतसे दोनों शब्द एकार्थक हैं। ६–चर्मी (=चर्मिन्), फलकपाणिः (२ त्रि), 'चर्म नामक हथियार धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥ ७–पताका (=पताकिन्), वैजयन्तिकः (२ त्रि), 'पताका धारण करनेवाले' के २ नाम हैं ॥ ८–अनुप्लवः, सहायः, अनुचरः, अभिसरः,(+ अभिचरः । ४ त्रि), 'अनुचर' के ४ नाम हैं ॥ ९–पुरोगः, अग्रेसरः (+अग्रसरः), प्रष्ठः, अग्रतःसरः, पुरःसरः, पुरोगमः, पुरोगामी (=पुरोगामिन् । ७ त्रि), आगे चलने वाले' के ७ नाम हैं ॥ १०–मन्दगामी (=मन्दगामिन्) मन्थरः (२ त्रि),'धीरे २ चलने वाले' के २ नाम हैं ॥ ११–जङ्घालः (+ जङ्घिलः), अतिजवः (+अतिबलः । २ त्रि), 'बहुत तेज चलनेवाले' के २ नाम हैं ॥ १२–जङ्घाकरिकः, जाङ्घिकः, (२ त्रि), 'दौड़ाहा डांक ढोने वाले' के २नाम हैं ॥ १३–तरस्वी (=तरस्विन्), त्वरितः, वेगी (=वेगिन्), प्रजवी (=प्रजविन्),जवनः, जवः (६ त्रि),'शीघ्रता करनेवाले' के ६ नाम हैं॥

१ जय्यो यः शक्यते जेतुं २ जेयो जेतव्यमात्रके ।
३ जैत्रस्तु जेता ४ यो गच्छत्यलं विद्विषतः प्रति ॥ ७४ ॥
सोऽभ्यमित्र्योऽभ्यमित्रीयोऽप्यभ्यमित्रीण इत्यपि ।
५ ऊर्जस्वलः स्यादूर्जस्वी य ऊर्जातिशयान्वितः ॥ ७५ ॥
६ स्यादुरस्वानुरसिलो ७ रथिको रथिरो रथी ।
८ कामङ्गाम्यनुकामीनो ९ ह्यत्यन्तीनस्तथा भृशम् ॥ ७६ ॥
१० शूरो वीरश्च विक्रान्तो ११ जेता जिष्णुश्च जित्वरः ।
१२ सांयुगीनो रणे साधुः १३ शस्त्राजीवादयस्त्रिषु ॥ ७७ ॥
१४ ध्वजिनी वाहिनी सेना पृतनाऽनीकिनी चमूः ।

१–जय्यः (त्रि), 'जीते जा सकनेवाले' का १ नाम है । ("जैसे–रामेण रावणो जय्यः' अर्थात् 'राम रावणको जीत सकते हैं' इस वाक्यमें रामका रावण जय्य हुआ,……") ॥ २–जेयः (त्रि), जीतने योग्य' का १ नाम है । (जैसे—'जेयं मनः इन्द्रियं वा' अर्थात् 'मन या इन्द्रिय जीतने योग्य हैं', इस वाक्यमें मन और इन्द्रिय जेय हैं, ……") ॥ ३–जैत्रः, जेता (=जेतृ । २ त्रि), 'विजयशील, जीतनेवाले' के २ नाम हैं ॥ ४–अभ्यमित्र्यः, अभ्यमित्रीयः, अभ्यमित्रीणः (३ त्रि), 'अपने पराक्रमसे शत्रुका सामना करने वाले' के ३ नाम हैं ॥ ५–ऊर्जस्वलः, ऊर्जस्वी (=ऊर्जस्विन् । २ त्रि), 'बहुत बलवान्' के २ नाम हैं ॥ ६–उरस्वान् (=उरस्वत्), उरसिलः (२ त्रि), चौड़ी छातीवाले' के २ नाम हैं ॥ ७–रथिकः (+रथिनः), रथिरः रथी (=रथिन् । ३ त्रि), 'रथके स्वामी' के ३ नाम हैं ॥ ८–कामङ्गामी (=कामङ्गामिन्), कामगामी (=कामगामिन्), अनुकामीनः (२ त्रि), 'मतलब भर (यथेष्ट) चलनेवाले' के २ नाम हैं । महे० मतसे पहले शब्दको पर्यायवाचक नहीं होनेसे १ ही नाम है ॥ ९–अत्यन्तीनः (त्रि), 'अत्यन्त चलनेवाले' का १ नाम है ॥ १०–शूरः, वीरः, विक्रान्तः (३ त्रि), 'पहलवान, बहादुर' के ३ नाम हैं ॥ ११–जेता (=जेतृ), जिष्णुः, जित्वरः (३ त्रि), सर्वदा विजय करनेवाले' के ३ नाम हैं । "जैसे—रामचन्द्र, इन्द्र और अर्जुन आदि") ॥ १२–सांयुगीनः (त्रि), 'लड़ाईमें चतुर' का १ नाम है । १३–'शस्त्राजीव' शब्द (श्लो० ६७) से यहां तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं ॥ १४–ध्वजिनी, वाहिनी, सेना, पृतना, अनीकिनी,

वरूथिनी बलं सैन्यं चक्रं चानीकमस्त्रियाम् ॥ ७८ ॥
१ व्यूहस्तु बलविन्यासो २ भेदा दण्डादयो युधि ।
३ प्रत्यासारो व्यूहपार्ष्णिः ४ सैन्यपृष्ठे प्रतिग्रहः ॥ ७९ ॥
५ एकेभैकरथा त्र्यश्वा पत्तिः पञ्चपदातिका ।
६ पत्त्यङ्गैस्त्रिगुणैः सर्वैः क्रमादाख्या यथोत्तरम् ॥ ८० ॥
सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
अनीकिनी ७ दशानीकिन्यक्षौहिणी ८ अथ संपदि ॥ ८१ ॥

चमूः, वरूथिनी (७ स्त्री), बलम्, सैन्यम्, चक्रम् (३ न), अनीकम् (न पु), **'सेना पलटन'** के ११ नाम हैं ॥ १–व्यूहः (पु), 'व्यूह' अर्थात् 'लड़ाईमें सेना को रखनेके कायदे' का १ नाम है ॥ २–दण्डः (पु) आदि ("भोग, मण्डल, असंहत, उत्सन्न, अचल, दृढ, चक्रव्यूह, मकर, पताका, सर्वतोभद्र,...... का संग्रह है"), 'व्यूह' अर्थात् 'लड़ाईमें सेनाको रखनेके कायदे' हैं ॥ ३–प्रत्यासारः (+प्रत्यासरः), व्यूहपार्ष्णिः (२ पु), **'व्यूहके पीछे वाले सेना–भाग'** के २ नाम हैं ॥ ४–सैन्यपृष्ठम् (भा० दी०, न), प्रतिग्रहः (+परिग्रहः, पतद्‌ग्रहः । पु), सेनाके पीछेवाले भाग' के २ नाम हैं ॥ ५–पत्तिः (स्त्री), 'पत्ति' अर्थात् 'जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पांच पैदल हों उस सेना–विशेष' का १ नाम है ॥ ६–सेनामुखम् (न), गुल्मः, गणः (२ पु), वाहिनी, पृतना' चमूः अनीकिनी (४ स्त्री), **'पत्ति आदि सेनामुख,** गुल्मः,.........) के **तिगुना करने पर सेनामुख आदि** (गुल्म, गणः,.........अनीकिनी) **संज्ञा सेना-विशेषको होती है'** अर्थात् ३ पत्ति (३ हाथी, ३ रथ ९ घोड़े और १५ पैदल), को सेनामुख; ३ सेनामुख (९ हाथी, ९रथ, २७ घोड़े और ४५ पैदल) को गुल्म; ३ गुल्म (२७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़े और १३५ पैदल) को गण' कहते हैं । इसी प्रकार **'पृतना' चमू और अनीकिनी'** में भी तिगुना समझना चाहिये ॥ ७–अक्षौहिणी (स्त्री), भा० दी० क्षी० स्वा० आदि '**दश अनीकिनी** (२१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल) **संख्यावाले सेना-विशेष'** का १ नाम है । ("महे० ने तो–'दशानीकिनी' (स्त्री), तीन **अनीकिनी** (६५६१ हाथी, ६५६१ रथ, १९६८३ घोड़े और ३२८०५ पैदल) **संख्यावाले सेना–विशेष'** का, १ नाम और 'अक्षौहिणी' (स्त्री), तीन **दशा-**

संपत्तिः श्रीश्च लक्ष्मीश्च १ विपत्त्यां विपदापदौ ।
२ आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रं३मथास्त्रियौ ॥ ८२ ॥
धनुश्चापौ धन्वशरासनकोदण्डकार्मुकम् ।
इष्वासोऽ४प्यथ कर्णस्य कालपृष्ठं शरासनम् ॥ ८३ ॥
५ कपिध्वजस्य गाण्डीवगाण्डिवौ पुन्नपुंसकौ ।
६ कोटिरस्याटनी ७ गोधे तले ज्याघातवारणे ॥ ८४ ॥
८ लस्तकस्तु धनुर्मध्यं ९ मौर्वी ज्या शिञ्जिनी गुणः ।
१० स्यात्प्रत्यालीढमालीढमित्यादि स्थानपञ्चकम् ॥ ८५ ॥

नीकिनी (११६८३ हाथी, ११६८३ रथ, ६९०४१ घोड़े और ९८४१९ पैदल) संख्यावाले सेना-विशेष' का १ नाम है ऐसा कहा है। किन्तु संपूर्ण संस्करण की टिप्पणीमें लिखे हुए भरतादि वाक्य से महे० का मत ठीक नहीं है। 'महाक्षौहिणी' (स्त्री), 'हाथी, रथ, घोड़े और पैदलको मिलाकर १३२१२४१०० संख्यावाले सेना-विशेष' का एक नाम है। (पत्तिसे लेकर महाक्षौहिणी तक सबके अलग २ प्रमाण संपूर्ण संस्करण के चक्र में देखिये") ॥ ८–संपत् (=सम्पद् । + सम्पदा), सम्पत्तिः, श्रीः, लक्ष्मीः (४ स्त्री), 'सम्पत्ति' के ४ नाम हैं ॥ १–विपत्तिः, विपत् (= विपद् । + विपदा), आपत् (=आपद् । + आपत्तिः, आपदा । ३ स्त्री), 'आपत्ति' के ३ नाम हैं ॥ २–आयुधम् , प्रहरणम् , शस्त्रम् , अस्त्रम् (४ न), 'हथियार' के ४ नाम हैं ॥ ३–धनुः (=धनुष् । + धनुः पु, धनूः स्त्री), चापः (२ पु न), धन्व (=धन्वन् । + धन्वम्), शरासनम् , कोदण्डम् , कार्मुकम् (४ न), इष्वासः (+ आसः । पु), 'धनुष' के ७ नाम हैं ॥ ४–कालपृष्ठम् (न), 'कर्णके धनुष' का १ नाम है ॥ ५–गाण्डीवः, गाण्डिवः (२ पु न), अर्जुन के धनुष' के २ नाम हैं ॥ ६–कोटिः (+ कोटी), अटनी (× अटनिः । २ स्त्री), 'धनुषके दोनों छोर (किनारे),के २ नाम हैं ॥ ७–गोधा (स्त्री), तलम् (न), 'दस्ताना' अर्थात् 'धनुषकी तांतके चोटसे बचनेके लिये हाथमें पहिरने वास्ते जो चमड़े आदिका बनाया जाता है उसके' २ नाम हैं ॥ ८–लस्तकः (पु), धनुर्मध्यम् (भा० दी० न), 'धनुषके बीचवाले भाग' के २ नाम हैं ॥ ९–मौर्वी, ज्या, शिञ्जनी (३ स्त्री), गुणः (पु), 'धनुषकी डोरी, या तांत' के ४ नाम हैं ॥ १०–प्रत्यालीढम् , आलीढम् (२ न),

१ लक्षं लक्ष्यं शरव्यं च २ शराभ्यास उपासनम् ।
३ पृषत्कबाणविशिखा अजिह्मगखगाशुगाः ॥ ८६ ॥
कलम्बमार्गणशराः पत्री रोप इषुर्द्वयोः ।
४ प्रक्ष्वेडनास्तु नाराचाः ५ पक्षो वाजस्त्रिपूत्तरे ॥ ८७ ॥
६ निरस्तः प्रहिते बाणे ७ विषाक्ते दिग्धलिप्तकौ ।
८ तूणोपासङ्गतूणीरनिषङ्गा इषुधिर्द्वयोः ॥ ८८ ॥
तूण्यां ९ खड्ग तु निस्त्रिंशचन्द्रहासासिरिष्टयः ।
कौक्षेयको मण्डलाग्रः करवालः कृपाणवत् ॥ ८९ ॥
१० त्सरुः खड्गादिमुष्टौ स्यात् ११ मेखला तन्निबन्धनम् ।

आदि ("आदिसे 'समपादम्, विशाखम्, मण्डलम् (३ न)' का संग्रह है") 'धनुषधारियोंके बैठनेके पांच आसन विशेष (तरीके)' हैं । (इनमें—'बांये जङ्घेको आगे बढ़ाकर उठाने और दहने जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेको प्रत्यालीढ १, दहने जङ्घेको आगे बढ़ाकर उठाने और बांये जङ्घेको पीछे खींचकर समेटनेको आलीढ २, दोनों पैरोंको बराबर रखनेको समपाद ३, दोनों पैरोंको फैलानेको वैशाख ४ और दोनों पैरोंको गोलाईके समान रखनेको मण्डल ५, कहते हैं") ॥ १–लक्षम्, लक्ष्यम्, शरव्यम् (३ न), 'निशाने' के ३ नाम हैं ॥ २–शराभ्यासः (पु), उपासनम् (न), 'बाण चलानेका अभ्यास करने के २ नाम हैं ॥ ३–पृषत्कः, बाण, विशिखः, अजिह्मगः, खगः, आशुगः, कलम्बः, मार्गणः, शरः (+सरः), पत्री (=पत्रिन्), रोपः (११ पु), इषुः (पु स्त्री), 'बाण' के १२ नाम हैं ॥ ४–प्रक्ष्वेडनः (+प्रक्ष्वेदनः), नाराचः (२ पु),'लोहेके बाण' के २ नाम हैं ॥ ५–पक्षः, वाजः (२ पु), बाणमें लगे हुए पङ्ख (कङ्कपत्र)' के २ नाम हैं ॥ ६–निरस्तः (त्रि), धनुषसे छोड़े हुए बाण' का १ नाम है ॥ ७–विषाक्तः, दिग्धः, लिप्तकः (३ त्रि), 'विषमें बुझाये हुए बाण' के ३ नाम हैं ॥ ८–तूणः, उपासङ्गः, तूणीरः, निषङ्गः, (४ पु) इषुधिः (पु स्त्री), तूणी (स्त्री) 'तरकस' अर्थात् 'चमड़े आदिके बने हुए धनुषधारियोंके पीठपर बांधे-जानेवाले बाण रखनेके थैले' के ६ नाम हैं ॥ ९–खड्गः, निस्त्रिंशः, चन्द्रहासः, असिः, रिष्टिः (+ ऋष्टिः), कौक्षेयकः, मण्डलाग्रः,करवालः (+करपालः,) कृपाणः (९ पु), 'तलवार' के ९ नाम हैं ॥ १०–त्सरुः (पु), 'तलवार आदि की मूठ' का १ नाम है ॥ ११–मेखला (स्त्री), 'तलवारको लटकानेके लिये चमड़े

१ फलकोऽस्त्री फलं चर्म २ संग्राहो मुष्टिरस्य यः ॥ ९० ॥
३ द्रुघणो मुद्गरघनौ ४ स्यादीली करवालिका ।
५ भिन्दिपालः सृगस्तुल्यौ ६ परिघः परिघातनः ॥ ९१ ॥
७ द्वयोः कुठारः स्वधितिः परशुश्च परश्वधः ।
८ स्याच्छस्त्री चासिपुत्री च छुरिका चासिधेनुका ॥ ९२ ॥
९ वा पुंसि शल्यं शङ्कुर्ना १० सर्वला तोमरोऽस्त्रियाम् ।
११ प्रासस्तु कुन्तः १२ कोणस्तु स्त्रियः पाल्यश्रिकोटयः ॥ ९३ ॥
१३ सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसंनहनार्थकः ।

आदिकी बनी हुई कमरमें कसी जानेवाली पेटी, लड़ाईमें तलवार हाथसे छूट न जाय इस वास्ते कलाई पर बांधे हुए चमड़े आदि, या तलवार के म्यान' का १ नाम है ॥ १–फलकः (पु न), फलम् , चर्म (=चर्मन् । २ न), 'ढाल' के ३ नाम हैं ॥ २–संग्राहः (पु), ढालकी मूठ' का १ नाम है ॥ ३–द्रुघणः (+द्रुघनः), मुद्गरः, घनः (३ पु), 'मुद्गर' के ३ नाम हैं ॥ ४–ईली (+ इलिः, ईलिः, इली,) करवालिका (+ करपालिका । २ स्त्री), एक तरफ धारवाली छोटी तलवार या गुप्ती' के २ नाम हैं ॥ ५–भिन्दिपालः (+ भिण्डिपालः), सृगः (२ पु), 'नलिका नामक हथियार या गुलेल' अर्थात् 'छोटे २ पत्थर या कंकड़ फेंकने वास्ते रबड़ या चमड़ेके बने हुए साधन विशेष, या ढेलवांस' के २ नाम हैं ॥ ६–परिघः परिघातनः (२ पु), लोहा मढ़ी हुई लाठी' के २ नाम हैं ॥ ७–कुठारः (पु स्त्री), स्वधितिः, परशुः, परश्वधः (परस्वधः, पर्श्वधः । ३ पु) 'फरसा, कुल्हाड़ी' के ४ नाम हैं ॥ ८–शस्त्री, असिपुत्री, छुरिका (+क्षुरिका), असिधेनुका (४ स्त्री), 'छुरी' के ४ नाम हैं ।। ९–शल्यम् (न पु), शङ्कुः (पु), 'बाणके नोक' (अगले भाग)' के २ नाम हैं ॥ १०–सर्वला (+शवला । स्त्री), तोमरः (पु न), 'तोमर, गुर्ज, या गड़ांसे' के २ नाम हैं ।। ११–प्रासः (+प्राशः), कुन्तः (२ पु), 'भाला' के २ नाम हैं ।। १२–कोणः (पु), पालिः (+पाली), अश्रिः (+अश्री), कोटिः (+कोटी । ३ स्त्री), 'तलवार आदि हथियारोंके किनारे, या नोक' के ४ नाम हैं ।। १३–सर्वाभिसारः, सर्वौघः (२ पु), सर्वसंनहनम् (न), 'चतुरङ्गिणी-

१ लोहाभिसारोऽस्त्रभृतां राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ ९४ ॥
२ यत्सेनयाभिगमनमरौ तदभिषेणनम् ।
३ यात्रा व्रज्याभिनिर्याणं प्रस्थानं गमनं गमः ॥ ९५ ॥
४ स्यादासारः प्रसरणं ५ प्रचक्रं चलितार्थकम् ।
६ अहितान्प्रत्यभीतस्य रणे यानमभिक्रमः ॥ ९६ ॥
७ वैतालिका बोधकरा८श्चाक्रिका घाण्टिकार्थकाः ।
९ स्युर्मागधास्तु मगधा १० वन्दिनः स्तुतिपाठकाः ॥ ९७ ॥

सेनाको तैयार करने'के ३ नाम हैं ।। १–लोहाभिसारः (+लोहाभिहारः । पु), 'लड़ाईके लिये तैयार शस्त्रधारियों या राजाओंकी आरती, या आरतीके बादवाले कृत्यविशेष, या युद्धयात्राके पहले की जानेवाली हथियारोंकी पूजा' का १ नाम है ॥ २–अभिषेणनम् (न), 'वैरीके सामने सेना-सहित जाने' का १ नाम है ॥ ३– यात्रा, व्रज्या (२ स्त्री), अभिनिर्याणम् , प्रस्थानम् , गमनम् (३ न) गमः (पु), 'यात्रा, प्रस्थान जाने' के ६ नाम हैं ॥ ४–आसारः (पु), प्रसरणम् (+प्रसरणी, प्रसरणिः । न) 'सेनाके सब तरफ फैल जाने' के २ नाम हैं । ("किसी २ के मतसे 'पीछेसे आने वाली सेना' को आसारः और 'घास, भूसा, जल, अन्न और इन्धन आदि इकट्ठा करनेके लिये सेनासे बाहर फैलनेको प्रसरणम् कहते हैं") ॥ ५–प्रचक्रम्, चलितम् (२ न), 'यात्रा की हुई सेना' के २ नाम हैं ॥ ६–अभिक्रमः (+अतिक्रमः । पु), 'निडर होकर वैरीके सामने योद्धाके जाने' का १ नाम है ॥ ७–वैतालिकः, बोधकरः (२ पु), 'राजाको जगानेके लिये प्रातःकाल या मौके २ पर राजाके स्तुतिपाठ करनेवाले वन्दी भाट' के २ नाम हैं ।। ८–चाक्रिकः (+ चक्रिकः), घाण्टिकः । (+घटिकः । २ पु), 'घण्टा बजानेवाले, या घड़ियारी नामक बाजाको बजानेवाले बन्दी-विशेष' के २ नाम हैं ।। ९–मागधः, मगधः (+मधुकः मु० । २ पु), राजाकी वंशावलीको वर्णन करनेवाले बन्दी' के २ नाम हैं ।। १०–बन्दी (=वन्दिन्), स्तुतिपाठकः (२ पु), राजाकी स्तुति करने वाले बन्दी' के २ नाम हैं ।("क्षी० स्वा० के मतसे 'मागधः, ...'४ नाम एकार्थक अर्थात् 'बन्दीमात्र'के हैं") ।।

१ संशप्तकास्तु समयात्संग्रामादनिवर्तिनः ।
२ रेणुर्द्वयोः स्त्रियां धूलिः पांशुर्ना न द्वयो रजः ॥ ९८ ॥
३ चूर्णे क्षोदः ४ समुत्पिञ्जपिञ्जलौ भृशमाकुले ।
५ पताका वैजयन्ती स्यात्केतनं ध्वजमस्त्रियाम् ॥ ९९ ॥
६ सा वीराशंसनं युद्धभूमिर्यातिभयप्रदा ।
७ अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यहंपूर्विका स्त्रियाम् ॥ १०० ॥
८ आहोपुरुषिका दर्पाद्या स्यात्सम्भावनाऽऽत्मनि ।
९ अहमहमिका तु सा स्यात्परस्परं यो भवत्यहङ्कारः ॥ १०१ ॥
१० द्रविणं तरः सहोबलशौर्याणि स्थाम शुष्मं च ।
शक्तिः पराक्रमः प्राणो ११ विक्रमस्त्वतिशक्तिता ॥ १०२ ॥
१२ वीरपानं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ।

१–संशप्तकः (पु), **'शपथ देने या स्वयं प्रतिज्ञा करनेके कारण लड़ाईसे नहीं लौटनेवाले योद्धा'** का १ नाम है ।। २–रेणुः (पु स्त्री), धूलिः (+धूली । स्त्री), पांशुः (+पांसुः । पु) रजः (=रजस् न), **'धूल'** के ४ नाम हैं ।। ३–चूर्णम् (न । +पु), क्षोदः (पु), **'महीन धूल'** के २ नाम हैं । ("किसी २ के मतसे 'रेणुः,······' ६ नाम 'धूलमात्र' के हैं") ।। ४–समुत्पिञ्जः, पिञ्जलः (२ पु), **'अधिक व्याकुल सेना'** के २ नाम हैं ।। ५—पताका, वैजयन्ती (२ स्त्री), केतनम् (न) ध्वजम् (न पु), **'पताका, झण्डे'** के ४ नाम हैं । (किसीके मतसे प्रथम दो नाम उक्तार्थक और अन्तवाले दो नाम **'पताका के दण्ड'** के हैं) ॥ ६—वीराशंसनम् (न), **लड़ाईके अत्यन्त भयङ्कर मैदान'** का १ नाम है । ७=अहंपूर्विका (स्त्री), **'मैं पहले पहुंचा मैं पहले पहुंचा ऐसे कहते हुये स्पर्द्धासे योद्धाओंके दौड़ने'** का १ नाम है ॥ ८—आहोपुरुषिका (स्त्री), **'अभिमानपूर्वक अपनेमें सामर्थ्यको प्रगट करने'** का १ नाम है ॥ ९—अहमहमिका (स्त्री), **'आपसमें अहङ्कार करने'** का १ नाम है ॥ १०—द्रविणम्, तरः (=तरस्) सहः (=सहस् । +सहः=सह पु, सहा स्त्री), बलम्,, शौर्यम्, स्थाम (=स्थामन्), शुष्मम् (+शुष्मा=शुष्मन्, पु न । ७ न), शक्तिः (स्त्री), पराक्रमः प्राणः (+आजः=ओजस्' ऊर्ज्जः=ऊर्ज्जस् । २ पु), **'पराक्रम बल'** के १० नाम हैं ॥ ११–विक्रमः (पु,) अतिशक्तिता (स्त्री,) **'अधिक बल'** के २ नाम हैं ॥ १२–वीरपानम् (+वीरपाणम् । न), **लड़ाईमें जानेके**

१ युद्धमायोधनं जन्यं प्रधनं प्रविदारणम् ॥ १०३ ॥
मृधमास्कन्दनं संख्यं समीकं सांपरायिकम् ।
अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ॥ १०४ ॥
संप्रहाराभिसंपातकलिसंस्फोटसंयुगाः ।
अभ्यामर्दसमाघातसंग्रामाभ्यागमाहवाः ॥ १०५ ॥
समुदायः स्त्रियः संयत्समित्याजिसमिद्युधः ।
२ नियुद्धं बाहुयुद्धे ३ऽथ तुमुलं रणसंकुले ॥ १०६ ॥
४ क्ष्वेडा तु सिंहनादः स्यात् ५ करिणां घटना घटा ।
६ क्रन्दनं योधसंरावो ७ बृंहितं करिगर्जितम् ॥ १०७ ॥
८ विस्फारो धनुषः स्वानः ९ पटहाडम्बरौ समौ ।
१० प्रसभं तु बलात्कारो हठो ११ऽथ स्खलितं छलम् ॥ १०८ ॥

समय या लड़ाई से लौटनेपर उत्साहको बढ़ानेके लिये मदिरादि-पान करने' का १ नाम है ॥ १—युद्धम्, आयोधनम्, जन्यम्, प्रधनम्, प्रविदारणम्, मृधम्, आस्कन्दनम्, संख्यम्, समीकम्, सांपरायिकम् (+ संपरायकम्, सांपरायिकः । १० न), समरः, अनीकः, रणः (३ पु न), कलहः, विग्रहः, संप्रहारः, अभिसंपातः, कलिः; संस्फोटः (+ संस्फेटः, संफेटः), संयुगः, अभ्यामर्दः (+ अभिमर्दः), समाघातः, संग्रामः, अभ्यागमः, आहवः, समुदायः (१३ पु) संयत् (+ पु), समिति, आजिः, समित्, युद् (= युध् । ५ स्त्री), 'लड़ाई युद्ध' के ३१ नाम हैं ॥ २—नियुद्धम्, बाहुयुद्धम् (२ न), 'कुस्ती दङ्गल' के २ नाम हैं ॥ ३—तुमुलम्, रणसंकुलम् (भा० दी० । २ न), 'खूब जमकर लड़ाई होने, या व्याकुल होने' के २ नाम हैं ॥ ४—क्ष्वेडा (× क्ष्वेला । (स्त्री), सिंहनादः (भा० दी०, पु), लड़ाई में सिंहके समान गर्जन' के २ नाम हैं ॥ ५—घटना (भा० दी०), घटा (२ स्त्री), 'हाथियोंके झुण्ड' के २ नाम हैं ॥ ६—क्रन्दनम् (न), योधसंरावः (भा० दी० पु), 'स्पर्द्धासे प्रतिपक्षवाले योद्धाओंको ललकारने या बुलाने' के २ नाम हैं ॥ ७—बृंहितम्, करिगर्जितम् (२ न), हाथियोंके गर्जने' के २ नाम हैं ॥ ८—विस्फारः (पु), 'धनुषके शब्द' का १ नाम है ॥ ९-पटहः, आडम्बरः (२ पु), 'नगारा या दमदमा' के २ नाम हैं ॥ १०—प्रसभम् (न), बलात्कारः, हठ (२ पु), जबर्दस्ती करने' के २ नाम हैं ॥ ११—स्खलितम्, छलम् (२ न), 'कपट करने'

१ अजन्यं क्लीबमुत्पात उपसर्गः समं त्रयम् ।
२ मूर्च्छा तु कश्मलं मोहोऽ३प्यवमर्दस्तु पीडनम् ॥ १०९ ॥
४ अभ्यवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं ५ विजयो जयः ।
६ वैरशुद्धिः प्रतीकारो वैरनिर्यातनं च सा ॥ ११० ॥
७ प्रद्रावोद्द्रावसंद्रावसंदावा विद्रवो द्रवः ।
अपक्रमोऽपयानं च ८ रणे भङ्गः पराजयः ॥ १११ ॥
९ पराजितपराभूतौ त्रिषु १० नष्टतिरोहितौ ।
११ प्रमापणं निबर्हणं निकारणं विशारणम् ॥ ११२ ॥
प्रवासनं परासनं निषूदनं निहिंसनम् ।

अर्थात् 'छलसे युद्धके नियमको तोड़ने' के २ नाम हैं ॥ १—अजन्यम् (न), उत्पातः, उपसर्गः (२ पु), 'उत्पात' के ३ नाम हैं ॥ २—मूर्च्छा (स्त्री), कश्मलम् (न), मोहः (पु), 'बेहोशी, मूर्च्छा' के ३ नाम हैं ॥ ३—अवमर्दः (पु), पीडनम् (न), 'अन्नादिसे परिपूर्ण देशको राजा के शत्रु द्वारा पीडित होने' के २ नाम हैं ॥ ४—अभ्यवस्कन्दनम् (+अवस्कन्दनम्) अभ्यासादनम् (+धाटिः, धाटी । २ न), भा० दी० के मतसे 'मारकर शक्तिहीन करने' के और महे० के मतसे 'छापा मारने' अर्थात् 'कपटसे एकाएक आक्रमण करने के २ नाम हैं । ("+सौप्तिकम् (न), 'रातमें छापा मारने' का १ नाम है") ॥ ५—विजयः, जयः (२ पु), 'जीतने' के २ नाम हैं ॥ ६—वैरशुद्धिः (स्त्री), प्रतीकारः (पु), वैरनिर्यातनम् (न), 'शत्रुताको दूर करने' के ३ नाम हैं ॥ ७—प्रद्रावः, उद्द्रावः, संद्रावः, संदावः, विद्रवः, द्रवः, अपक्रमः (७ पु), अपयानम् (न), 'लड़ाईमें पीठ दिखाने' (भागने)' के ८ नाम हैं ॥ ८—भङ्गः (भा० दी०), पराजयः (२ पु), 'हारने' के २ नाम हैं ॥ ९—पराजितः (+जितः), पराभूतः (+परिभूतः, अभिभूतः । २ त्रि), 'लड़ाईमें हारे हुए' के २ नाम हैं ॥ १०—नष्टः, तिरोहितः (२ त्रि), 'लड़ाईसे भागकर छिपे हुए' के २ नाम हैं ॥ ११-प्रमापणम्, निबर्हणम् (+निर्बर्हणम्), निकारणम्, विशारणम् (+विशरणम्, निशारणम्), प्रवासनम्, पराशनम्, निषूदनम् (+निसूदनम्), निहिंसनम्, निर्वासनम्, संज्ञपनम्, निर्ग्रन्थनम् (+निर्गन्धनम्), अपासनम्, निस्तर्हणम्, निहननम्, क्षणनम्, परिवर्जनम्, निर्वापणम्,

निर्वासनं संज्ञपनं निर्ग्रन्थनमपासनम् ॥ ११३ ॥
निस्तर्हणं निहननं क्षणनं परिवर्जनम्।
निर्वापणं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ॥ ११४ ॥
उद्वासनप्रमथनक्रथनोज्जासनानि च।
आलम्भपिञ्जविशरघातोन्माथवधा अपि ॥ ११५ ॥
१ 'व्यापादनं विशमनं कदनं च निशुम्भनम्' (२६)
२ स्यात्पञ्चता कालधर्मो दिष्टान्तः प्रलयोऽत्ययः।
अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युर्मरणं निधनोऽस्त्रियाम् ॥ ११ ॥
३ 'प्रमयोऽस्त्री दीर्घनिद्रा हिंसा संस्था प्रमीलनम्' (२)
४ परासुप्राप्तपञ्चत्वपरेतप्रेतसंस्थिताः।
मृतप्रमीतौ त्रिष्वेते ५ चिता चित्या चितिः स्त्रियाम् ॥ ११७ ॥
६ कबन्धोऽस्त्री क्रियायुक्तमपमूर्धकलेवरम्।
७ श्मशानं स्यात्पितृवनं ८ कुणपः शवमस्त्रियाम् ॥ ११८ ॥
९ प्रग्रहोपग्रहौ बन्द्यां—

विशसनम्, मारणम्, प्रतिघातनम् (× प्रविघातनम्), उद्वासनम्, प्रमथनम्, क्रथनम्, उज्जासनम् (२४ न), आलम्भः, पिञ्जः, विशरः, घातः, उन्माथः (× उन्मथः), वधः (६ पु), 'मारने' के ३० नाम हैं]॥ १—(व्यापादनम्, विशमनम्, कदनम्, निशुम्भनम् (४ न), 'मारने' के ४ नाम हैं] ॥ २—पञ्चता (× पञ्चत्वम् न। स्त्री), कालधर्मः (× कालः), दिष्टान्तः, प्रलयः, अत्ययः, अन्तः, नाशः (६ पु), मृत्युः (पु स्त्री), मरणम् (न), निधनः (पु न), मृत्यु' के १० नाम हैं ॥ ३—[प्रमयः (पु न), दीर्घनिद्रा, हिंसा, संस्था (३ स्त्री), प्रमीलनम् (न), 'मरने' के ५ नाम हैं] ॥ ४—परासुः प्राप्तपञ्चत्वः, परेतः, प्रेतः, संस्थितः, मृतः, प्रमीतः (• त्रि), 'मरे हुए' के ७ नाम हैं ॥ ५—चिता, चित्या चितिः (३ स्त्री), 'चिता' के ३ नाम हैं ॥ ६—कबन्धः (+रुण्डः। पु न), 'धड़, विना शिरके शरीर' का १ नाम है ॥ ७—श्मशानम्, पितृवनम् (+पितृकाननम्, प्रेतवनम्, करवीरम्। २ न),'श्मशान' के २ नाम हैं ॥ ८—कुणपः (पु), शवः (पु न), 'मुर्दे' के २ नाम हैं ॥ ९—प्रग्रहः, उपग्रहः (२

१ कारा स्याद्बन्धनालये ।
२ पुंसि भूम्न्यसवः प्राणाश्चैवं ३ जीवोऽसुधारणम् ॥ ११९ ॥
४ आयुर्जीवितकालो ना ५ जीवातुर्जीवनौषधम् ।

इति क्षत्रियवर्गः ॥ ८ ॥

९. अथ वैश्यवर्गः ।

६ ऊरव्या ऊरुजा अर्या वैश्या भूमिस्पृशो विशः ।
७ आजीवो जीविका वार्ता वृत्तिर्वर्तनजीवने ॥ १ ॥
स्त्रियां८ कृषिः पाशुपाल्यं वाणिज्यं चेति वृत्तयः ।
९ सेवा श्ववृत्ति १० रनृतं कृषिरु११ञ्छशिलं त्वृतम् ॥ २ ॥

पु), बन्दी (+वन्दी । स्त्री), महे० मतसे 'कैदी बँधुआ, गिरफ्तार' के और भा० दी० मतसे वन्दीगृह' (कोत, हवालात)' के ३ नाम हैं। (यहां महे० मत ठीक है") ॥ १—कारा (स्त्री), बन्धनालयम् (भा० दी०, न), 'जेल' के २ नाम हैं ॥ २ असवः (=असु), प्राणाः (२ पु नित्य ब० व०) 'प्राण' के २ नाम हैं ॥ ३—जीवः (पु), असुधारणम् (भा० दी०, न), 'जीने, प्राणको धारण करने' के २ नाम हैं ॥ ४—आयुः (=आयुष न), जीवितकालः (भा० दी०, पु), उम्र, आयु' के २ नाम हैं ॥ ५—जीवातुः (पु न), जीवनौषधम् (भा० दी०, न), 'जिलानेवाली दवा' के २ नाम हैं । (जैसे—लक्ष्मणजीके लिये संजीवनी बूटी,......") ॥

६—ऊरव्यः, ऊरुजः, अर्यः, वैश्यः, भूमिस्पृक् (=भूमिस्पृश्), विट् (=विश् । ६ पु)., 'वैश्य' के ६ नाम हैं ॥ ७—आजीवः (पु), जीविका, वार्ता, वृत्तिः (३ स्त्री), वर्तनम् (+वेतनम्), जीवनम् (२ न), 'जीविका' के ६ नाम हैं ॥ ८—कृषिः (स्त्री), पाशुपाल्यम् 'वाणिज्यम् (+वणिज्यम्, वणिज्या, कुसीदम् । २ न), 'खेती, पशुपालन और व्यापार' ये ३ 'वृत्तिः' (स्त्री), 'वैश्योंकी वृत्तियां' हैं ॥ ९—सेवा (भा० दी०), श्ववृत्तिः (२ स्त्री), 'सेवा' के २ नाम हैं ॥ १०—अनृतम् (+प्रमृतम् । भा० दी, न), कृषिः (स्त्री), 'खेती' के २ नाम हैं ॥ ११—उञ्छशिलम् (+उञ्छः, शिलम्, शिलोञ्छम्), ऋतम् (२ न), 'गृहस्थके खलिहान या खेतसे सब अन्न उठाकर ले जानेके बाद १-१ दाना चूंगने' (बिनने)' के २ नाम हैं ॥

१ द्वे याचितायाचितयोर्यथासङ्ख्यं मृतामृते।
२ सत्यानृतं वणिग्भावः स्यात् ३ ऋणं पर्युदञ्चनम्॥ ३॥
उद्धारोऽ४ऽर्थप्रयोगस्तु कुसीदं वृद्धिजीविका।
५ याच्ञयाऽऽप्तं याचितकं ६ निमयादापमित्यकम्॥ ४॥
७ उत्तमर्णाधमर्णौ द्वौ प्रयोक्तृग्राहकौ क्रमात्।
८ कुसीदिको वार्धुषिको वृद्ध्याजीवश्च वार्धुषिः॥ ५॥
९ क्षेत्राजीवः कर्षकश्च कृषिकश्च कृषीवलः।
१० क्षेत्रं वैहेयशालेयं व्रीहिशाल्युद्भवो हि यत्॥ ६॥
यव्यं यवक्यं षष्टिक्यं यवादिभवनं हि तत्।
११ तिल्यं तैलीनव१२न्माषोमाणुभङ्गा द्विरूपता॥ ७॥

१—मृतम्, अमृतम् (२ न), 'याचना करने पर और विना याचना किये मिली हुई वस्तु' का क्रमशः १-१ नाम हैं॥ २—सत्यानृतम् (भा० दी०, न), वणिग्भावः (+वाणिज्यम्, वणिज्यम्; वाणिज्या। पु), 'व्यापार' के २ नाम हैं॥ ३—ऋणम्, पर्युदञ्चनम् (२ न), उद्धारः (पु), 'कर्ज' के ३ नाम हैं॥ ४—अर्थप्रयोगः (पु), कुसीदम् (+कुषीदम्। न), कुशीदम् वृद्धिजीविका (स्त्री,) 'व्याज, सूद' के २ नाम हैं॥ ५—याचितकम् (न), 'याचना करने से मिले हुए' का १ नाम है॥ ६—आपमित्यकम् (न) बदलेमें मिले हुए का १ नाम है। ७—उत्तमर्णः, अधमर्णः (२ त्रि), 'कर्ज देनेवाले और लेनेवाले' का क्रमशः १-१ नाम है॥ ८—कुसीदकः (+कुशीदकः, कुषीदकः), वार्धुषिकः, वृद्ध्याजीवः, वार्धुषिः (+वार्धुषी=वार्धुषिन्। ४ त्रि), 'कर्ज देकर सूदसे जीविका चलाने वाले' के ४ नाम हैं॥ ९—क्षेत्राजीवः, कर्षकः (+कार्षकः), कृषिक, कृषीवलः (४ त्रि), 'किसान गृहस्थ' के ४ नाम हैं॥ १०—व्रैहेयम्, शालेयम, यव्यम्, यवक्यम्, षष्टिक्यम् (५ त्रि), 'व्रीहि' शाली (एक प्रकारका उत्तम धान), टूंड़वाला जौ, विना टूंड़वाला जौ, और साठी (साठ दिनमें तैयार होनेवाला धान-विशेष) के पैदा होने योग्य खेतों' का क्रमशः १-१ नाम है॥ ११—तिल्यम्, तैलीनम् (२ त्रि), 'तिलके पैदा होने योग्य खेत' के २ नाम हैं॥ १२—माषम्, माषीणम्; उम्यम्, औमीनम्; अणव्यम्, अणवीनम्; भङ्ग्यम्,

१ मौद्गीनकौद्रवीणादि शेषधान्योद्भवक्षमम् ।
२ 'शाकक्षेत्रादिके शाकशाकटं शाकशाकिनम्' (२८)
३ बीजाकृतं तूप्तकृष्टे ४ सीत्यं कृष्टं च हल्यवत् ॥ ८ ॥
५ त्रिगुणाकृतं तृतीयाकृतं त्रिहल्यं त्रिसीत्यमपि तस्मिन् ।
६ द्विगुणाकृते तु सर्वं पूर्वं शम्बाकृतमपीह ॥ ९ ॥
७ द्रोणाढकादिवापादौ द्रौणिकाढकिकादयः ।
८ खारीवापस्तु खारीक ९ उत्तमर्णादयस्त्रिषु ॥ १० ॥
१० पुन्नपुंसकयोर्वप्रः केदारः क्षेत्रमस्य तु ।

भङ्गीनम् (८ त्रि), 'उड़द, तिसी' (अलसी), चीना, और सनई के पैदा होनेयोग खेत' के क्रमशः २-२ नाम हैं ॥ १—मौद्गीनम्, कौद्रवीणम् (२ त्रि), आदि (+गौधूमीनम्, कालायीनम्, कौलत्थीनम्, प्रैयङ्गवीणम्, चाणकीनम् (५ त्रि),……), मूंग और कोदो आदि (गेंहू, मटर, कुलथी, चीना और चना,…) के पैदा होने योग्य खेत, का क्रमशः १-१ नाम है ॥ २—[शाकशाकटम्, शाकशाकिनम् (२ त्रि), साग पैदा होने योग्य खेत आदि (देश, स्थान, समय आदि)' के २ नाम हैं ॥ ३—बीजाकृतम्, उप्तकृष्टम् (भा० दी० । २ त्रि,) 'बीज बोनेके बाद हलसे जोते हुए खेत' के २ नाम हैं ॥ ४—सीत्यम् (+शीत्यम्), कृष्टम्, हल्यम् (३ त्रि), 'जोते हुए खेत' के ३ नाम हैं ॥ ५—त्रिगुणाकृतम्, तृतीयाकृतम्, त्रिहल्यम्, त्रिसीत्यम् (+त्रिशीत्यम् ४त्रि), 'तीन बार जोते हुए खेत' के ४ नाम हैं ॥ ६—द्विगुणाकृतम्, द्वितीयाकृतम्, द्विहल्यम्, द्विसीत्यम् (+द्विशीत्यम्), शम्बाकृतम् (५ त्रि), 'दो बार जोते हुए खेत' के ५ नाम हैं । ("किसी के मतसे 'शम्बाकृतम्' यह १ नाम 'अच्छी तरह सीधा जोतनेके बाद तिर्छा जोते हुए खेत' का है") ॥ ७—द्रौणिकः, आढकिकः (२ त्रि), आदि (प्रस्थिकः, काडविकः; २ त्रि), 'एक द्रोण और एक आढक आदि (एक प्रस्थ (सेर) एक कुडव (छटाक आदि) बोने आदिके योग्य खेत आदि (उतना पकाने या रखने योग्य बर्तन या उतना खाने योग्य मनुष्यादि,………)' का क्रमशः १-१ नाम है ॥ ८—खारीकः (त्रि), 'एक खारी बोनेके योग्य खेत' का १ नाम है ॥ ९—'उत्तमर्ण' (श्लो० ५) शब्दसे यहां तक सब त्रिलिङ्ग हैं ॥ १०—वप्रः (पु न),

१ कैदारकं स्यात्कैदार्यं क्षैत्रं कैदारिकं गणे ॥ ११ ॥
२ लोष्टानि लेष्टवः पुंसि ३ कोटिशो लोष्टभेदनः ।
४ प्राजनं तोदनं तोत्त्रं ५ खनित्रमवदारणे ॥ १२ ॥
६ दात्रं लवित्र ७मबन्धो योत्रं योक्त्रं ८ मथो फलम् ।
निरीशं कुटकं फालः कृषको ९ लाङ्गलं हलम् ॥ १३ ॥
गोदारणं च शीरो१०ऽथ शम्या स्त्री युगकीलकः ।
११ ईषा लाङ्गलदण्डः स्यात् १२ सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ १४ ॥
१३ पुंसि मेधिः खले दारु न्यस्तं यत्पशुबन्धने ।

केदारः (पु), क्षेत्रम् (न), 'खेत' के ३ नाम हैं ॥ १—कैदारकम् (+कैदारम्), कैदार्यम्, क्षैत्रम् (+क्षेत्रम् मही०), कैदारिकम् (४ न), 'खेतोंके समूह' के ४ नाम हैं ॥ २—लोष्टम् (न ।...पु), लेष्टुः (पु), 'ढेला' के २ नाम हैं ॥ ३—कोटिशः (+कोटीशः), लोष्टभेदनः (२ पु),'ढेलोंको फोड़ने वाली मुंगरी या हेंगा' के २ नाम हैं ॥ ४—प्राजनम् (+प्रवयणम्), तोदनम्, तोत्त्रम् (३ न), 'चाबुक पाना' के ३ नाम हैं ॥ ५—खनित्रम्, अवदारणम् (२ न), 'खन्ता' अर्थात् 'कुदाल, फरसा, रामा, गैंता आदि जमीन खोदनेवाले हथियार' के २ नाम हैं ॥ ६—दात्रम्, लवित्रम् (२ न), 'हँसुआ' के २ नाम हैं ॥ ७—आबन्धः-(पु), योत्रम्, योक्त्रम् (२ न), 'जोती, जोता' अर्थात् 'जुआमें बांधी जानेवाली रस्सी' के ३ नाम हैं ॥ ८—फलम्, निरीशम् (+निरीषम्), कुटकम् (+कूटकम् । ३ न), फालः (+फलम्), कृषकः (+कृषिकः पु; कृषिका स्त्री । २ पु), 'फार' के ५ नाम हैं । ("किसीके मतसे प्रथमवाले ३ नाम जिसमें फारको गाड़ा जात हैं उस काष्ठ के और अन्तवाले २ नाम उक्तार्थक हैं") ॥ ९—लाङ्गलम्, हलम् (+हालः), गोदारणम् (३ न), सीरः (+शीरः । पु), 'हल' के ४ नाम हैं ॥ १०-शम्या (स्त्री),युगकीलकः (पु), 'सइला, जुआठको कील' के २ नाम हैं ॥ ११—ईषा (+ईशा । स्त्री), लाङ्गलदण्डः (भा०दी०पु) 'हरिस' के २ नाम है ॥ १२-सीता (+शीता), लाङ्गलपद्धतिः (भा० दी० । २ स्त्री), 'हराई' अर्थात् 'हलके चलानेसे पड़ी हुई लकीर'के २ नाम हैं । १३-मेधिः (×मेथिः । पु), खलेदारु (भा० दी०, पु न) 'मेह' अर्थात् 'दवनी करनेके

१ आशुर्व्रीहिः पाटलः स्यात् २ शितशूकयवौ समौ ॥ १५ ॥
३ तोक्मस्तु तत्र हरिते ४ कलायस्तु सतीनकः ।
हरेणुखण्डिकौ चास्मिन् ५ कोरदूषस्तु कोद्रवः ॥ १६ ॥
६ मङ्गल्यको मसूरोऽथ मकुष्टकमयुष्टकौ ।
वनमुद्गे ८ सर्षपे तु द्वौ तन्तुभकदम्बकौ ॥ १७ ॥
९ सिद्धार्थस्त्वेष धवलो १० गोधूमः सुमनः समौ ।
११ स्याद्यावकस्तु कुल्माष१२श्चणको हरिमन्थकः ॥ १८ ॥
१३ द्वौ तिले तिलपेजश्च तिलपिञ्जश्च निष्फले ।
१४ क्षवः क्षुताभिजननो राजिका कृष्णिकासुरी ॥ १९ ॥

समय बैलोंके रस्सी' बांधे जानेवाले बड़े खूंटे' के २ नाम हैं ॥ १—आशुः (+न), व्रीहिः (+आशुव्रीहिः पु), पाटलः (+पाटलिः । ३ पु), **'साठी'** अर्थात् 'साठ दिनमें तैयार होनेवाले धान' के ३ नाम हैं ॥ २—शितशूकः (+सितशूकः) यवः (२ पु), **'जौ'** के २ नाम हैं ॥ ३—तोक्मः (पु), **'हरे जौ'** का १ नाम, हैं ॥ ४—कलायः, सतीनकः (+सातीनकः), हरेणुः, खण्डिकः (४ पु), **'मटर, कबिली'** के ४ नाम हैं ॥ ५ कोरदूषः, कोद्रवः (+काद्रवः । २ पु), **'कोदो'** के २ नाम हैं ॥ ६—मङ्गल्यकः, मसूरः (+मसुरः, मसूरा मसुराः २ स्त्री । २ पु), **'मसूर'** के २ नाम हैं ॥ ७—मकुष्टकः (+मकुष्टकः, मकुष्ठः, मुकुष्टः मकूष्टकः मुकुष्टकः, मयुष्टकः।(+मयुष्टकः मयष्ठकः, मपष्ठकः, मपष्टः, मपुष्ठकः मपुष्टः), वनमुद्गः (३ पु), **'वनमूंग या मोट नामक अन्न-विशेष'** के ३ नाम हैं ॥ ८—सर्षपः (+सरिषपः), तन्तुभः (+तुन्तुभः), कदम्बकः (३ पु), **'सरसो'** के ३ नाम हैं ॥ ९-सिद्धार्थः (+रक्षोघ्नः, भूतनाशनः । पु), **'सफेद सरसों'** का १ नाम हैं ॥ १०—गोधूमः, सुमनः((२ पु)' **'गेहूं'** के २ नाम हैं ॥ ११-यावकः, कुल्माषः (+कुल्मासः । २ पु), **'अधसूखे जौ'** के और रक्षितके मतसे **'विना टूंड़वाले जौ'** के नाम हैं ॥ १२—चणकः, हरिमन्थकः (+हरिमन्थः, हरिमन्थजः । २ पु), **'चना'** के २ नाम हैं ॥ १३—तिलपेजः, तिलपिञ्जः (+जर्तिलः । २ पु), **'विना तेलवाली तिल'** के २ नाम हैं ॥ १४-क्षवः, क्षुताभिजननः (+क्षुधाभिजननः । २ पु), राजिका, कृष्णिका (+कृष्णका), आसुरी

१ स्त्रियौ कङ्गुप्रियङ्गू द्वे २ अतसी स्यादुमा क्षुमा ।
३ मातुलानी तु भङ्गायां ४व्रीहिभेदस्त्वणुः पुमान् ॥ २० ॥
५ किंशारुः सस्यशूकं स्यात् ६ कणिशं सस्यमञ्जरी ।
७ धान्यं व्रीहिः स्तम्बकरिः ८ स्तम्बो गुच्छस्तृणादिनः ॥२१॥
९ नाडी नालञ्च काण्डोऽस्य १० पललोऽस्त्री स निष्फलः ।
११ कडङ्गरो बुसं क्लीबे १२ धान्यत्वचि तुषः पुमान् ॥ २२ ॥
१३ शूकोऽस्त्री श्लक्ष्णतीक्ष्णाग्रे १४ शमी शिम्बा १५ त्रिपूत्तरे ।

(+सुरी, असुरी । ३ स्त्री), 'राई, काला सरसो' के ५ नाम हैं ॥ १—कङ्गुः (+कङ्गुः, कङ्गु, कङ्गूः), प्रियङ्गुः (२ स्त्री), 'ककुनी' अर्थात् 'टांगुन' के २ नाम हैं ॥ २—अतसी, उमा, क्षुमा (३ स्त्री), 'तीसी, अलसी' के ३ नाम हैं ॥ ३—मातुलानी, भङ्गा (२ स्त्री), 'शनई' के २ नाम हैं ॥ ४—अणुः (पु), 'चीना' का १ नाम है ॥ ५—किंशारुः (पु), सस्यशूकम् (+शस्यशूकम् । भा० दी०, न । + पु सुकु०), 'टूँड़' के २ नाम हैं ॥ ६—कणिशम् (+कणिषम् । न । + पु), सस्यमञ्जरी (+शस्यमञ्जरी । भा० दी० स्त्री), 'धान आदिके बाल' के २ नाम हैं ॥ ७—धान्यम् (न), व्रीहिः, स्तम्बकरिः (२ भा० दी० । २ पु), 'धान्यमात्र' के ३ नाम हैं । ("धान्य सत्रह प्रकारके होते हैं") । ८—स्तम्बः, गुच्छः (भा० दी० । २ पु), 'तृण यवादिके गुच्छे' के २ नाम हैं । ९—नाडी (स्त्री), नालम् (न), 'यवादिके डण्ठल' के २ नाम हैं । १०-पलालः (पु न), 'पुआर' का १ नाम है । ११-कडङ्गरः (+कडङ्करः । पु), बुसम् (+बुषम् । न), 'पुआर आदिके भूंसे' के २ नाम हैं । १२—धान्यत्वक् (=धान्यत्वच् , भा० दी०, स्त्री), तुषः (पु), 'धानके भूंसे' के २ नाम हैं । १३-शूकः (पु न), 'धान्य या तृण आदिके चिकने और नुकीले टूंड़ आदि' का १ नाम है । ("धान्य-तृणसे पृथक् बिच्छू आदिके डङ्का भी यह वाचक है अत एव इसका किंशारु (श्लो० २१ में उक्त) शब्दसे अलग निर्देश है") । १४—शमी (+शमिः), शिम्बा (+शिम्बिः, शिम्बी, सिम्बा, शिम्बिः, सिम्बी । २ स्त्री), 'छीमी, फली' अर्थात् 'मटर, केराव आदिका ढेंढी' के २ नाम हैं । १५—ऋद्धम् (+रिद्धम्), आवसितम् (+अवसितम् । २ त्रि), 'हवा में ओसा कर इकट्ठा करने योग्य धान आदि अन्न' के

अकृताबसितं धान्यं १ पूतं तु बहुलीकृतम् ॥ २३ ॥
२ माषादयः शमीधान्ये ३ शूकधान्ये यवादयः ।
४ शालयः कलमाद्याश्च षष्टिकाद्याश्च पुंस्यमी ॥ २४ ॥
५ तृणधान्यानि नीवाराः ६ स्त्री गवेधुर्गवेधुका ।
७ अयोग्रं मुसलोऽस्त्री ८ स्यादुदूखलमुलूखलम् ॥ २५ ॥
९ प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री १० चालनी तितउः पुमान् ।
११ स्यूतप्रसेवौ १२ कण्डोलपिटौ १३ कटकिलिञ्जकौ ॥ २६ ॥
समानौ १४ रसवत्यां तु पाकस्थानमहानसे ।
१५ पौरोगवस्तदध्यक्षः १६ सूपकारास्तु वल्लवाः ॥ २७ ॥

---

२ नाम हैं । १—पूतम् , बहुलीकृतम् (२ त्रि), 'बिना ओसाये हुये धान आदि अन्नकी राशि' के २ नाम हैं । २—शमीधान्यम् (न), 'उड़द आदि (मसूर, मूंग ...) अन्नका १ नाम है । ३—शूकधान्यम् (न) 'जौ' आदि (गेहूं, धान, ...) अन्न' का १ नाम है । ४—शालिः (पु), 'कलम (जड़हन धान), साठी आदि धान' का १ नाम है । ५—तृणधान्यम् (न), 'तीनी, सांवा, कोदो, आदि' का १ नाम है । ६—गवेधुः (+ गवेडुः मुकु०), गवेधुका (२ स्त्री), 'मुनियोंके अन्नविशेष' के २ नाम हैं । ७—अयोग्रम् (+ अयोनिः), मुसलः (२ पु न), 'मुसल' के २ नाम हैं । ८—उदूखलम् , उलूखलम् (२ न), 'ओखली' के २ नाम हैं । ९—प्रस्फोटनम् (न), शूर्पम् (...सूर्पम् । पु न), 'सूप' के २ नाम हैं । १० –चालनी (स्त्री । + चालनम् न), तितउः (पु । + न), 'चालनी' के २ नाम हैं । ११—स्यूतः (+ स्योनः मुकु०), प्रसेवः (२ पु), बोरा, या कपड़े आदि के थैले' के २ नाम हैं । १२–कण्डोलः, पिटः (+ पिटकः; पिण्डः क्षी० स्वा० । २ पु), बांस या बेंत आदिके बने हुए दौरी, डाली, ओड़ा आदि' के २ नाम हैं । १३—कटः, किलिञ्जकः (२ पु) 'बांसकी बनी हुई झांपी आदि' के २ नाम हैं । १४–रसवती (स्त्री), पाकस्थानम् , महानसम् (२ न), 'रसोईका घर, पाकशाला' के ३ नाम हैं । १५–पौरोगवः (त्रि), 'पाकशालाके मालिक' का १ नाम है । १६–सूपकारः, वल्लवः (२ त्रि), क्षी० स्वा० के मतसे 'व्यञ्जन' (तरकारी, कढ़ी आदि)

१ आरालिका आन्धसिकाः सूदा औदनिका गुणाः।
२ आपूपिकः कान्दविको भक्ष्यकार ३ इमे त्रिषु ॥ २८ ॥
४ अश्मन्तमुद्धानमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका।
५ अङ्गारधानिकाङ्गारशकट्यपि हसन्त्यपि ॥ २९ ॥
हसन्यप्यथ ६ न स्त्री स्यादङ्गारोऽलातमुल्मुकम्।
७ क्लीबेऽम्बरीषं भ्राष्ट्रो ना ८ कन्दुर्वा स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ३० ॥
९ अलिञ्जरः स्यान्माणकः १० कर्कर्यालुर्गलन्तिका।
११ पिठरः स्थाल्युखा कुण्डं १२ कलशस्तु त्रिषु द्वयोः ॥ ३१ ॥

बनानेवाले रसोइयादार' के २ नाम हैं। १—अरालिकः' आन्धसिकः, सूदः औदनिकः, गुणः (५ त्रि), क्षी० स्वा० के मतसे 'रसोइयादार' के पाँच नाम हैं। भी. दी. महे. आदिके मतसे 'सूपकारः' आदि सात नाम 'रसोइदार' के ही हैं। २—आपूपिकः, कान्दविकः, भक्ष्यकारः (+ भक्षकारः, भक्ष्यङ्कारः। ३ त्रि), पुआ, पूड़ी, कचौड़ी आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं। ३—'पौरोगव' (श्लो० २७) शब्दसे यहां तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं। ४—अश्मन्तम् (+ अश्म-न्तः, पु), उद्धानम् (+ उध्मानम्, उद्दानम्, उद्धारम्। २ न), अधिश्रयणी, चुल्लिः (+ चुल्ली), अन्तिका (+ अन्दिका, अन्ती। ३ स्त्री), 'चुल्हो' के ५ नाम हैं। ५—अङ्गारधानिका (+ अङ्गारधानी, अङ्गारपात्री), अङ्गार-शकटी, हसन्ती (+ हसन्तिका), हसनी (४ स्त्री), बोरसी अंगीठी' के ४ नाम हैं। ६—अङ्गारः (पु न), अलातम्, उल्मुकम् (२ न), भा० दी० के मत-से 'अङ्गार' के ३ नाम हैं। तथा मुकु० और महे० के मतसे पहला नाम 'अङ्गार' का और अन्तवाले दो नाम 'लुआठ' के हैं। ७—अम्बरीषम् (न। + पु), भ्राष्ट्रः (पु), 'खापर' अर्थात् 'चना आदिको भूंजनेके वर्तन 'या भंसार' के २ नाम हैं। ८—कन्दुः (+ कन्दूः। पु स्त्री), स्वेदनी (स्त्री); 'मदिरा बनाने के बर्तन या भट्टी' के २ नाम हैं। ९—अलिञ्जरः (+ अलञ्जरः) मणिकः (२ पु), 'कुण्डा भाँड़' के २ नाम हैं। १०—कर्करी, आलुः (+ आलूः), गलन्तिका (+ गलन्ती। ३ स्त्री), 'गडुआ, हथहर या भंभरा' के ३ नाम हैं। ११—पिठरः (पु। + न) स्थाली, उखा (+ उषा। २ स्त्री), कुण्डम् (न), 'तसला, बटुआ' के ४ नाम हैं। १२—कलशः (+ कलसः। त्रि), घटः (पु स्त्री), कुटः,

घटः कुटनिपा१ वस्त्रो शरावो वर्धमानकः ।
२ ऋजीषं पिष्टपचनं ३ कंसोऽस्त्री पानभाजनम् ॥ ३२ ॥
४ कुतूः कृत्तेः स्नेहपात्रं ५ सैवाल्पा कुतुपः पुमान् ।
६ सर्वमावपनं भाण्डं पात्रामत्रं च भाजनम् ॥ ३३ ॥
७ दर्विः कम्बिः खजाका च ८ स्यात्तर्दूर्दारुहस्तकः ।
९ अस्त्री शाकं हरितकं शिग्रु १० रस्य तु नाडिका ॥ ३४ ॥
कलम्बश्च कडम्बश्च ११ वेसवार उपस्करः ।
१२ तिन्तिडीकं च चुक्रं च वृक्षाम्ल१३मथ वेल्लजम् ॥ ३५ ॥
मरीचं कोलकं कृष्णमूषणं धर्मपत्तनम् ।

निवापः (२ पु न), 'घड़े' के ४ नाम हैं। १—शरावः (+सरावः । पु न), वर्द्ध-मानकः (पु) 'ढकना कसोरा' के ३ नाम हैं। २—ऋजीषम् (+ऋचीषम्), पिष्टपचनम् (२ न), 'तावा' के २ नाम हैं। ३—कंसः (पु न), पानभाजनम् (+कोशिका, पारी, मल्लिका, चषकः । न), 'दूध आदि पीनेका प्याला, ग्लास आदि' के २ नाम हैं। ४—कुतूः (स्त्री), स्नेहपात्रम् (भा० दी०, न), 'कुप्पा' अर्थात् 'तेल रखने के लिये चमड़ेके बने हुए बड़े बर्तन' के २ नाम हैं, ५—कुतुपः (पु) 'कुप्पी' अर्थात् 'तेल रखनेके लिये चमड़ेके बने हुए छोटे बर्तन' का १ नाम है। ६—आवपनम्, भाण्डम्, पात्रम्, अमत्रम्, भाजनम् (५ न), 'बर्तन' के ५ नाम हैं। ७—दर्विः (+दर्वी), कम्बिः (+कम्बी), खजाका (३ स्त्री), 'कलछुल' के ३ नाम हैं। ८—तर्दूः (×तन्दूः । स्त्री), दारुहस्तकः (पु) 'डब्बू' अर्थात् 'भात-दाल आदि परोसनेके उपयोगी बर्तन' के २ नाम हैं। ९—शाकम् (न पु), हरितकम् (न), शिग्रुः (पु), 'भाजो, साग' के ३ नाम हैं। १०—नालिका (+नाली । मुकु० स्त्री) कलम्बः, कडम्बः (पु), 'सागके डंठल' के ३ नाम हैं। ११—वेसवारः (+वेषवारः), उपस्करः (२ पु), 'छौंक देनेके लिये जीरा आदि फोरन या मसाला' के २ नाम हैं। १२—तीन्तिडीकम् (+तितिडीकम्), चुक्रम्, वृक्षाम्लम् (+वृक्षाम्ब्लम् । ३ न), 'चूक अम-चुर' के ३ नाम हैं। १३—वेल्लजम्, मरीचम् (+मरिचम्), कोलकम्, कृष्णम्, ऊषणम्, (+उषणम्), धर्मपत्तनम् (+धार्मपत्तनम् । ६ न), 'मिर्च' के ६ नाम

१ जीरको जरणोऽजाजी कणा २ कृष्णे तु जीरके ॥ ३६ ॥
सुषवी कारवी पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चिका।
३ आर्द्रकं शृङ्गवेरं स्यादथ ४ छत्रा वितुन्नकम् ॥ ३७ ॥
कुस्तुम्बुरु च धान्याक५मथ शुण्ठी महौषधम्।
स्त्रीनपुंसकयोर्विश्वं नागरं विश्वभेषजम् ॥ ३८ ॥
६ आरनालकसौवीरकुल्माषाभिषुतानि च।
अवन्तिसोमधान्याम्लकुञ्जलानि च काञ्जिके ॥ ३९ ॥
७ सहस्रवेधि जतुकं बाह्लीकं हिङ्गु रामठम्।
८ त्वक्पत्री कारवी पृथ्वी बाष्पिका कवरी पृथुः ॥ ४० ॥
९ निशाख्या काञ्चनी पीता हरिद्रा वरवर्णिनी।
१० सामुद्रं यत्तु लवणमक्षीवं वशिरं च तत् ॥ ४१ ॥

हैं। १—जीरकः, जरणः (२ पु), आजाजी, कणा (२ स्त्री), 'सफेद जीरा' के ४ नाम हैं। २—सुषवी, कारवी, पृथ्वी (× पृथ्वीका), पृथुः, काला, (+ कालिका, उपकालिका), उपकुञ्चिका (+ कुञ्चिका, कुञ्ची। ६ स्त्री) 'काला जीरा' के ६ नाम हैं। ३—आर्द्रकम्, शृंगवेरम् (२ न), 'अदरख, आदी' के दो नाम हैं। ४—छत्रा (स्त्री), वितुन्नकम्, कुस्तुम्बुरु (+ कुस्तुम्बुरी), धान्याकम् (+ धन्याकम्, धान्यकम्, धन्यम्, धनीयकम्, धनेयकम्, धन्या। ३ न), "धनियां' के ४ नाम हैं। ५—शुण्ठी (+ शुण्ठिः। स्त्री), महौषधम्, विश्वम् (न स्त्री), नागरम्, विश्वभेषजम् (शेष न), 'सोंठ' के ५ नाम हैं। ६—आरनालकम् (+ आरनालम्) सौवीरम्, कुल्माषम्, अभिषुतम् (+ कुल्माषाभिषुतम्), अवन्तिसोमम्, धान्याम्लम् (+ धान्याम्ब्लम्), कुञ्जलम्, काञ्जिकम् (+ काञ्चिकम्। ८ न), 'कांजी' के ८ नाम हैं। ७—सहस्रवेधि (=सहस्रवेधिन्), जतुकम्, बाह्लीकम् (+ बह्लिकम्), हिङ्गु, रामठम् (५ न), 'हींग' के ५ नाम हैं। ८—+ त्वक्पत्री, कारवी, पृथ्वी, बाष्पिका (+ वाष्पीका), कवरी (+ कर्वरी) पृथुः (६ स्त्री), 'हींगके पेड़ के पत्ते' के ६ नाम हैं। ९—निशाख्या (+ 'निशा' अर्थात् रातके वाचक सब नाम), काञ्चनी, पीता, हरिद्रा, वरवर्णिनी (५ स्त्री), 'हल्दी' के ५ नाम हैं। १०—अक्षीवम् (+ अक्षि-

१ सैन्धवोऽस्त्री शीतशिवं माणिमन्थं च सिन्धुजे ।
२ रौमकं वसुकं ३ पाक्यं विडं च कृतके द्वयम् ॥ ४२ ॥
४ सौवर्चलेऽक्षरुचके ५ तिलकं तत्र मेचके ।
६ मत्स्यण्डी फाणितं ७ खण्डविकारः शर्करा सिता ॥ ४३ ॥
८ कूर्चिका क्षीरविकृतिः स्याद्रसाला तु मार्जिता ।
१० स्यात्तेमनं तु निष्ठानं ११ त्रिलिङ्गा वासितावधेः ॥ ४४ ॥
१२ शूलाकृतं भटित्रं स्याच्छूल्य१३मुख्यं तु पैठरम् ।
१४ संस्कृतं सर्पिषा दध्ना सार्पिष्कं दाधिकं क्रमात् (२९)

वम्), वशिरम् (+ वसिरम्) 'समुद्री नमक' के २ नाम हैं । १—सैन्धवः (पु न), शीतशिवम् (+ सितशिवम्), माणिमन्थम् (+ माणिबन्धम्), सिन्धुजम् (३ न), 'सेंधा नमक, या सिन्धुदेशमें पैदा होने वाले नमक' के ४ नाम है । २—रौमकम् , वसुकम् (+ वस्तकम् । २ न), 'सांभर नमक' के २ नाम हैं । ३—पाक्यम् , विडम् (+ विडम् । २ न), 'खारा नमक या खरिया नमक' के २ नाम है । ४—सौवर्चलम् , अक्षम् , रुचकम् (३ न), 'सोचर नमक' के २ नाम हैं । ५—तिलकम् (न), 'काला नमक' का १ नाम है । ६—मत्स्यण्डी (स्त्री), फाणितम् (न) 'राब' के २ नाम हैं । ७—खण्डविकारः (पु), शर्करा सिता (२ स्त्री), 'मिश्री चीनी शक्कर' के ३ नाम हैं । ("भा०दी० मतसे 'मत्स्यण्डी,······'३ नाम राब' के और 'शर्करा सिता' ये २ नाम 'चीनी आदि' के हैं । अन्याचार्यों के मतमें 'मत्स्यण्डी, ······' ५ नाम एकार्थक हैं'') । ८—कूर्चिका, क्षीरविकृतिः (भा० दी० । + किलाटी । २ स्त्री), 'मावा खोवा' के २ नाम हैं । ९—रसाला, मार्जिता (+ शिखरिणी । २ स्त्री), 'दही खांड़' (चीनी), घी, मिर्च और सोंठसे बनाई हुई चटनी' के २ नाम हैं । १०—तेमनम् , निष्ठानम् (२ न), 'दही-वारा, कढ़ी आदि' के २ नाम हैं । ११—यहांसे आगे 'वासित' (श्लो० ४६) शब्द तक सब शब्द त्रिलिङ्ग हैं । १२-शूलाकृतम् , भटित्रम् , शूल्यम् (३ त्रि), 'लोहेके छड़से पकाये हुए मांस' के ३ नाम हैं। १३—उख्यम् , पैठरम् (२ त्रि), 'बटुएमें पकाये हुए भात आदि' के २ नाम हैं । १४—[सार्पिष्कम् , दाधिकम् (२ त्रि), 'घी और दहीमें बनाये हुए पदार्थ' का क्रमशः १-१

१ तक्रं ह्युदश्विन्मथितं पादाम्ब्वर्धाम्बु निर्जलम् ॥ ५३ ॥
२ मण्डं दधिभवं मस्तु ३ पीयूषोऽभिनवं पयः ।
४ अशनाया बुभुक्षा क्षुद् ५ ग्रासस्तु कवलः पुमान् ॥ ५४ ॥
६ सपीतिः स्त्री तुल्यपानं ७ सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
८ उदन्या तु पिपासा तृट् तर्षो ९ जग्धिस्तु भोजनम् ॥ ५५ ॥
जेमनं लेह आहारो निघासो न्याद इत्यपि ।
१० सौहित्यं तर्पणं तृप्तिः ११ फेला भुक्तसमुज्झितम् ॥ ५६ ॥
१२ कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् ।

'मन्थनीसे महे (मथन किये) हुए गोरस' के ३ नाम हैं । १—तक्रम्, उदश्वित (+उदश्वितम्), मथितम् (३ न), 'चौथाई पानी, आधा पानी और बिना पानीवाले दही' का क्रमशः १—१ नाम है । ("धन्व-न्तरिने 'दुगुने पानीवाले दहीका 'श्वेतरसम्' आधे पानीवाले दहीका 'उदश्वित-तम्' तिहाई पानीवाले दहीका 'तक्रम्' और बिना पानीवाले दहीका 'मथि-तम्' नाम है' ऐसा कहा है) । २—मस्तु (न), भा० दी० के मतसे 'कपड़ेमें बांधकर निकाले हुए दहीके पानी' का और महे० के मतसे 'दहीकी छाल्ही (जमे हुए दहीके ऊपरी भाग), का १ नाम है । ३—पीयूषः (+पेयू-षम् । पु । +न), 'थोड़े दिनकी या सात दिन तककी व्याई हुई गायके दूध' अर्थात् 'फेनुस' का १ नाम है । ४—अशनाया, बभुक्षा, क्षुत (=क्षुध् । +क्षुधा, प्सा । ३ स्त्री), 'भूख' के ३ नाम हैं । ५—ग्रासः, कवलः (२ पु), 'ग्रास, कौर' के २ नाम हैं । ६—सपीतिः (स्त्री), तुल्यपानम् (न), 'साथमें पान करने' के २ नाम हैं । ७—सग्धिः (स्त्री) सहभोजनम् (न), 'साथमें भोजन करने' के २ नाम हैं । ८—उदन्या, पिपासा, तृट (=तृष् । +तृषा, तृष्णा । ३ स्त्री), तर्षः (पु) 'प्यास' के ४ नाम हैं । ९—जग्धिः (स्त्री), भोजनम्, जेमनम् (जमनम्, जवनम् २ न), लेहः (+लेपः), आहारः, निघासः (+निघसः), न्यादः (+अभ्यवहारः पु, प्रत्यवसानम्, खादनम्, अशनम्, भक्षणम् । ४ पु), 'भोजन' के ७ नाम हैं । १०—सौहित्यम्, तर्पणम् (२ न), तृप्तिः (स्त्री), 'तृप्ति, अघाने' के ३ नाम हैं । ११—फेला (+फेली, पिण्डोलिः स्त्री), भुक्तसमुज्झितम् (न), 'खाकर छोड़े हुए जूठे' के २ नाम हैं । १२—कामम्, प्रकामम्, पर्याप्तम्, निकामम्, इष्टम्, यथेप्सितम् (६ क्रियाविशे-

१ गोपे गोपालगोसङ्ख्यगोधुगाभीरवल्लवाः ॥ ५७ ॥
२ गोमहिष्यादिकं पादबन्धनं ३ द्वौ गवीश्वरे ।
गोमान्गोमी ४ गोकुलं तु गोधनं स्याद्गवां व्रजे ॥ ५८ ॥
५ त्रिष्वाशितङ्गवीनं तद्गावो यत्राशिताः पुरा ।
६ उक्षा भद्रो बलीवर्द ऋषभो वृषभो वृषः ॥ ५९ ॥
अनड्वान्सौरभेयो गौ७रुक्ष्णां संहतिरौक्षकम् ।
८ गव्या गोत्रा गवां ९ वत्सधेन्वोर्वात्सकधैनुके ॥ ६० ॥
१० वृषो महान्महोक्षः स्याद् ११ वृद्धोक्षस्तु जरद्गवः ।
१२ उत्पन्न उक्षा जातोक्षः १३ सद्यो जातस्तु तर्णकः ॥ ६१ ॥
१४ शकृत्करिस्तु वत्सः स्या१५द्दम्यवत्सतरौ समौ ।

पण), 'इच्छानुसार, काफी, मतलबभर' के ६ नाम हैं । १—गोपः, गोपालः गोसंख्यः, गोधुक् (=गोदुह् । + गोदुहः), आभीरः (+अभीरः), बल्लवः (६ पु), 'अहीर, ग्वाला' के ६ नाम हैं । २—पादबन्धनम् (न), 'गाय, भैंस, घोड़े, गदहे, आदि बांधे जाने वाले पशुओं' का १ नाम है । ३—गवीश्वरः, गोमान् (=गोमत्), गोमी (=गोमिन् । ३ पु), 'सां.' के ३ नाम हैं । ४—गोकुलम्, गोधनम् (२ न), 'गौओंके झुण्ड' के २ नाम हैं । ५—आशितङ्गवीनम् (त्रि), 'गौओंके चराने या खिलानेके पुराने स्थान' का १ नाम है । ६—उक्षा (=उक्षन्), भद्रः, बलीवर्दः (+बरीवर्दः, बलीवर्दः), ऋषभः, वृषभः, वृषः, अनड्वान् (=अनडुह्), सौरभेयः, गौः (=गो । +शक्करः, शाक्करः, शाङ्करः, ककुद्मान्=ककुद्मत् । ९ पु), 'बैल' के ९ नाम हैं । ७—औक्षकम् (न), 'बैलोंके झुण्ड' का १ नाम है । ८—गव्या, गोत्रा (२ स्त्री), 'गायोंके झुण्ड' के २ नाम हैं । ९—वात्सकम्, धैनुकम् (२ न), 'बछओं तथा धेनुओं' (नई ब्याई हुई गायों) के झुण्ड' का क्रमशः एक २ नाम है । १०—महोक्ष, (पु), 'बड़े डीलवाले बैल' का १ १ नाम है । ११—वृद्धोक्षः, जरद्गवः (२ पु), 'बूढ़े बैल' के २ नाम हैं । १२—जातोक्षः (पु), बछवेकी अवस्थाको छोड़कर जवान हुए बैल' का १ नाम है । १३—तर्णकः (पु), 'शीघ्र पैदा हुए बछवे' का १ नाम है । १४—शकृत्करिः, वत्सः (२ पु), 'छोटे बछवे' के २ नाम हैं । १५—दम्यः, वत्स-

१ आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः २ षण्डो गोपतिरिट्चरः ॥ ६२ ॥
३ स्कन्धदेशे त्वस्य वहः ४ सास्ना तु गलकम्बलः ।
५ स्यान्नस्तितस्तु नस्योतः ६ प्रष्ठवाड् युगपार्श्वगः ॥ ६३ ॥
७ युगादीनां तु वोढारो युग्यप्रासङ्ग्यशाकटाः ।
८ खनति तेन तद्वोढास्येदं हालिकसैरिकौ ॥ ६४ ॥
९ धूर्वहे धुर्यधौरेयधुरीणाः सधुरन्धराः ।
१० उभावेकधुरीणैकधुरावेकधुरावहे ॥ ६५ ॥
११ स तु सर्वधुरीणः स्याद्यो वै सर्वधुरावहः ।
१२ माहेयी सौरभेयी गौरुस्रा माता च शृङ्गिणी ॥ ६६ ॥

तरः (२ पु), 'जोतने योग्य तैयार हुए बछुवे' के २ नाम हैं। १—आर्षभ्यः (पु), सांढ बनाने योग्य बछुवे' का १ नाम है। २—षण्डः (+शण्ढः), गोपतिः, इट्चरः (+इत्वरः ३ पु), ,स्वच्छन्द घूमनेवाले सांढ़' के ३ नाम हैं। ३—वहः (पु), 'बैलके कन्धे' का १ नाम है। ४—सास्ना (स्त्री), गलकम्बलः (पु), 'लोर' अर्थात् 'गाय-बैलोंके गलेमें लटकनेवाले चमड़े के २ नाम हैं। ५—नस्तितः, नस्योतः (+नस्तोतः। २ पु), 'नाथे हुए गौ' के २ नाम हैं। ६—प्रष्ठवाड् (=प्रष्ठवाह्। +पष्ठवाड्=पष्ठवाह्) युगपार्श्वगः (२ पु), 'पहले पहल बछुवेको हलमें चलना सिखलानेके लिये जुआठमें बांधे हुए काठ' के २ नाम हैं। ७—युग्यः, प्रासङ्ग्यः, शाकटः (३ पु), 'जुआठको ढोनेवाले बैल, दमन करने (हलमें चलना सिखलाने) के लिये पहले पहल कन्धेपर रक्खे हुए काठको ढोनेवाले बैल और गाड़ीको खींचनेवाले बैल' का क्रमशः एक २ नाम है। ८—हालिकः, सैरिकः (२ पु), 'हलसे खोदे जानेवाले, हलको ढोनेवाले, हलवाहा (हलको चलानेवाला), हलमें चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं। ९—धूर्वहः धुर्य्यः, धौरेयः, धुरीणः, धुरन्धरः (५ पु) 'धुरा (भार) को ढोनेवाले बैल' के ५ नाम हैं। १०—एकधुरीणः, एकधुरः, एकधुरावहः (३ पु), 'सिर्फ एक तरफ (दहने या बायें) चलनेवाले बैल' के ३ नाम हैं। ११—सर्वधुरीणः, सर्वधुरावहः (भा० दी०। २ पु), दहने और बायें दोनों तरफ चलनेवाले बैल' के २ नाम हैं १२—माहेयी (+माहा), सौरभेयी (+सुरभिः), गौः (=गो),उस्रा, माता

अर्जुन्यघ्न्या रोहिणी स्यात्१उत्तमा गोषु नैचिकी ।
२ वर्णादिभेदात्संज्ञाः स्युः शबलीधवलादयः ॥ ६७ ॥
३ द्विहायनी द्विवर्षा गौरेकाब्दा त्वेकहायनी ।
चतुरब्दा चतुर्हायण्येवं त्र्यब्दा त्रिहायणी ॥ ६८ ॥
४ वशा वन्ध्या५ऽवतोका तु स्रवद्गर्भा६ऽथ सन्धिनी ।
आक्रान्ता वृषभेणा७ऽथ वेहद्गर्भोपघातिनी ॥ ६९ ॥
८ काल्योपसर्या प्रजने ९ प्रष्ठौही बालगर्भिणी ।
१० स्यादचण्डी तु सुकरा ११ बहुसूतिः परेष्टुका ॥ ७० ॥

(=मातृ), शृङ्गिणी, अर्जुनी, अघ्न्या, रोहिणी (९ स्त्री), 'गाय' के ९ नाम हैं । १—नैचिकी (+नौचिकी । स्त्री), 'उत्तम गाय' का १ नाम है । २—शबली, धवला (२ स्त्री), आदि ('कृष्णा, कपिला पाटला; ३ स्त्री;..........') 'वर्ण (रङ्ग) आदि (प्रमाण और शरीर आदि) के भेदसे 'चितकबरी, धावर, आदि (काली, कपिल या कइल और पाटल या लाल,.........) गायों' का क्रमशः एक २ नाम है ('प्रमाण-भेदसे जैसे—'दीर्घा, ह्रस्वा, खर्वा (३ स्त्री),......। शरीर—भेदसे जैसे—पिङ्गाक्षी, लम्बकर्णी, तीक्ष्णशृङ्गी (४ स्त्री),.......")। ३—द्विहायनी, द्विवर्षा (भा० दी०), एकाब्दा (भा० दी०), एकहायनी, चतुरब्दा (भा० दी०), चतुर्हायणी, त्र्यब्दा (भा० दी०), त्रिहायणी (८ स्त्री), 'दो वर्ष, एक वर्ष, चार वर्ष और तीन वर्षकी उम्रवाली गौ' के क्रमशः एक २ नाम हैं । ४—वशा, वन्ध्या (× वन्ध्या । २ स्त्री) 'बाँझ (बच्चा नहीं पैदा करनेवाली) गौ आदि' के २ नाम हैं । ५—अवतोका (+वतोका, स्रवद्गर्भा (२ स्त्री), 'अकस्मात् जिसका गर्भ गिर गया हो उस गौ आदि' के २ नाम हैं । ६—सन्धिनी (स्त्री), 'बाही (सांड़के साथ संगम की) हुई गाय' का १ नाम है । ७—वेहद् (=वेहत्), गर्भोपघातिनी (भा० दी० । +वृषोपगा । २ स्त्री) 'सांढ़के साथ संयोगकर गर्भको नष्ट की हुई गाय' के २ नाम हैं । ८-काल्या(अन्य मतसे), उपसर्या (२ स्त्री), उठी हुई (सांढके साथ मैथुन करनेकी इच्छा करनेवाली) गाय' के २ नाम हैं । ९—प्रष्ठौही (+पष्ठौही), बालगर्भिणी (भा० दी० । २ स्त्री), 'आँकर (पहले पहल गर्भ धारण की हुई), गाय' के २ नाम हैं । १०—अचण्डी, सुकरा (+सुशकरी । २ स्त्री), "सूधी गाय' के २ नाम हैं । ११—बहुसूतिः, परेष्टुका (२

१ चिरप्रसूता वष्कयिणी २ धेनुः स्यान्नवसूतिका ।
३ सुव्रता सुखसंदोह्या ४ पीनोघ्नी पीवरस्तनी ॥ ७१ ॥
५ द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा ६ धेनुष्या बन्धके स्थिता ।
७ समांसमीना सा यैव प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ७२ ॥
८ ऊधस्तु क्लीबमापीनं समौ ९ शिवककीलकौ ।
१० न पुंसि दाम संदानं ११ पशुरज्जुस्तु दामनी ॥ ७३ ॥
१२ वैशाखमन्थमन्थानमन्थानो मन्थदण्डके ।

स्त्री), 'बहुत बच्चा पैदा की हुई गाय' के २ नाम हैं। १—चिरप्रसूता, वष्कयिणी (+वष्कयणी । २ स्त्री) 'बकेना (बहुत दिनों की व्याई हुई) गाय' के १ नाम हैं । २—धेनुः, नवसूतिका (+नवसूतिः । २ स्त्री), 'थोड़े दिनों की व्याई हुई गाय' के २ नाम हैं । ३—सुव्रता, सुखसंदोह्या (+सुखसंदुह्या । २ स्त्री), 'बिना झंझट किये दूही जानेवाली गाय' के २ नाम हैं")। इसी तरह दुःखदोह्या, करटा (२ स्त्री) दुःख (मुश्किल) से दूही जाने वाली गाय के दो नाम हैं) । ४—पीनोघ्नी, पीवरस्तनी (२ स्त्री), 'मोटे २ स्तनवाली गाय' के दो नाम हैं । ५—द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा (२स्त्री), 'एक द्रोण (२५६ पल) दूध देनेवाली गाय' के २ नाम हैं । ६–धेनुष्या (+पीतदुग्धा । स्त्री), 'बंधक रक्खी हुई गाय' का १ नाम है । ७—समांसमीना (स्त्री) 'धनपुरही' (प्रतिवर्ष बच्चा देनेवाली) गाय' का १ नाम है । ८—ऊधः (=ऊधस्), आपीनम् (२ न), 'गायके थन' के २ नाम हैं । ९—शिवकः, कीलकः (२ पु), 'गौओंको बांधनेके खूंटे' के २ नाम हैं । १०—दाम (=दामन् न स्त्री), संदानम् (न), भा० दी० के मतसे 'नोय' अर्थात् 'दूहनेके समय गायोंके पैरको बांधनेवाली रस्सी' के और महे० के मतसे 'पगहा' के २ नाम हैं । ११—पशुरज्जुः, दामनी (+बन्धनी । २ स्त्री), भा० दी० के मतसे 'पगहा' अर्थात् 'पशुको बांधनेकी रस्सी' के और महे० के मतसे 'दँवरी' अर्थात् 'अनेक पशुओंको बांधनेवाली रस्सी' के और अन्य आचार्योंके मतसे 'पशुओंके छान' अर्थात् 'पैर बांधनेकी रस्सी' के २ नाम हैं । १२—वैशाखः, मन्थः, मन्थानः, मन्थाः (मथिन्), मन्थनदण्डकः (+खजकः, क्षुब्धः । ५ पु), 'मथनीके डण्डे'

१ कुठरो दण्डविष्कम्भो २ मन्थनी गर्गरी समे ॥ ७४ ॥

३ उष्ट्रे क्रमेलकमयमहाङ्गाः ४ करभः शिशुः ।

५ करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ॥ ७५ ॥

६ अजा छागी ७ शुभच्छागबस्तच्छगलका अजे ।

८ मेढ्रोरभ्रोरणोर्णायुमेषवृष्णय एडके ॥ ७६ ॥

९ उष्ट्रोरभ्राजवृन्दे स्यादौष्ट्रकौरभ्रकाजकम् ।

१० चक्रीवन्तस्तु बालेया रासभा गर्दभाः खराः ॥ ७७ ॥

११ वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।

पण्याजीवो ह्यापणिकः क्रयविक्रयिकश्च सः ॥ ७८ ॥

१२ विक्रेता स्याद्विक्रयिकः १३ क्रयविक्रयिकौ समौ ।

के ७ नाम हैं। १—कुठरः (+कुटरः), दण्डविष्कम्भः (२ पु), 'जिसमें मथनीके डण्डेको बांधकर दही मथा जाता है उस खम्भे आदि' के २ नाम हैं। २—मन्थनी, गर्गरी (+कलशी। २ स्त्री), 'मथनहड़ी' अर्थात् 'जिसमें दहीको मथा जाता है उस पात्र' के २ नाम हैं। ३—उष्ट्रः, क्रमेलकः, मयः, महाङ्गः (+दासेरकः, दाशेरः, दीर्घजङ्घः, दीर्घग्रीवः, रवणः, धूम्रकः, कण्टकाशनः। ४ पु), 'ऊँट' के ४ नाम हैं ४—करभः (पु), ऊँटके तीन वर्षतक वाले बच्चे' का १ नाम है। ५—शृङ्खलकः (पु) 'लकड़ीकी बनी हुई सिकड़ीसे बांधे हुए ऊँटके बच्चे' का १ नाम है। ६—अजा, छागी (२ स्त्री), 'बकरी छेरी' के २ नाम हैं। ७—शुभः (+स्तभः, तुभः), छागः (+छगः) बस्तः (+वस्तः) छगलकः (+छगलः), अजः (५ पु), 'बकरा, खस्सी' के ५ नाम हैं। ८—मेढ्रः (मेण्ढकः), उरभ्रः, उरणः, ऊर्णायुः, मेषः, वृष्णिः, एडकः (+हुडुः, हुडः। ७ पु), 'भेंड़े' के ७ नाम हैं। ९—औष्ट्रकम्, औरभ्रकम्, आजकम् (३ न), ऊँट, भेड़े और बकरों के झुण्ड' का क्रमशः १-१ नाम है। १०—चक्रीवान् (=चक्रीवत्), बालेयः (+वालेयः), रासभः, गर्दभः, खरः (+क्रूरः, शङ्कुकर्णः। ५ पु), 'गदहे' के ५ नाम हैं। ११—वैदेहकः, सार्थवाहः, नैगमः (+निगमः), वाणिजः, वणिक् (=वणिज्), पण्याजीवः, आपणिकः, क्रयविक्रयिकः (८ पु), 'बनियां व्यापारी' के ८ नाम हैं। १२—विक्रेता (=विक्रेतृ), विक्रयिकः (२ पु), 'बेचनेवाले' के २ नाम हैं। १३—क्रायकः,

१ वाणिज्यं तु वणिज्या स्यान्मूल्यं वस्नोऽप्यवक्रयः ॥ ७९ ॥
३ नीवी परिपणो मूलधनं ४ लाभोऽधिकं फलम्।
५ परिदानं परीवर्त्तो नैमेयनिमयावपि ॥ ८० ॥
६ पुमानुपनिधिर्न्यासः ७ प्रतिदानं तदर्पणम्।
८ क्रये प्रसारितं क्रय्यं ९ क्रेयं क्रेतव्यमात्रके ॥ ८१ ॥
१० विक्रेयं पणितव्यं च पण्यं ११ क्रय्यादयस्त्रिषु।
१२ क्लीबे सत्यापनं सत्यङ्कारः सत्याकृतिः स्त्रियाम् ॥ ८२ ॥
१३ विपणो विक्रयः १४ सङ्ख्याः सङ्ख्येये ह्यादश त्रिषु।

क्रयिकः (+क्रेता=क्रेतृ। २ पु), 'खरीददार' के २ नाम हैं। १—वाणिज्यम् (न), वणिज्या (स्त्री), 'व्यापर' के २ नाम हैं। २—मूल्यम् (न) वस्नः, अवक्रयः (२ पु), 'कीमत, दाम' के ३ नाम हैं। ३—नीवी (+नीविः। स्त्री,), परिपणम्, मूलधनम् (२ न), 'व्यापार में लगाये हुए मूलधन' के ३ नाम हैं। ४—लाभः (पु), अधिकम्, फलम् (२ भा० दी०। २ न), मुनाफा, फायदा, लाभ' के ३ नाम हैं। ५—परिदानम् (+प्रतिदानम्। न), परीवर्त्तः (× परिवर्त्तः), नैमेयः (+वैमेयः), नियमः (+विमयः। ३ पु), 'अदल-बदल करने' के ४ नाम है। ६—उपनिधिः, न्यासः (+निक्षेपः। २ पु), 'थाती, धरोहर रखने' के २ नाम हैं ७-प्रतिदानम् (न) 'धरोहर (थाती) को वापस करने' का १ नाम है। ८—क्रय्यम् (त्रि), 'सौदा' अर्थात् 'ग्राहकोंको खरीदनेके लिये दूकान पर फैलाई हुई वस्तु' का १ नाम है। ९—क्रेयम् (त्रि) 'खरीदने योग्य वस्तु' का १ नाम है।१०—विक्रेयम्, पणितव्यम्, पण्यम् (३ त्रि) 'बेचने योग्य वस्तु' के ३ नाम है। ११—'क्रय्य आदि शब्द त्रिलिङ्ग हैं। १२—सत्यापनम् (+सत्यापना स्त्री। न), सत्यङ्कारः (पु), सत्याकृतिः (स्त्री), 'साई बयाना, ऐडवांस, पेशगी' के ३ नाम हैं। १३—विपणः, विक्रयः (२ पु), 'बेचने' के २ नाम हैं। १४—'एकः, द्वौ, त्रयः,''''''दश' भा० दी० के मतसे 'एक, दो, तीन,'''दश संख्या' का, और 'एकः, द्वौ, त्रयः,''''''अष्टादश' महे० मुकु० क्षी० स्वा० आदिके मतसे एक, दो, तीन,''''''अट्ठारह तक संख्या' का वाचक क्रमशः एक २ शब्द

१ विंशत्याद्याः सदैकत्वे सर्वाः सङ्ख्येयसङ्ख्ययोः ॥ ८३ ॥

है। ये (एक, द्वि,⋯) शब्द गिने जानेवाले वस्तुके वाचक रहने पर त्रिलिङ्ग होते हैं। ('जैसे—'एको ब्राह्मणः, एका ब्राह्मणी, एकं वस्त्रम्, द्वौ ब्राह्मणौ, द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे,⋯⋯', इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणो और वस्त्र' शब्द क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' हैं। अत एव 'एक और द्वि' शब्द का भी क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' में प्रयोग हुआ है। मूलमें 'हि' शब्दके अवधारणार्थक होनेसे समानाधिकरण्य ("एको ब्राह्मणः, द्वौ ब्राह्मणौ, त्रयो ब्राह्मणाः, एका ब्राह्मणी, द्वे ब्राह्मण्यौ, तिस्रो ब्राह्मण्यः, एकं वस्त्रम्, द्वे वस्त्रे, त्रीणि वस्त्राणि;⋯⋯") से ही व्यवहार होता है; 'वैयधिकरण्य ("एको ब्राह्मणस्य, द्वौ ब्राह्मणयोः, त्रयो ब्राह्मणानाम्; एका ब्राह्मण्याः द्वे ब्राह्मण्योः, तिस्रो ब्राह्मणीनाम्ः, एकं वस्त्रस्य, द्वे वस्त्रयोः, त्रीणि वस्त्राणाम् ⋯⋯") से व्यवहार नहीं होता है। इसमें भी 'एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः अर्थात 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' (एक, दो, तीन और चार संख्याके वाचक) शब्दोंके तीनों लिङ्गोंमें भिन्न २ रूप होते हैं और 'पञ्च, षट्,⋯⋯अष्टादश' अर्थात् 'पञ्चन्' षष्,⋯⋯अष्टादशन्' (पांच, छ,⋯⋯अट्ठारह संख्याके वाचक) शब्दके तीनों लिङ्गोंमें एक समान रूप होता है। ("क्रमशः उदाहरण। पहला (तीनों लिङ्गोंमें भिन्न रूपवाले शब्द) जैसे—'एको ब्राह्मणः एका ब्राह्मणी, एकं वस्त्रम्, द्वौ ब्राह्मणौ द्वे ब्राह्मण्यौ, द्वे वस्त्रे, त्रयो ब्राह्मणाः, तिस्रो ब्राह्मण्याः, त्रीणि वस्त्राणि, चत्वारो ब्राह्मणाः, चतस्रो ब्राह्मण्यः, चत्वारि वस्त्राणि' इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणी और वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग' होनेसे 'एक, द्वि, त्रि और चतुर्' शब्दोंका क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग' में प्रयोग हुआ है'। दूसरा (तीनों लिङ्गमें समान लिंगवाले शब्द) जैसे—'पञ्च ब्राह्मणाः, पञ्च ब्राह्मण्यः, पञ्च वस्त्राणि⋯⋯' इन वाक्योंमें 'ब्राह्मण, ब्राह्मणीऔर वस्त्र' शब्दके क्रमशः 'पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग और नपुंकलिङ्ग' होने पर भी 'पञ्चन्' शब्दका प्रयोग तीनों लिङ्गोंमें समान ही हुआ है भिन्न २ नहीं, इसी तरह 'षट् सप्तन्,⋯अष्टादश' (छ, सात,⋯⋯अट्ठारह' संख्याके, वाचक) शब्दोंके भी तीनों लिङ्गोंमें समान ही रूप होते हैं। विशेषः—ये सब लिङ्ग-भेद केवल संस्कृतमें ही होते हैं हिन्दी आदिमें नहीं")। १—'एकोनविंशतिः, विंशतिः,⋯⋯परार्द्धम्' ('उन्नीस, बीस,

१ सङ्ख्यार्थे द्विबहुत्वे स्त २ स्तासु चानवतेः स्त्रियः ।
३ पङ्क्तेः शतसहस्रादि क्रमाद्दशगुणोत्तरम् ॥ ८४ ॥

......परार्द्ध' संख्याके वाचक) शब्द संख्या (गिनती) और संख्येय (गिने जानेवाले वस्तु) के अर्थमें प्रयुक्त होने पर एकवचन ही होते हैं । ("क्रमशः उदाहरण । पहला (संख्या अर्थमें) जैसे—'ब्राह्मणानां विंशतिः, शतम् , सहस्रं,......वा' इस वाक्यमें 'ब्राह्मण' शब्दके बहुवचन रहने पर भी 'विंशति शत, सहस्र......'शब्दका एकवचनमें ही प्रयोग हुआ है । दूसरा (संख्येय अर्थात् गिनने योग्य वस्तुके अर्थमें) जैसे—'एकोनविंशतिः, शतं, सहस्रं, लक्षं वा ब्राह्मणाः,......' इस वाक्योंमें 'ब्राह्मण' शब्दके बहुवचन होने पर भी 'एकोनविंशति, शत, सहस्र, लक्ष,......'शब्दों का 'एकवचन' में ही प्रयोग हुआ है, बहुवचनमें नहीं") । १—'एकोनविंशतिः,......परार्द्धम्' (उन्नीस ......परार्द्ध' तक संख्याके वाचक) शब्द संख्याके अर्थमें द्विवचन और बहुवचन भी होते हैं । ("जैसे—'द्वे विंशती, तिस्रो विंशतयः, एकं शतम् , द्वे शते, त्रीणि शतानि,......' इन वाक्योंमें 'विंशति और शत' शब्दका तीनों वचन (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) में प्रयोग हुआ है । इसी तरह अन्यान्य (एकविंशति, द्वाविंशति'...शत, सहस्र,...परार्द्ध) शब्दोंका भी जानना चाहिये") । २—'विंशतिः,......नवनवतिः' (बीस......निन्नानवे' तक संख्या वाचक) शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग हैं । (जैसे—विंशत्या पुरुषैः कृतम् , सप्तति-र्वस्त्राणि, नवत्या नदीनां जलम् ,......' इन वाक्योंमें 'पुरुष, वस्त्र और नदी' शब्दके क्रमशः 'पुंल्लिङ्ग, नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग' होने पर भी विंशति (बीस), सप्तति (सत्तर), नवति (नब्बे) शब्दोंका प्रयोग केवल 'स्त्रीलिङ्ग' में ही हुआ है, अन्य लिङ्गों (नपुंसक और स्त्रीलिङ्ग में नहीं") । ३—पंक्तिः (स्त्री), शतम्, सहस्रम् (२ न), आदि ("आदि पदसे 'अयुतम् (न पु), लक्षम् (न स्त्री) प्रयुतम् (न पु), कोटिः (स्त्री), अर्बुदम् (न पु), अब्जम् (+ वृन्दम्), खर्वम् , महापद्मम् (+ महाम्बुजम्), शङ्कुः (पु स्त्री), जलधिः (+ वार्द्धिः, वारिधिः,...... । पु), अन्त्यम् , मध्य , परार्द्धम् , (शेष न)' का संग्रह है"), 'दहाई (दश) सैकड़ा और हजार आदि (आदिसे 'दश हजार, लाख, दश लाख, करोड़, दश करोड़, अरब, दश अरब, खर्व, दश खर्व, नील, दश नील

१ यौतवं द्रुवयं पाय्यमिति मानार्थकं त्रयम् ।
२ मानं तुलाङ्गुलिप्रस्थै २गुञ्जाः पञ्चाद्यमाषकः ॥ ८५ ॥
३ ते षोडशाक्षः कर्षोऽस्त्री ४ पलं कर्षचतुष्टयम् ।
५ सुवर्णविस्तौ हेम्नोऽक्षे ६ कुरुविस्तस्तु तत्पले ॥ ८६ ॥
७ तुला स्त्रियां पलशतं ८ भारः स्याद्विंशतिस्तुलाः ।
९ आचितो दश भाराः स्युः शाकटो भार आचितः ॥ ८७ ॥

पद्म, दश पद्म, शङ्ख, दश शङ्ख") संख्या (गिन्ती)'का क्रमशः एक २ नाम है। ये क्रमशः उत्तरोत्तर (पहलेकी अपेक्षा दूसरे) दशगुने होते हैं। (जैसे—दश पंक्ति=शतम् (सौ), दश शतं=सहस्रम् (हजार), इत्यादि समझना चाहिये") । १—यौतवम् (+पौतवम्) द्रुवयम्, पाय्यम्, मानम् (मा० दो० । ४ न), 'नापना, तौलना, प्रमाण' के ४ नाम हैं। ("यह 'तुला (तराजू), अङ्गुलि (हाथ, फूट, गज, बांस आदि), प्रस्थ (पौवा, सेर, पसेरी आदि) के भेदसे तीन प्रकार' का होता है, इनमेंसे एक २ का क्रमशः 'उन्मानम्, परिमाणम्, प्रमाणम् (३ न)' यह एक २ नाम है। "हेमचन्द्राचार्यने तो 'पौतवम्, द्रुवयम, पाय्यम् (३ न)' 'तराजूसे तौलने'का 'सेर-पौवा, छटाक आदिसे तौलने' का, और 'हाथ, अङ्गुल, गज, फूट आदिसे नापने' का क्रमशः एक २ नाम है' ऐसा कहा है") । २—आद्यमाषकः (पु), 'पांच गुञ्जा (रत्ती), अर्थात् 'एक आना भर' का १ नाम है। ३—अक्षः (पु), कर्षः (पु न), 'सोलह आद्यमाषक (आनाभर)' अर्थात् 'एक रुपया भर' के २ नाम हैं। ४—पलम् (न), 'चार कर्ष (रुपया) भर' का १ नाम है। ५—सुवर्णः (+न), बिस्तः (२ पु), 'एक मोहर' अर्थात् 'अस्सी रत्ती भर या १६ आने भर सुवर्ण' के २ नाम हैं। ६—कुरुविस्तः (पु), 'एक पल (चार मोहर भर या तीन सौ बीस रत्ती भर सुवर्ण' का १ नाम है। ७—तुला (स्त्री), 'सौ पल' अर्थात् '४०० रुपया भर या नम्बरी एक पसेरी भर' का १ नाम है। ८—भारः (पु), 'बीस तुला' अर्थात् '२० पसेरी या ढाई मन' का १ नाम है। ("यही एक आदमीका बोझ होता है")। ९—आचितः (पु।+न), 'दश भार अर्थात् '२५मन' का १ नाम है। यह एक गाड़ीका बोझ

१ कार्षापणः कार्षिकः स्यात् २ कार्षिके ताम्रिके पणः।
३ अस्त्रियामाढकद्रोणौ खारी वाहो निकुञ्चकः॥ ८८॥
कुडवः प्रस्थ इत्याद्याः परिमाणार्थकाः पृथक्।
४ पादस्तुरीयो भागः स्यात्५दंशभागौ तु वण्टके॥ ८९॥
६ द्रव्यं वित्तं स्वापतेयं रिक्थमृक्थं धनं वसु।
हिरण्यं द्रविणं द्युम्नमर्थरैविभवा अपि॥ ९०॥
७ स्यात्कोशश्च हिरण्यं च हेमरूप्ये कृताकृते।
८ ताभ्यां यदन्यत्तत्कुप्यं ९ रूप्यं तद्द्वयमाहतम्॥ ९१॥
१० गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भो हरिन्मणिः।
११ शोणरत्नं लोहितकः पद्मरागोऽथ १२ मौक्तिकम्॥ ९२॥

होता है। १—कार्षापणः, कार्षिकः (२ पु), 'रुपये' के २ नाम हैं। २—पणः (पु) 'पैसे' का १ नाम है। "श्लो० ८९ से यहां तक 'तुला मान' कहा गया, पहले (२।७।८३-८७) में 'अङ्गुलिमान' कह चुके हैं; अब क्रमप्राप्त 'प्रस्थमान' कह रहे हैं")। ३—आढकः, द्रोणः (२ पु न), खारी (+खारः पु। स्त्री), वाहः, निकुञ्चकः, कुडवः (+कुटपः मुकु०; कुडपः), प्रस्थः (४ पु), इत्यादि (मानी, मविका, प्रवर्तः, सूर्पः,…), 'आढक आदि तौल—विशेष' का क्रमशः एक २ नाम है।४—पादः (पु), 'चौथाई भाग' का १ नाम है। ५—अंशः, भागः, वण्टकः (३ पु), 'भाग, हिस्सा' के ३ नाम हैं ६—द्रव्यम्, वित्तम् स्वापतेयम्, रिक्थम्, ऋक्थम्, धनम्, वसु, हिरण्यम्, द्रविणम्, द्युम्नम्(१० न), अर्थः, रैः (=र+पु स्त्री), विभवः (३ पु), 'धन' के १३ नाम हैं। ७—कोशः(+कोषः। पु); हिरण्यम् (न), 'सोना—चांदी' अर्थात् 'सिक्का बने हुए और बिना सिक्का बने हुए सोना-चांदीमात्र' के २ नाम हैं। ८—कुप्यम् (न), 'सोना-चांदीसे भिन्न तांबा आदि धातु' का १ नाम है। ९—रूप्यम् (न), 'सिक्का बने हुए सोना, चांदी, तांबा, गिल्टी आदि' का १ नाम है। (सोना जैसे— असर्फी, गिन्नी आदि। चांदी जैसे—रुपया, अठन्नी, आदि। तांबा जैसे-पैसा, धेला, पाई आदि। गिल्टी जैसे—चौवन्नी, दुअन्नी, एकन्नी")। १०—गारुत्मतम्, मरकतम् (२ न), अश्मगर्भः, हरिन्मणि, (२ पु), 'पन्ना या मरकत मणि' के ४ नाम हैं। ११—शोणरत्नम् (न), लोहितकः, पद्मरागः (२ पु), 'पद्मराग मणि, लाल' के ३ नाम हैं। १२—मौक्तिकम्

मुक्ताऽथ विद्रुमः पुंसि प्रवालं पुन्नपुंसकम् ।
२ रत्नं मणिर्द्वयोरश्मजातौ मुक्तादिकेऽपि च ॥ ९३ ॥
३ स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
तपनीयं शातकुम्भं गाङ्गेयं भर्म कर्बुरम् ॥ ९४ ॥
चामीकरं जातरूपं महारजतकाञ्चने ।
रुक्मं कार्तस्वरं जाम्बूनदमष्टापदोऽस्त्रियाम् ॥ ९५ ॥
४ अलङ्कारसुवर्णं यच्छृङ्गीकनकमित्यदः ।
५ दुर्वर्णं रजतं रूप्यं खर्जूरं श्वेतमित्यपि ॥ ९६ ॥
६ रीतिः स्त्रियामारकूटो न स्त्रियामथ ७ ताम्रकम् ।

(न), मुक्ता (स्त्री), 'मोती' के २ नाम हैं । १—विद्रुमः (पु), प्रवालः (पु न), 'मूँगे' के २ नाम हैं । २—रत्नम् (न), मणिः (+ मणी । पु स्त्री), 'रत्न, मणि' अर्थात् 'पन्ना, लाल, हीरा, मोती आदि जवाहिरात' के २ नाम हैं । ("सोना, चांदी, मोती, लाजावर्त और मूंगा, अथवा—'सोना, हीरा, नीलमणि, पद्मराग (लाल) और मोती, ये 'पञ्च रत्न' हैं । मोती, सोना, वैडूर्यमणि (सूर्यकान्त), पद्मराग-मणि (लाल), पुखराज, गोमेदमणि, नीलमणि, पन्ना, और मूंगा ये नव 'महारत्न' हैं । "हीरा, मोती, सोना, चांदी, चन्दन, शंख, चर्म और वस्त्र ये आठ 'रत्नकी जातियां' हैं") । ३—स्वर्णम्, सुवर्णम्, कनकम्, हिरण्यम्, हेम (=हेमन्), हाटकम्, तपनीयम्, शातकुम्भम् (+ शातकौम्भम्), गाङ्गेयम्, भर्म (=भर्मन् । + भर्मः = भर्म पु), कर्बुरम् (+ कर्वुरम्), चामीकरम्, जातरूपम्, महारजतम्, काञ्चनम्, रुक्मम्, कार्तस्वरम्, जाम्बूनदम् (१८ न), अष्टापदः (पु न । + कलधौतम् अर्जुनम्, कल्याणम्, भूत्तमम्, ४ न···), 'सुवर्ण' के १९ नाम हैं । ४—शृङ्गीकनकम् (+ शृङ्गी स्त्री, शृङ्गि = शृङ्गि, कनकम्, २ न ।), 'भूषण बने हुए सोने' का १ नाम है । ५—दुर्वर्णम्, रजतम्, रूप्यम्, खर्जूरम् (× खर्जुरम्), श्वेतम् (+ कलधौतम्, तारम्, हंस, चन्द्रमा और कुमुदके पर्यायवाचक सब शब्द । ५ न), 'चांदी' के ५ नाम है । ६—रीतिः (+ रीती, रिरी, रीरी स्त्री), आर-कूटः (पु न), 'पीतल' के २ नाम हैं । ७—ताम्रकम् (+ ताम्रम्), शुल्वम्

शुल्वं म्लेच्छमुखं द्व्यष्टवरिष्ठोदुम्बराणि च ॥ ९७ ॥
१ लोहोऽस्त्री शस्त्रकं तीक्ष्णं पिण्डं कालायसायसी।
अश्मसारोऽथ २ मण्डूरं सिंहाणमपि तन्मले ॥ ९८ ॥
३ सर्वं च तैजसं लोहं ४ विकारस्त्वयसः कुशी।
५ क्षारः काचोऽथ ६ चपलो रसः सूतश्च पारदे ॥ ९९ ॥
७ गवलं माहिषं शृङ्गम् ८ अभ्रकं गिरिजामले।
९ स्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कापोताञ्जनयामुने ॥ १०० ॥
१० तुत्थाञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके।
११ कर्परी दार्विका क्वाथोद्भवं तुत्थं १२ रसाञ्जनम् ॥ १०१ ॥

(× शुल्वम्) म्लेच्छमुखम्, द्व्यष्टम्, वारिष्टम्, उदुम्बरम् (+ औदुम्बरम्, रक्तम्। ६ न), 'तांबा' के ६ नाम हैं। १—लोहः (+लौहः। पु न), शस्त्रकम् (+शस्त्रम्), तीक्ष्णम्, पिण्डम्, कालायसम् (+कृष्णायसम्, कृष्णामिषम्), अयः (=अयस्। ९ न), अश्मसारः (+गिरिसारम्, शिलासारम्। पु। +न), 'लोहे' के ७ नाम हैं। २—मण्डूरम्, सिंहाणम् (× सिंहानम्, सिंघानम्। २ न) 'मण्डूर' अर्थात् 'लोहे की मैल' के २ नाम हैं। ३—लोहम् (+लौहम्। न), 'सब तरहके धातु (तैजस पदार्थ)' का १ नाम है। ("सुवर्ण, चांदी, तांबा, पीतल, कांसा, रांगा, सीसा और लोहा, ये आठ 'लोहके भेद' होते हैं")। ४—कुशी (स्त्री), 'लोहेके बने हुए हथियार बर्तन आदि वस्तु' का १ नाम है। ५—क्षारः, काचः (२), 'काँच' के २ नाम हैं। ६—चपलः, रसः, सूतः, पारदः (+पारतः। ४ पु) 'पारा' के ४ नाम हैं। ७—गवलम् (न), 'भैंसेकी सींग' का १ नाम है। ८—अभ्रकम्, गिरिजामलम् (+गिरिजम्, अमलम्। २ न), 'अभ्रक' के २ नाम हैं। ९—स्रोतोञ्जनम्, सौवीरम्, कापोताञ्जनम् (× कापोतम्), यामुनम् (४ न), 'सूर्मा' के ४ नाम हैं। १०—तुत्थाञ्जनम् (+तुत्थम्), शिखिग्रीवम्, वितुन्नकम्, मयूरकम् (४ न), 'तूतिया' के ४ नाम हैं। ११—कर्परी, दार्विका (२ स्त्री), तुत्थम् (+तुन्नम्। न), 'घिसकर तैयार किये हुये अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं। १२—रसाञ्जनम्, रसगर्भम्, तार्क्ष्यशैलम् (३ न), 'रसाञ्जन' अर्थात् 'नेत्रमें लगानेके अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं। ("महे०

रसगर्भं तार्क्ष्यशैलं १ गन्धाश्मनि तु गन्धिकः ।
सौगन्धिकश्च २ चक्षुष्याकुलाल्यौ तु कुलत्थिका ॥ १०२ ॥
३ रीतिपुष्पं पुष्पकेतु पुष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
४ पिञ्जरं पीतनं तालमालं च हरितालके ॥ १०३ ॥
५ गैरेयमर्थ्यं गिरिजमश्मजं च शिलाजतु ।
६ बोलगन्धरसप्राणपिण्डगोपरसाः समाः ॥ १०४ ॥
७ डिण्डीरोऽब्धिकफः फेनः ८ सिन्दूरं नागसंभवम् ।
९ नागसीसकयोगेष्टवप्राणि १० त्रपु पिच्चटम् ॥ १०५ ॥

के मतसे 'तुत्थाञ्जनम् ,…… कर्परी' 'तूतिया' के ९ नाम और 'रसाञ्जनम्, दारुहल्दी के क्वाथ (काढा) के समभाग बकरीके दूधमें तूतियाको घिसकर तैयार किये हुए अञ्जन-विशेष' के ३ नाम हैं । क्षी० स्वा० के मतसे 'तुत्थाञ्जनम् ,…… 'तूतिया' के ९ नाम और 'दार्विकाक्काथोद्भवम्, तुत्थ रसाञ्जनम्, ……४ नाम (भा० दी० के कथनानुसार ५ नाम) द्वितीय अर्थ में हैं । धन्वन्तरि और हेम चन्द्राचार्यके तो भिन्न ही क्रम हैं" । १—गन्धाश्मा (=गन्धाश्मन्), गन्धिकः (+गन्धकः), सौगन्धिकः (३ पु), 'गन्धक' के ३ नाम हैं । २—चक्षुष्या, कुलाली, कुलत्थिका (३ स्त्री), 'काला सूर्मा' के ३ नाम हैं । ३—रीतिपुष्पम् , पुष्पकेतु, पुष्पकम् (+पौष्पकम्), कुसुमाञ्जनम् (+पुष्पाञ्जम् । ४ न), 'तपाये हुए पीतलसे निकली हुई मैलके द्वारा बनाये हुए सूर्मे के ४ नाम हैं । ४—पिञ्जरम् , पीतनम् (+पीतकम् गौरम्), तालम् , आलम् (+अलम्), हरितालकम् (+हरितालम् । ५ न), 'हरताल' के ५ नाम हैं । ५—गैरेयम् , अर्थ्यम् , गिरिजम , अश्मजम् , शिलाजतु (५ न) 'शिलाजीत' के ५ नाम हैं । ६—बोलः, गन्धरसः, (×रसगन्धः) प्राणः, पिण्डः (×पिष्टः), गोपरसः (+ गोपः, रसः, गोसः मुकु०, शशः । ५ पु) 'गन्धरस' के ५ नाम हैं ७—डिण्डीरः (+हिण्डीरः, हिण्डिरः), अब्धिकफः, फेनः (३ पु), 'समुद्रफेन' के ३ नाम हैं । ८—सिन्दूरम्, नागसंभवम् (+नागजम्, शृङ्गारभूषणम्, चीनपिष्टम् । २ न), 'सिन्दूर' के २ नाम हैं । ९—नागम् , सीसकम् , (+सीसम् , सीसपत्रम्), योगेष्टम्), वप्रम् (+वर्ध्रम् मुकु० । ४ न), 'सीसा' के ४ नाम हैं । १०—त्रपु, पिच्चटम्, रङ्गम् , वङ्गम् (+मृदङ्गम् । ४ न), 'रांगा' के ४

रङ्कवङ्के १ अथ पिचुस्तुलो२ऽथ कमलोत्तरम् ।
स्यात्कुसुम्भं वह्निशिखं महारजनमित्यपि ॥ १०६ ॥
३ मेषकम्बल ऊर्णायुः ४ शशोर्णं शशलोमनि ।
५ मधु क्षौद्रं माक्षिकादि ६ मधूच्छिष्टं तु सिक्थकम् ॥ १०७ ॥
७ मनःशिला मनोगुप्ता मनोह्वा नागजिह्विका ।
८ नैपाली कुनटी गोला ९ यवक्षारो यवाग्रजः ॥ १०८ ॥
पाक्यो१०ऽथ सर्जिकाक्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
११ सौवर्चलं स्याद्रुचकं १२ त्वक्क्षीरी वंशरोचना ॥ १०९ ॥
१३ शिग्रुजं श्वेतमरिचं मोरटं १४ मूलमैक्षवम् ।

नाम हैं । १—पिचुः, तूलः (+ पिचुतूलः, पिचुलः । २ पु), 'रूई' कपास' के २ नाम हैं । २—कमलोत्तरम्, कुसुम्भम्, वह्निशिखम्, महारजनम् (४ न), 'कुसुम (बर्रे) के फूल' के ४ नाम हैं । ३—मेषकम्बलः, ऊर्णायुः (२ पु), 'भेंड़के बाल के कम्बल' के २ नाम हैं । ४—शशोर्णम्, शशलोम (= शशलोमन् । २ न), 'खरगोशके रोंए' के २ नाम हैं । ५—मधु, क्षौद्रम्, माक्षिकम्, आदि (+ भ्रामरम्, वाटकम्, पैत्तिकम्, सारघम् ...... । ३ न), 'मधु,सहद' के ३ नाम हैं । ६—मधूच्छिष्टम्, सिक्थकम् (२ न), 'सहदसे निकाले हुए मोम' के २ नाम हैं । ७—मनःशिला, मनोगुप्ता, मनोह्वा, नागजिह्विका (नागजिह्वा, शिला । ४ स्त्री), 'मैनसिल' के ४ नाम हैं । ८—नैपाली (+ शिला), कुनटी, गोला (३ स्त्री) 'नेपाली मैनसिल' के ३ नाम हैं । ("भा० दी० आदिके मतसे 'मनःशिला,......' ७ नाम मैनसिल' के ही हैं") । ९—यवक्षारः, यवाग्रजः, पाक्यः (३ पु), "जवाखार' के ३ नाम हैं । १०—सर्जिकाक्षारः, कापोतः, सुखवर्चकः (३ पु), 'सज्जीखार' के ३ नाम हैं । ११—सौवर्चलम् । रुचकम (२ न), 'क्षार-भेद, या सोचरखार'के २ नाम हैं । ("भा० दी० आदिके मतसे 'सर्जिकाक्षार ....' ५ नाम 'सज्जीखार' के ही हैं") । १२—त्वक्क्षीरी (+ तुकाक्षीरी, तुकाशुभा, वांशी), वंशरोचना (× वंशलोचना, वंशजा । २ स्त्री), वंशलोचन' के २ नाम हैं । १३—शिग्रुजम्, श्वेतमरिचम् (२ न), 'सहिजनके बीज' के २ नाम हैं । १४—मोटरम् (न), 'ऊख (गन्ने) की जड़' का १ नाम है ।

१ ग्रन्थिकं पिप्पलीमूलं चटकाशिर इत्यपि ॥ ११० ॥
२ गोलोमी भूतकेशो ना ३ पत्राङ्गं रक्तचन्दनम् ।
४ त्रिकटु त्र्यूषणं व्योषं ५ त्रिफला तु फलत्रिकम् ॥ १११ ॥
इति वैश्यवर्गः ॥ ९ ॥

१०. अथ शूद्रवर्गः ।

६ शूद्राश्चावरवर्णाश्च वृषलाश्च जघन्यजाः ।
७ आचण्डालात्तु संकीर्णा अम्बष्ठकरणादयः ॥ १ ॥
८ शूद्राविशोस्तु करणोऽम्बष्ठो वैश्याद्विजन्मनोः ।
१० शूद्राक्षत्रिययोरुग्रो ११ मागधः क्षत्रियाविशोः ॥ २ ॥
१२ माहिष्योऽर्याक्षत्रिययोः १३ क्षत्ताऽर्याशूद्रयोः सुतः ।

१—ग्रन्थिकम्, पिप्पलीमूलम्, चटकाशिरः (=चटकाशिरस् । + चटका स्त्री, शिरः = शिर पु । ३ न), 'पिपरामूल' के ३ नाम हैं । २-गोलोमी (स्त्री), भूतकेशः (पु), 'जटामासी' के २ नाम हैं । ३—पत्राङ्गम्, रक्तचन्दनम् (२ न), 'रक्तसार' अर्थात् 'लाल चन्दनके समान एक काष्ठ-विशेष' के २ नाम हैं । ४—त्रिकटु, त्र्यूषणम् (+ त्र्युषणम्), व्योषम् (३ न), 'त्रिकटु' अर्थात् 'पिपल, सोंठ और मिर्चके समुदाय' के ३ नाम हैं । ५—त्रिफला (+ त्रिफला, वरा । स्त्री), फलत्रिकम् (न) 'त्रिफला' अर्थात 'आंवला, हर्रे और बहेरेके समुदाय' के २ नाम हैं ।

६—शूद्रः, अवरवर्णः, वृषलः, जघन्यजः (+ पद्यः, पज्जः । ४ पु), 'शूद्र' के ४ नाम हैं । ७—संकीर्णः (पु) 'वर्णशङ्कर' अर्थात् 'भिन्न २ जातिवाले माता-पिताके संयोगसे उत्पन्न 'अम्बष्ठ, करण' आदि जाति-विशेष' का १ नाम है । ८—करणः (पु), 'शूद्रवर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का एक नाम है । ९—अम्बष्ठः (पु), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और ब्राह्मण वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है । १०—उग्रः (पु), 'शूद्र वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है । ११—मागधः (पु), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है । १२—माहिष्यः (+ माहिषः । पु), 'वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है । १३—क्षत्ता (=क्षत्तृ पु), 'क्षत्रिय वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके

१ ब्राह्मण्यां क्षत्रियात्सूतस्तस्यां वैदेहको विशः ॥ ३ ॥
३ रथकारस्तु माहिष्यात्करण्यां यस्य सम्भवः।
४ स्याच्चण्डालस्तु जनितो ब्राह्मण्यां वृषलेन यः ॥ ४ ॥
५ कारुः शिल्पी ६ संहतैस्तैर्द्वयोः श्रेणिः सजातिभिः।
७ कुलकः स्यात्कुलश्रेष्ठी ८ मालाकारस्तु मालिकः ॥ ५ ॥
९ कुम्भकारः कुलालः स्यात् १० पलगण्डस्तु लेपकः।
११ तन्तुवायः कुविन्दः स्यात् १२ तुन्नवायस्तु सौचिकः ॥ ६ ॥

पुरुपसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'बढ़ई' का १ नाम है। १—सूतः (पु), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुपसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात् 'सारथिका काम करनेवाले' का १ नाम है। २—वैदेहकः (+वैदेहः, विदेहः। पु), 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुपसे उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है। ३—रथकारः (पु), 'करणी स्त्री (शूद्र वर्णकी स्त्री और वैश्य वर्णके पुरुषसे उत्पन्न कन्या) और माहिष्य जातिके पुरुष (वैश्य वर्णकी स्त्री और क्षत्रिय वर्णके पुरुषसे उत्पन्न पुत्र) से 'उत्पन्न सन्तान' का १ नाम है। ४—चण्डालः (+चाण्डालः। पु) 'ब्राह्मण वर्णकी स्त्री और शूद्र वर्णके पुरुषसे उत्पन्न सन्तान' अर्थात 'चाण्डाल' का १ नाम है। ("इन सब के प्रमाण संपूर्ण संस्करण की टिप्पणीमें स्पष्ट हैं और सुगमतया जाति-ज्ञानकेलिये वहीं चक्र देखिये")। ५—कारुः, शिल्पी (=शिल्पिन्। २ पु), 'कारीगर' के २ नाम हैं। ("बढ़ई, जुलाहा, नाई, धोबी और चमार, ये पांच 'शिल्पी' हैं")। ६—श्रेणिः (पु स्त्री), 'एक जातिके कारीगरोंके समूह' का १ नाम है। ७—कुलकः (+कुलिकः), कुलश्रेष्ठी (=कुलश्रेष्ठिन्। २ पु), 'खान्दानी (कुलीन) कारीगर' के २ नाम हैं। ८—मालाकारः, मालिकः (२ पु), माली' के २ नाम हैं। ९—कुम्भकारः कुलालः (२ पु), 'कुम्हार' के २ नाम हैं। १०—पलगण्डः, लेपकः (२ पु), 'मकान आदिमें चूना आदि लगानेवाले जाति-विशेष' के २ नाम हैं। ११—तन्तुवायः (+तन्त्रवायः, तन्त्रवापः), कुविन्दः (+कुपिन्दः। २ पु), 'जुलाहा' अर्थात् 'कपड़ा बुननेवाले' के २ नाम हैं। १२—तुन्नवायः, सौचिकः (२ पु), 'दर्जी' के दो नाम हैं।

१ रङ्गाजीवश्चित्रकरः २ शस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
३ पादूकृच्चर्मकारः स्याद् ४ व्योकारो लोहकारकः ॥ ७ ॥
५ नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो रुक्मकारकः ।
६ स्याच्छाङ्खिकः काम्बविकः ७ शौल्विकस्ताम्रकुट्टकः ॥ ८ ॥
८ तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
९ ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः १० कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ९ ॥
११ क्षुरी मुण्डी दिवाकीर्त्तिनापितान्तावसायिनः ।
१२ निर्णेजकः स्याद्रजकः १३ शौण्डिको मण्डहारकः ॥ १० ॥

१—रङ्गाजीवः, चित्रकर, (२ पु), 'रंगसाज' अर्थात् कपड़ेको रंगने या छापकर चित्रकारी आदि करनेवाले' के २ नाम हैं। २—शस्त्रमार्जः, असिधावकः (२ पु), 'सान देनेवाले या शस्त्रोंको सफाई और मरम्मत आदि करने· वाले' के २ नाम हैं। ३—पादूकृत् (+पादकृत्, पादुकाकृत), चर्मकार (२ पु), 'चमार' के २ नाम हैं। ४—व्योकारः, लोहकारकः, (+लोहकारः, अयस्कारः, अयस्करः, । २ पु), 'लुहार' के २ नाम हैं। ५—नाडिन्धमः, स्वर्णकारः, कलादः, रुक्मकारकः (+रुक्मकारः, मुष्टिकः । ४ पु), 'सुनार' के ४ नाम हैं। ६—शाङ्खिकः, काम्बविकः (२ पु), 'शंखकी चुड़ी आदि बनानेवाले'के २ नाम हैं। ७—शौल्विकः, ताम्रकुट्टकः (२ पु), 'तमेड़ा' अर्थात् 'तांवेके वर्तन आदि बनानेवाले' के २ नाम हैं। ८—तक्षा (=तक्षन्), वर्धकिः, त्वष्टा (=त्वष्टृ), रथकारः, काष्ठतट् (=काष्ठतक्ष् । +स्थपतिः । ५ पु), 'बढ़ई' के ५ नाम हैं। ९—ग्रामाधीनः (भा० दी०), ग्रामतक्षः (२ पु), 'गांवके बढ़ई' के २ नाम हैं। १०—कौटतक्षः, अनधीनकः (भा० दी० । २ पु), 'स्वतन्त्र बढ़ई' के २ नाम हैं। ११—क्षुरी (=क्षुरिन् । + क्षुरमर्दी = क्षुरमर्दिन्), मुण्डी (=मुण्डिन् । +मुण्डिः, मुण्डकः), दिवाकीर्त्तिः, नापितः, अन्तावसायी (=अन्तावसायिन् । +चण्डिलः । ५ पु), 'हजाम' के ६ नाम हैं। १२—निर्णेजकः, रजकः (२ पु), 'धोबी' के २ नाम हैं। १३—शौण्डिकः, मण्डहारकः (×सुराजीवी =सुराजीविन् , कल्यपालः, पानवणिक् = पानवणिज्, ध्वजः, वारिवासः । ३ पु), कलवार या मद्य बनानेवाले' के २ नाम हैं।

१ जाबालः स्यादजाजीवो २ देवाजीवस्तु देवलः।
३ स्यान्माया शाम्बरी ४ मायाकारस्तु प्रतिहारकः॥ ११॥
५ शैलालिनस्तु शैलूषा जायाजीवाः कृशाश्विनः।
भरता इत्यपि नटा६श्चारणास्तु कुशीलवाः॥ १२॥
७ मार्दङ्गिका मौरजिकाः ८ पाणिवादास्तु पाणिघाः।
९ वेणुध्मा स्युर्वैणविका १० वीणावादास्तु वैणिकाः॥ १३॥
११ जीवान्तकः शाकुनिको १२ द्वौ वागुरिकजालिकौ।
१३ वैतंसिकः कौटिकश्च मांसिकश्च समं त्रयम्॥ १४॥
१४ भृतको भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकोऽपि सः।
१५ वार्तावहो वैवधिको १६ भारवाहस्तु भारिकः॥ १५॥

१—जाबालः, अजाजीवः (२ पु), 'रँड़ेरिये, या भेंड़िहारे' के २नाम हैं। २—देवाजीवः (+देवाजीवी=देवाजीविन्), देवलः (२ पु), 'पण्डा पुजारी आदि' के २ नाम हैं। ३—माया, शाम्बरी (२ स्त्री), 'जादू' के २ नाम हैं। ४—मायाकारः, प्रतिहारकः (+प्रातिहारकः, प्रातिहारिकः। २ पु); 'जादूगर' के २ नाम हैं। ५—शैलाली (—शैलालिन्), शैलूषः, जायाजीवः, कृशाश्वी (=कृशाश्विन्), भरतः (+भारतः), नटः (६ पु), 'नट' के ६ नाम हैं। ६—चारणः, कुशीलवः (२ पु), 'कत्थक' के २ नाम हैं। ७—मार्दङ्गिकः, मौरजिकः (२ पु), 'मृदङ्ग बजानेवाले' के २ नाम हैं। ८—पाणिवादः, पाणिघः (२ पु), 'हाथकी ताली बजाकर मृदङ्ग तबला आदि बाजाओंके अनुकरणको करनेवाले' के २ नाम हैं। ९—वेणुध्मः, वैणविकः (२ पु), 'वंशी या मुरली बजानेवाले' के २ नाम हैं। १०—वीणावादः, वैणिकः (२ पु), 'वीणा बजानेवाले' के ३ नाम हैं। ११—जीवान्तकः, शाकुनिकः (२ पु) 'बहेलिये या चिड़ियोंको बझानेवाले' के २ नाम हैं। १२—वागुरिकः, जालिकः (२ पु), 'जालसे पशु-पक्षी आदिको फँसानेवाले' के २नाम हैं। १३—वैतंसिकः, कौटिकः, मांसिकः (३ पु); 'मांस बेचनेवाले बधिक आदि' के ३ नाम हैं। १४—भृतकः, भृतिभुक् (=भृतिभुज्), कर्मकारः, वैतनिकः (४ पु), 'मजूरे या वेतन लेनेवाले नौकर' के ४ नाम हैं। १५—वार्तावहः, वैवधिकः (+विवधिकः। २ पु) काँवर या बहंगी ढोनेवाले' के २ नाम हैं। १६—भारवाहः, भारकः (+भारी=भारिन्। २ पु), 'बोझ ढोनेवाले' के

१ विवर्णः पामरो नीचः प्राकृतश्च पृथग्जनः ।
निहीनोऽपसदो जाल्मः क्षुल्लकश्चेतरश्च सः ॥ १६ ॥
२ भृत्ये दासेरदासेयदासगोप्यकचेटकाः ।
नियोज्यकिङ्करप्रैष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ १७ ॥
३ पराचितपरिस्कन्दपरजातपरैधिताः ।
४ मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसोऽनुष्णः ॥ १८ ॥
५ दक्षे तु चतुरपेशलपटवः सूत्थान उष्णश्च ।
६ चण्डालप्लवमातङ्गदिवाकीर्त्तिजनङ्गमाः ॥ १९ ॥
निषादश्वपचावन्तेवासिचाण्डालपुक्कसाः ।
७ भेदाः किरातशबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः ॥ २० ॥
८ व्याधो मृगवधाजीवो मृगयुर्लुब्धकोऽपि सः ।
९ कौलेयकः सारमेयः कुक्कुरो मृगदंशकः ॥ २१ ॥

---

२ नाम हैं । १—विवर्णः, पामरः, नीचः, प्राकृतः, पृथग्जनः, निहीनः, अपसदः (+अपशदः), जाल्मः, क्षुल्लकः (+खुल्लकः), इतरः (१० पु), 'नीच' के दश नाम हैं । २—भृत्यः, दासेरः, दासेयः, दासः (+दाशः), गोप्यकः, चेटकः (+चेडकः), नियोज्यः, किङ्करः, प्रैष्यः (+प्रेष्यः), भुजिष्यः, परिचारकः (११ पु), ,नौकर, भृत्य' के ११ नाम हैं । ३—पराचितः), परिस्कन्दः (+परिष्कन्दः, परिस्कन्नः, परिष्कन्नः), परजातः (+पराजितः), परैधितः (४ पु), दूसरेके द्वारा पालित' के ४ नाम हैं । ४—मन्दः तुन्दपरिमृजः (+तुन्दपरिमार्जः), आलस्यः, शीतकः, अलसः (+आलसः(, अनुष्णः (६ पु), 'आलसी' के ६ नाम हैं । ५—दक्षः, चतुरः, पेशलः, पटुः, सूत्थानः, उष्णः (+निरालसः । ६ पु), 'चालाक, चतुर' के ६ नाम हैं । ६—चण्डालः, प्लवः, मातङ्गः, दिवा-कीर्त्तिः, जनङ्गमः (+जलङ्गमः), निषादः, श्वपचः (+श्वपाकः), अन्तेवासी (=अन्तेवासिन्), चाण्डालः, पुक्कसः (+पुष्कसः, बुक्कसः । १० पु), 'चाण्डाल' के १० नाम है । ७—किरातः, शबरः (+शवरः), पुलिन्दः (+पुलिङ्कः । ३ पु), ये तीन ('म्लेच्छजातिः स्त्री), 'म्लेच्छ (चाण्डाल) के जाति-विशेष' हैं । ८—व्याधः, मृगवधाजीवः, मृगयुः, लुब्धकः (४ पु), 'व्याधा' के ४ नाम हैं । ९—कौलेयकः, सारमेयः, कुक्कुरः (+कुकुरः, कुर्कुरः), मृगदंश-

शुनको भषकः श्वा स्या१दलर्कस्तु स योगितः ।
२ श्वा विश्वकद्रुर्मृगयाकुशलः ३ सरमा शुनी ॥ २२ ॥
४ विट्चरः सूकरो ग्राम्यो ५ वर्करस्तरुणः पशुः ।
६ आच्छोदनं मृगव्यं स्यादाखेटो मृगया स्त्रियाम् ॥ २३ ॥
७ दक्षिणारुलुब्धयोगाद्दक्षिणेर्मा कुरङ्गकः ।
८ चौरैकागारिकस्तेनदस्युतस्करमोषकाः ॥ २४ ॥
प्रतिरोधिपरास्कन्दिपाटच्चरमलिम्लुचाः ।
९ चौरिका स्तैन्यचौर्ये च स्तेयं १० लोप्त्रं तु तद्धने ॥ २५ ॥
११ वीतंसस्तूपकरणं बन्धने मृगपक्षिणाम् ।
१२ उन्माथः कूटयन्त्रं स्याद् १३ वागुरा मृगबन्धनी ॥ २६ ॥

कः (+मृगदंशः), शुनकः (+शुनः, शुनिः), भषकः, श्वा (=श्वन् । ×श्वानः, कपिलः, शिवारिः, मण्डलः' कृतज्ञः । ७ पु), 'कुत्ते' के ७ नाम हैं । १—अलर्कः (पु), 'पागल या रोगी कुत्ते' का १ नाम है । २—विश्वकद्रुः (पु), 'शिकारी कुत्ते' का १ नाम है । ३—सरमा, शुनी (स्त्री), 'कुतिया' के २ नाम हैं । ४—विट्चरः (पु), 'ग्रामके सुअर' का १ नाम हैं । ५—वर्करः (पु), 'जवान पशु' का १ नाम है । ६—आच्छोदनम्, मृगव्यम् (+मृगव्या स्त्री । २ न), आखेटः (पु), मृगया (+पापर्द्धिः । स्त्री), 'शिकार' के ४ नाम हैं । ७—दक्षिणेर्मा (=दक्षिणेर्मन् पु), 'व्याधके मारनेसे दहने तरफ फोड़ेवाले मृग आदि' का १ नाम है । ८—चौरः (+चोरः, चोरडः), ऐकागारिकः, स्तेनः, दस्युः, तस्करः, मोषकः, प्रतिरोधी (=प्रतिरोधिन् । ×प्रतिरोधकः), परास्कन्दी)=परास्कन्दिन्), पाटच्चरः, मलिम्लुचः (+पारिपन्थिकः, रात्रिंचरः । १० पु), 'चोर' के १० नाम हैं । ९—चौरिका (+चोरिका । स्त्री), स्तैन्यम्, चौर्यम्, स्तेयम् (३ न), 'चोरी' के ४ नाम हैं । १०—लोप्त्रम् (+लोत्रम्, लोतम् चोरितम् । न), 'चोरीके धन या वस्तु आदि' का १ नाम है । ११—वीतंसः (+वितंसः । पु) 'फन्दा' अर्थात् 'पशु-पक्षियोंको फँसानेके लिये जाल आदि साधन-विशेष' का १ नाम है ।१२—उन्माथः (पु), कूटयन्त्रम् (+पाशयन्त्रम् । न), 'पशु-पक्षियोंको फँसानेवाले यन्त्र-विशेष' के २ नाम हैं । १३—वागुरा, मृगबन्धनी (२ स्त्री), 'पशु या मृगको फँसानेके जाल—

१ शुल्वं वराटकं स्त्री तु रज्जुस्त्रिषु वटी गुणः ।
२ उद्घाटनं घटीयन्त्रं सलिलोद्वाहनं प्रहेः ॥ २७ ॥
३ पुंसि मेवा वायदण्डः ४ सूत्राणि नरि तन्तवः ।
५ वाणिर्व्यूतिः स्त्रियौ तुल्ये ६ पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ॥ २८ ॥
७ पाञ्चालिका पुत्रिका स्याद्वस्त्रदन्तादिभिः कृता ।
८ 'स्यात्सालभञ्जिका स्तम्भे ९ लेप्येनाञ्जलिकारिका (३२)
१० जतुत्रपुविकारे तु जातुषं त्रापुषं त्रिषु' (३३)
११ पिटकः पेटकः पेटा मञ्जूषा१२थ विहङ्गिका ॥ २९ ॥
भारयष्टि१३स्तदालम्बि शिक्यं काचो१४ऽथ पादुका ।

विशेष' के २ नाम हैं । १—शुल्वम् (× सुम्यम् , शुम्यम् , शुम्बम् , ३ न; शुल्वा, सुल्वी, २ स्त्री), वराटकम् (+ वटाकरः । + पु । २ न), रज्जुः (स्त्री), वटी (त्रि । + स्त्री), गुणः (+ वटीगुणः त्रि । पु), 'रस्सी' के ५ नाम हैं । २—उद्घाटनम् (× उद्घातनम्) घटीयन्त्रम् (२ न), 'पुरवट, मोट' के २ नाम हैं । ३—वेमा (=वेमन् । + न), वायदण्डः (+ वापदण्डः । २ पु), 'जुलाहोंके शस्त्र-विशेष' अर्थात् 'जिससे कपड़ा बुनते समय सूत बराबर किया जाता है उस हथियार' के २ नाम हैं । ४—सूत्रम् (न), तन्तुः (पु। + सूत्रतन्तुः), 'सूत' के २ नाम हैं । ५—वाणिः, व्यूतिः । (× व्युतिः । २ स्त्री), 'कपड़े आदिको बुनने' के २ नाम हैं । ६—पुस्तम् (न), 'मिट्टी, कपड़े, या चमड़े आदिसे पुतली बनाने' का १ नाम है । ७—पाञ्चालिका (+ पञ्चालिका), पुत्रिका (२ स्त्री,) 'हाथी-दाँत या कपड़े आदिकी पुतली' के २ नाम हैं । ८—[सालभञ्जिका (+ सालभञ्जी । स्त्री, 'लकड़ीकी पुतली' का १ नाम है] । ९—[अञ्जलिकारिका (स्त्री), 'लेप्यमयी पुतली' का १ नाम है] । १०—[जातुषम् , त्रापुषम् (२ त्रि), 'लाह और राँगेकी पुतली' का क्रमशः एक २ नाम है] । ११—पिटकः, पेटकः (पु), पेटा (+ पेडा मुकु०, पीडा क्षी० स्वा०), मञ्जूषा (२ स्त्री), 'पेटी झँपोली, बक्स आदि' के ४ नाम हैं । "क्षी० स्वा० के मतसे पहलेवाले २ नाम 'छोटी झांपी' के और अन्तवाले २ नाम 'बड़े झाँपी, बक्स आदि' के हैं")। १२—विहङ्गिका (+ विहङ्गमा), भारयष्टिः (२ स्त्री), 'बहँगीके दण्डे' के २ नाम हैं । १३—शिक्यम् (न), काचः (पु), 'छिकहर' के २ नाम हैं । १४—पादुका, पादूः, उपानत्

पादूरुपानत्स्त्री १ सैवानुपदीना पदायता ॥ ३० ॥
२ नध्री वध्री वरत्रा स्या३दश्वादेस्ताडनी कशा ।
४ चाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ ३१ ॥
५ नाराची स्यादेषणिका ६ शाणस्तु निकषः कषः ।
७ व्रश्चनः पत्रपरशुरी८षिका तुलिका समे ॥ ३२ ॥
९ तैजसावर्तनी मूषा १० भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
११ आस्फोटनी वेधनिका १२ कृपाणी कर्त्तरी समे ॥ ३३ ॥
१३ वृक्षादनी वृक्षभेदी १४ टङ्कः पाषाणदारणः ।

(=उपानह् । +पादत्राणम् । ३ स्त्री), 'जूता, खड़ाऊँ, बूट, सिलेपड़' के ३ नाम हैं । १—अनुपदीना (स्त्री), 'पैताबा या पूरे पैरके जूते' (बूट)' का १ नाम है । २—नध्री, वध्री, वरत्रा (३ स्त्री), चमड़ेकी रस्सी' के ३ नाम हैं । ३—कशा (स्त्री) 'कोड़ा या चाबुक' का १ नाम है । ४—चाण्डालिका (+चण्डालिका), कण्डोलवीणा (+कण्टोलवीणा, कण्डोली), चण्डालवल्लकी (३ स्त्री), 'चण्डाल आदि नीचोंके किंगरी नामक बाजा' के ३ नाम हैं । ५—नाराची, एषणिका (२ स्त्री), 'सोना-चांदी तौलनेवाले काँटे' के २ नाम हैं । ६—शाणः, निकष, कषः (३ पु), 'कसौटी या सान' के ३ नाम हैं । ७—व्रश्चनः (+वृश्चनः), पत्रपरशुः (२ पु), 'सोना-चांदी आदि काटनेकी छेनी आदि हथियार' के २ नाम हैं । ८—ईषिका (+एषिका, इषिका, इषीका), तूलिका (+तुलिः । २ स्त्री), 'कूँची, चित्र रङ्गनेकी कलम' के २ नाम हैं । ९—तैजसावर्तनी (+आवर्तनी), मूषा (+मूषी, मुषा, मुषी । २ स्त्री), 'सोना-चांदी गलानेको घरिया (मिट्टीके पात्र-विशेष)' के २ नाम हैं। १०—भस्त्रा, चर्मप्रसेविका (+चर्मप्रसेवकः पु। १ स्त्री), 'भाथी' के २ नाम हैं । ११—आस्फोटनी (+आस्फोटनी), वेधनिका (+वेधनी। २ स्त्री), मोती मणि आदि छेदनेवाली वर्मी' के २ नाम हैं । १२—कृपाणी, कर्त्तरी (२ स्त्री), 'कैंची' के दो नाम हैं । १३—वृक्षादनी (स्त्री), वृक्षभेदी (=वृक्षभेदिन् पु), 'काष्ठ काटनेवाले 'बसुला, बटाली आदि हथियार' के २ नाम हैं । १४—टङ्कः (+तङ्कः । पु न), पाषाणदारणः (+पाषाणदारकः । पु), 'पाषाण तोड़नेवाले टांकी, छेनी, घन आदि

१ क्रकचोऽस्त्री करपत्र२ मारा चर्मप्रभेदिका ॥ ३४ ॥
३ सूर्मी स्थूणायःप्रतिमा ४ शिल्पं कर्म कलादिकम् ।
५ प्रतिमानं प्रतिबिम्बं प्रतिमा प्रतियातना प्रतिच्छाया ॥ ३५ ॥
प्रतिकृतिरर्चा पुंसि प्रतिनिधि६रुपमोपमानं स्यात् ।
७ वाच्यलिङ्गाः समस्तुल्यः सदृक्षःसदृशः सदृक् ॥ ३६ ॥
साधारणः समानश्च ८ स्युरुत्तरपदे त्वमी ।
निभसंकाशनीकाशप्रतीकाशोपमादयः ॥ ३७ ॥
९ कर्मण्या तु विधाभृत्याभृतयो भर्म वेतनम् ।
भरण्यं भरणं मूल्यं निर्वेशः पण इत्यपि ॥ ३८ ॥

हथियार' के २ नाम हैं। १—क्रकचः (पु न), करपत्रम् (न), 'लकड़ी चीरनेवाले आरा, शाह या आरी आदि हथियार' के २ नाम हैं। २—आरा, चर्मप्रभेदिका (२ स्त्री), 'चमड़ा काटनेवाले हथियार' के २ नाम हैं। ३—सूर्मी (+सूर्मिः), स्थूणा, अयःप्रतिमा (३ स्त्री), 'लोहेकी मूर्ति' के ३ नाम हैं। ४—शिल्पम् (न), 'कला (कारीगरी) आदि कौशलके काम' का १ नाम है। ५—प्रतिमानम्, प्रतिबिम्बम् (२ न), प्रतिमा, प्रतियातना, प्रतिच्छाया, प्रतिकृतिः, अर्चा (५ स्त्री), प्रतिनिधिः (पु), 'प्रतिमा, फोटो, तस्वीर' के ८ नाम हैं। ६—उपमा (स्त्री), उपमानम् (न), 'उपमा, मिसाल' के २ नाम हैं। ("किसी २ के मतसे 'प्रतिमानम्, ...' ७ नाम एकार्थक हैं")। ७—समः, तुल्यः, सदृक्षः, सदृशः, सदृक् (=सदृश्), साधारणः, समानः (७ त्रि), 'सदृश, समान, बराबर' के ७ नाम हैं। ८—निभः, संकाशः, नीकाशः, प्रतीकाशः, उपमा, आदि (+भूतः, रूपः, कल्पः, देशी, देशीयः। ५ त्रि), 'ये ५ शब्द किसी शब्दके उत्तरमें रहनेपर उसके सदृश अर्थको कहते हैं'। (जैसे—'राजनिभः, राजसंकाशः,......' अर्थात् 'राजाके समान'। उत्तरपद शब्द समासमें रूढ है, अत एव 'चन्द्रेणनिभः' यहां पर यद्यपि 'चन्द्र' शब्दके उत्तरमें 'निभ' शब्द है, तथापि सदृश अर्थका बोध नहीं करता")। ९—कर्मण्या (+भर्मण्या), विधा, भृत्या, भृतिः (४ स्त्री), भर्म (=भर्मन्), वेतनम्, भरण्यम्, भरणम्, मूल्यम् (९ न), निर्वेशः, पणः (२

१ सुरा हलिप्रिया हाला परिस्रुद्वरुणात्मजा ।
गन्धोत्तमाप्रसन्नेराकादम्बर्यः परिस्रुता ॥ ३९ ॥
मदिरा कश्यमद्ये चाप्य२वदंशस्तु भक्षणम् ।
३ शुण्डा पानं मदस्थानं ४ मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ४० ॥
५ मध्वासवो माधवको मधुमाध्वीकमद्वयोः ।
६ मैरेयमासवः सीधुः ७ मेदको जगलः समौ ॥ ४१ ॥
८ सन्धानं स्यादभिषवः ९ किण्वं पुंसि तु नग्नहूः ।
१० कारोत्तरः सुरामण्ड ११ आपानं पानगोष्ठिका ॥ ४२ ॥

पु), 'वेतन, तनख्वाह या मजूरी' के ११ नाम हैं । १—सुरा, हलिप्रिया, हाला, परिस्रुत् , वरुणात्मजा (+वारुणी), गन्धोत्तमा, प्रसन्ना, इरा, कादम्बरी, परिस्रुता (+परिस्नुता), मदिरा (+मदिष्ठा, स्वादुरसा । ११ स्त्री), कश्यम् , मद्यम् (+कल्यम् , हारहूरम् , कपिशायनम् । २ न), **'मदिरा, शराब'** के १३ नाम हैं । २—अवदंशः (+उपदंशः, चक्षणम् , चर्वणम् । पु), **'मदिरा पीनेके समय रुचि बढ़नेके लिये नमकीन चना आदि चबाने'** का १ नाम है । ३—शुण्डा (स्त्री), पानम् (+शुण्डापानम्), मदस्थानम् (२ न), **'मदिरा पीनेके स्थान'** के ३ नाम हैं । ४—मधुवारः, मधुक्रमः (२ पु), **'मदिरा पानेके बारी'** के २ नाम हैं । ५—मध्वासवः, माधवकः (२ पु), मधु, माध्वीकम् (+मार्द्वीकम् । २ न), **'महुएके शराब'** के ४ नाम हैं । ("किसी २ के मतसे प्रथम २ नाम उक्तार्थक और अन्तवाले २ नाम **'दाखके शराब'** के हैं") । ६—मैरयम् (न), आसवः, (पु), सीधुः (+शीधुः । पु न), **'ऊख (गन्ना) के रस या शाक आदिसे बने हुए मदिरा'** के ३ नाम हैं । ७—मेदकः, जगलः, (२ पु), **'मदिराके काढ़े या मदिरा बनानेके लिये पीसे हुए पदार्थ-विशेष'** के २ नाम हैं । ८—सन्धानम् (न), अभिषवः (पु), **'मदिरा बनाने'** के २ नाम हैं ९—किण्वम् (न), नग्नहूः (+नग्नहुः । पु), **'चावल आदिको उबाल' (औंट) कर तैयार किये हुए मदिराके बीज'** के २ नाम हैं । १०—कारोत्तरः (+कारोत्तमः), सुरामण्डः (भा० दी० । २ पु), **'मदिरा के मॉड़ (ऊपरी हिस्सा)'** के २ नाम हैं । ११—आपानम् (न), पानगोष्ठिका (+पानगोष्ठी । स्त्री) **'मदिरा पीनेके जमाव**

१ चषकोऽस्त्री पानपात्रं २ सरकोऽप्यनुतर्षणम् ।
३ धूर्त्तोऽक्षदेवी कितवोऽक्षधूर्त्तो द्यूतकृत्समाः ॥ ४३ ॥
४ स्युर्लग्नकाः प्रतिभुवः ५सभिका द्यूतकारकाः ।
६ द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती कैतवं पण इत्यपि ॥ ४४ ॥
७ पणोऽक्षेषु ग्लहो ८ऽक्षास्तु देवनाः पाशकाश्च ते ।
९ परिणायस्तु शारीणां समन्तान्नयनेऽस्त्रियाम् ॥ ४५ ॥
१० अष्टापदं शारिफलं ११ प्राणिद्यूतं समाह्वयः ।
१२ उक्ता भूरिप्रयोगत्वादेकस्मिन्येऽत्र यौगिकाः ॥ ४६ ॥
तद्धार्म्याद्न्यतो वृत्तावूह्या लिङ्गान्तरेऽपि ते ।

इति शूद्रवर्गः ॥ १० ॥

(अड्डा)' के २ नाम हैं । १—चषकः (पु न), पानपात्रम् (न), 'मदिरा पीनेके प्याले' के २ नाम हैं । २—सरकः (पु न), अनुतर्षणम् (न), 'मदिरा पीने या परोसने (बांटने)' के २ नाम हैं । ("मुकु० के मतसे 'चषकः,......' ४ नाम 'मदिरा पीनेके प्याले' के ही हैं") । ३—धूर्त्तः (+धार्त्तः), अक्षदेवी (=अक्षदेविन्), कितवः, अक्षधूर्त्तः, द्यूतकृत् (५ पु), 'जुवाड़ी या जुवा खेलनेवाले' के ५ नाम हैं । ४—लग्नकः, प्रतिभूः (२ पु), 'मध्यस्थ, बीचवान, जामिनदार' के ५ नाम हैं । ५—सभिकः, द्यूतकारकः (२ पु), 'नालदार' अर्थात् 'जुवा खेलानेवाले' के २ नाम हैं । ६—द्यूतः (पु न), अक्षवती (स्त्री), कैतवम् (न), पणः (पु) 'जुवा' के ४ नाम हैं । ७—पणः, ग्लहः (२ पु), 'जुवेमें दान पर रक्खे हुए रुपया आदि' के २ नाम हैं । ८—अक्षः, देवनः, पाशकः (+प्राशकः । ३ पु), 'पाशा' के ३ नाम हैं । ९—परिणायः (पु न), 'शारी (गोटी) को चलने' के २ नाम हैं । १०—अष्टापदम् (पु न), शारिफलम् (न), 'गोटियोंको रखने (खेलनेके समय बिछाने) के लिये कपड़े या काष्ठके बने हुए आधार-विशेष' के २ नाम हैं । ११—प्राणिद्यूतम् भा० दी० । न), समाह्वयः (पु), 'बाजी रखकर पशु-पक्षियों (मुर्गा, तीतर, भेंड़ा आदि को लड़ाने के २ नाम हैं । १२—ग्रन्थकार 'उक्ता—' इस श्लोकसे सब लिङ्गवाले शब्दोंके सब लिङ्ग नहीं कहनेके दोषका निवारण करते हैं । इस 'शूद्रवर्ग' में अवयवार्थक (मार्दङ्गिक, मौरजिक आदि) शब्द काव्य, पुराण और कोषोंमें प्रायः

अथ काण्डसमाप्तिः—

१ इत्यमरसिंहकृतौ नामलिङ्गानुशासने ।
द्वितीयकाण्डो भूम्यादिः साङ्ग एव समर्थितः ॥ १ ॥

इत्यमरसिंहविरचिते 'नामलिङ्गानुशासना'परपर्यायके
'अमरकोषे' द्वितीयो भूम्यादिकाण्डः समाप्तः ।

पुंलिङ्ग ही में उपलब्ध होनेके कारण यहां भी वे पुंल्लिङ्ग ही में कहे गये हैं, वे (मार्दङ्गिक, मौरजिक आदि) शब्द उसके धर्म और योग आदिके वशसे अन्य जातिमें वृत्ति होने पर तदनुसार (वृत्तिके अनुसार) स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक भी होते हैं, ऐसा जानना चाहिये । और अवयवार्थ को छोड़कर समुदायमें शक्त (कुम्भकार, कुलाल, करण आदि) जो शब्द यहां (शूद्रवर्गमें) केवल पुंल्लिङ्ग ही में कहे गये हैं, वे (कुम्भकार, कुलाल, करण आदि) शब्द शूद्र आदि शब्दोंके समान स्त्रीवाचक होने पर स्त्रीलिङ्गमें और नपुंसकमें वृत्ति होने पर नपुंसकलिङ्गमें प्रयुक्त होते हैं, ऐसा समझना चाहिये । ("उदाहरण क्रमशः । यौगिक शब्द, तीनों लिङ्गोंमें जैसे—मार्दङ्गिकः पुरुषः, मार्दङ्गिकः स्त्री, मार्दङ्गिकं कुलम् ; मौरजिक पुरुषः, मौरजिकी स्त्री, मौरजिकं कुलम् ;······ । रूढ शब्द, तीनों लिङ्गों में जैसे—कुम्भकारः पुरुषः, कुम्भकारी स्त्री, कुम्भकारं कुलम् ; कुलालः पुरुषः, कुलाली स्त्री, कुलालं कुलम् , करणः पुरुषः, करणी स्त्री, करणं कुलम् ,······ । इसी प्रकार अन्यान्य शब्दोंके उदाहरणको समझना चाहिये") ।

१–श्रीअमरसिंहके बनाये हुए नाम (भूः, भूमिः, अचला,······) और लिङ्ग (पुँलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग) को बतलाने वाले **'नामलिङ्गानुशासन'** अर्थात् **'अमरकोश'** नामक इस ग्रन्थमें 'भूमि आदि (आदि शब्दसे पुर, शैल, वनौषधि, आदि दश वर्गों का संग्रह है") वर्गवाला यह दूसरा काण्ड (भाग) अङ्ग (मृत्, शाखा, नगर आदि और उपाङ्ग मृत्सा आदि) के सहित समर्थित होकर सम्पूर्ण हुआ ॥

इति पण्डितप्रवरश्री'**रामस्वार्थमिश्र**' तनुजश्री'**हरगोविन्दमिश्र**'विरचितायां मणिप्रभाख्या 'मरकोष'व्याख्यायां द्वितीयो ब्रह्मादिकाण्डः समाप्तः ॥